THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com
Vaartha Hindi
@Vaartha_Hindi
Vaartha official
www.hindi.vaartha.com

वर्ष-30 अंक : 154 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) भाद्रपद शु.7 2082 शनिवार, 30 अगस्त-2025

प्रधान संपादक – डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर ❊ पृष्ठ : 14 मूल्य : 8 रुपये

पूर्व भाजपा विधायक, आईपीएस समेत 14 को उम्रकैद

अहमदाबाद, 29 अगस्त (एजेंसियां)। साल 2018 के बिटकॉइन लूट और किडनैपिंग केस में अहमदाबाद सिटी सेशंस कोर्ट की एसीबी अदालत ने शुक्रवार को फैसला सुनाया। भाजपा के पूर्व विधायक नलिन कोटडिया, अमरेली के पूर्व एसपी जगदीश पटेल, पूर्व पुलिस निरीक्षक अनंत पटेल समेत 14 आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। साल 2018 में सूरत निवासी बिल्डर शैलेश भट्ट ने आरोप लगाया था कि एक मामले में पूछताछ के दौरान अमरेली जिले के पुलिस अधिकारियों ने उन्हें किसी अज्ञात जगह बंधक बना लिया था। इसके बाद पुलिस अधिकारियों ने डरा-धमकाकर उनके 12 करोड़ रुपए कीमत के बिटकॉइन अपने खाते में ट्रांसफर करा लिए थे।

'जापान तकनीक तो भारत टैलेंट का पावरहाउस'

> आर्थिक फोरम में प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन

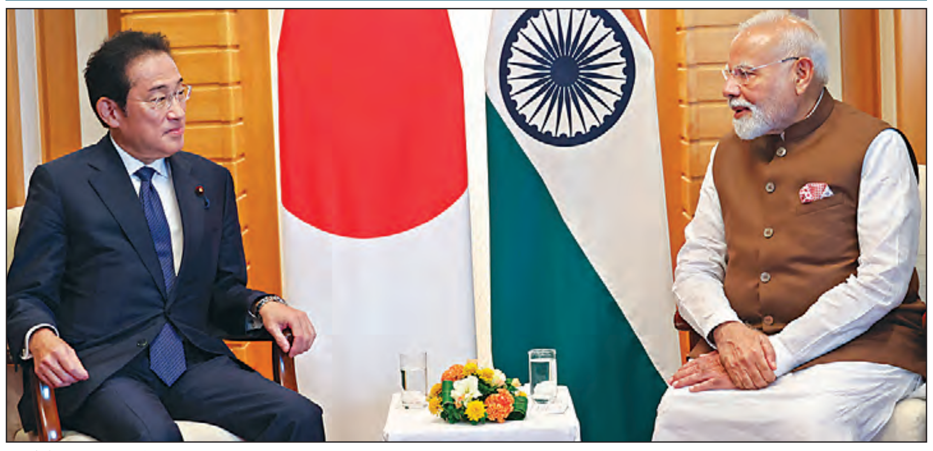

टोक्यो, 29 अगस्त (एजेंसियां)। दो दिवसीय जापान दौरे के पहले दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत-जापान आर्थिक फोरम में शिरकत की। यहां उन्होंने कहा कि भारत और जापान में सहयोग की अपार संभावनाएं हैं। इससे पहले जापान में प्रधानमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

पीएम मोदी के आगमन पर जापान में रहने वाले भारतीय समुदाय के लोगों में गजब का उत्साह दिखा। भारत-जापान आर्थिक फोरम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपना संबोधन जापानी भाषा के साथ शुरू किया। उन्होंने वहां की भाषा में लोगों का अभिवादन किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जापान टेक्नोलॉजी में पावरहाउस है, तो वहीं भारत टैलेंट का पावरहाउस है। टेक्नोलॉजी और टैलेंट ही विकास का नेतृत्व कर सकते हैं। भारत और जापान में सहयोग की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा, 'मैं आज सुबह ही टोक्यो पहुंचा हूं। मुझे बहुत खुशी है कि मेरी यात्रा की शुरुआत बिजनेस जगत के दिग्गजों के साथ हो रही है। आप में से बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय रहा है, जब मैं गुजरात में था तब भी और जब मैं दिल्ली आ गई तब भी। भारत की विकास यात्रा में जापान हमेशा एक अहम पार्टनर रहा है। मेट्रो से लेकर मैन्युफैक्चरिंग तक, सेमीकंडक्टर से स्टार्टअप्स तक हर क्षेत्र में हमारी साझेदारी आपसी विश्वास का प्रतीक बनी हैं।

जापानी कंपनियों ने भारत में 40 बिलियन डॉलर से ज्यादा का निवेश किया है। मात्र पिछले 2 वर्षों में 30 बिलियन डॉलर का प्राइवेट इन्वेस्ट हुआ है।'

पीएम मोदी ने कहा, 'पिछले 11 वर्षों में भारत के अभूतपूर्व परिवर्तन से आप सभी भलीभांति परिचित हैं। आज भारत में राजनीतिक स्थिरता है, आर्थिक स्थिरता है, नीति में में पारदर्शिता है, पूर्वानुमान की क्षमता है। आज भारत विश्व की सबसे तेज बढ़ने वाली अहम अर्थव्यवस्था है। भारत बहुत जल्द विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है।' उन्होंने कहा कि 2017 में हमने एक राष्ट्र, एक कर लागू किया था। अब और भी बड़े सुधार लाने के प्रयास चल रहे हैं। कुछ ही हफ्ते पहले हमारी संसद ने एक सरलीकृत आयकर प्रणाली को मंजूरी दी है। हालांकि, हमारे सुधार केवल कराधान से कहीं आगे तक जाते हैं। हमारे सुधार केवल कर प्रणाली तक सीमित नहीं हैं। हमने व्यापार करने में आसानी पर बल दिया है।

'असम का नेतृत्व ऐसे लोग नहीं कर सकते, जो बार-बार पाकिस्तान जाते हों'

> अमित शाह का विपक्ष पर कटाक्ष

गुवाहाटी, 29 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि असम का नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथ में नहीं हो सकता, जो बार-बार पाकिस्तान जाते हैं।

उन्होंने इशारों में असम कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई पर यह टिप्पणी की, जिनके पाकिस्तान से कथित संबंधों की बात सामने आई है। यहां पंचायत प्रतिनिधियों की एक रैली को संबोधित करते हुए शाह ने कहा कि उन्होंने असम विधानसभा चुनावों के लिए बिगुल बजा दिया है। राज्य में मार्च-अप्रैल 2026 में चुनाव होने हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों को असम का नेतृत्व नहीं करना चाहिए, जो घुसपैठियों और अतिक्रमणकारियों से सहानुभूति रखते हैं। शाह ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश में विकास कार्य किए हैं और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने उन योजनाओं को हर घर तक पहुंचाया है। इन विकास कार्यों के दम पर भाजपा के नेतृत्व वाला एनडीए अगले साल लगातार तीसरी बार असम में सरकार बनाएगा।

कांग्रेस पर हमला करते हुए उन्होंने कहा कि असम का नेतृत्व उन लोगों के पास नहीं होना चाहिए जो घुसपैठियों का समर्थन करते हैं और अतिक्रमण को बढ़ावा देते हैं। गौरव गोगोई की तरफ इशारा करते हुए शाह ने कहा, असम का नेतृत्व ऐसे लोग नहीं कर सकते जो बार-बार पाकिस्तान जाते हैं। असम के मुख्यमंत्री और भाजपा ने लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई पर उनकी पत्नी के पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से कथित संबंधों को लेकर हमला बोला है।

सत्य और अहिंसा के आगे असत्य और हिंसा टिक ही नहीं सकते : राहुल

पटना, 29 अगस्त (एजेंसियां)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि सत्य और अहिंसा के आगे असत्य और हिंसा टिक ही नहीं सकते। मारो और तोड़ो, जितना मारना-तोड़ना है, हम सत्य और संविधान की रक्षा करते रहेंगे। सत्यमेव जयते। उनकी यह टिप्पणी पटना में सत्तारूढ़ दल द्वारा 'मतदाता अधिकार यात्रा' के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए कथित तौर पर अभद्र भाषा के इस्तेमाल के विरोध में निकाले गए एक विरोध मार्च के दौरान भाजपा और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के बीच हुई झड़प के बाद आई है। इससे पहले कांग्रेस महासचिव और संगठन प्रभारी केसी वेणुगोपाल ने भाजपा पर पार्टी के सदाकत आश्रम मुख्यालय पर हमला और तोड़फोड़ करने का आरोप लगाया। वेणुगोपाल ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'मतदाता अधिकार यात्रा की बढ़ती लोकप्रियता और उनके खिलाफ जनता की बढ़ती भावनाओं से बौखलाकर भाजपा ने एक बार फिर हमें डराने और धमकाने के लिए अपने गुंडों को छोड़ दिया है।' उन्होंने कहा, 'पटना स्थित हमारे बिहार प्रदेश कांग्रेस कार्यालय सदाकत आश्रम पर एक मौजूदा कैबिनेट मंत्री और अन्य भाजपा नेताओं के नेतृत्व में किया गया हमला कायरतापूर्ण कृत्य है।

लैंडस्लाइड में 11 मौतें

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले के भरमौर में भारी बारिश के बीच मणिमहेश यात्रा पर निकले 11 श्रद्धालुओं की लैंडस्लाइड में मौत हो गई है। मृतकों में 3 पंजाब, 1 उत्तर प्रदेश और 5 चंबा के रहने वाले हैं। दो लोगों की अभी पहचान नहीं हुई है।

दूसरी तरफ, उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर और टिहरी गढ़वाल जिले में गुरुवार रात बादल फटने से 5 लोगों की मौत हो गई। एसडीआरएफ ने रूद्रप्रयाग में 40 और कुम्म गांव में 30 लोगों का रेस्क्यू किया।

सुब्रमण्यम स्वामी की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को भेजा नोटिस

> राम सेतु से जुड़ा है मामला

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को पूर्व राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी की याचिका पर केंद्र से जवाब मांगा है। जिसमें सुब्रमण्यम स्वामी ने सरकार को 'राम सेतु' को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने के लिए शीघ्र निर्णय लेने का निर्देश देने का अनुरोध किया है।

लाइव लॉ की रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने स्वामी की याचिका पर सुनवाई के लिए सहमति जताते हुए केंद्र को नोटिस जारी किया और मामले की अगली सुनवाई चार हफ्ते बाद तय की। वरिष्ठ अधिवक्ता विभा मखीजा डॉ. स्वामी की ओर से पेश हुईं, क्योंकि स्वामी को स्वास्थ्य संबंधी समस्या थी। सुब्रमण्यम स्वामी की याचिका में कहा गया है कि यह केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है कि वो राम-सेतु को किसी भी प्रकार के दुरुपयोग, प्रदूषण या अपवित्रता से बचाए। इसमें कहा गया है कि यह पुरातात्विक स्थल उन लोगों की आस्था और श्रद्धा का विषय है जो राम-सेतु को तीर्थ मानते हैं। एक अन्य याचिका में, स्वामी ने सेतुसमुद्रम शिप चैनल परियोजना के लिए एक वैकल्पिक मार्ग खोजने की मांग की है, ताकि राम सेतु को नुकसान न पहुंचे। यह मामला भी सुप्रीम कोर्ट में लंबित है। इस परियोजना में मन्नार और पाल्क स्ट्रेट को जोड़ने के लिए 83 किलोमीटर लंबा चैनल बनाया जाना था, जिसके लिए बड़े पैमाने पर खुदाई की जानी थी। आरोप है कि इस प्रोजेक्ट से राम सेतु पर असर पड़ेगा। जनवरी 2023 में कोर्ट ने राम सेतु को राष्ट्रीय धरोहर का दर्जा देने की मांग से संबंधित एक आवेदन पर सुनवाई की थी। सुनवाई के दौरान, केंद्र ने कोर्ट को बताया कि 'राम सेतु' को राष्ट्रीय धरोहर का दर्जा देने पर विचार करने की प्रक्रिया संस्कृति मंत्रालय में चल रही है। इसके अलावा, सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुझाव दिया कि डॉ. स्वामी मंत्रालय के समक्ष एक अभ्यावेदन प्रस्तुत करें।

'आतंकवाद के खिलाफ मानवता की जीत का स्वर्णिम अध्याय है ऑपरेशन सिंदूर : राष्ट्रपति

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने एक कार्यक्रम में अपने संबोधन में कहा कि ऑपरेशन सिंदूर आतंकवाद के खिलाफ मानवता की लड़ाई का एक स्वर्णिम अध्याय है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने स्वदेशी आकाशतीर एयर डिफेंस और रिपोर्टिंग प्रणाली के निर्माण में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के योगदान की तारीफ की।

आकाशतीर एयर डिफेंस सिस्टम ने भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। स्कोप एमिनेंस अवाड्र्स को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने साल 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की भूमिका पर बात की। राष्ट्रपति ने कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों ने राजस्व और लाभ सहित प्रमुख वित्तीय मानकों पर अच्छा प्रदर्शन किया है।

महुआ बोलीं-शाह का सिर काटकर टेबल पर रख देना चाहिए

घुसपैठ के लिए गृह मंत्री जिम्मेदार; भाजपा बोली-टीएमसी की हिंसक संस्कृति सामने आई

कोलकाता, 29 अगस्त (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल की तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सांसद महुआ मोइत्रा ने गृह मंत्री अमित शाह पर विवादित बयान दिया है। उन्होंने शुक्रवार को नादिया जिले में घुसपैठ मुद्दे पर कहा कि सीमा सुरक्षा की जिम्मेदारी गृह मंत्रालय की होती है। अगर घुसपैठ हो रही है तो अमित शाह का सिर काटकर टेबल पर रख देना चाहिए।

बंगाल भाजपा ने उनके बयान से जुड़ा एक वीडियो भी एक्स पर शेयर किया। वहीं दूसरी पोस्ट में भाजपा ने लिखा-जब महुआ गृह मंत्री का सिर काटने की बात करती हैं, तो यह टीएमसी की हताशा और हिंसा की संस्कृति को उजागर करता है जो बंगाल की छवि को धूमिल कर रही है और राज्य को पीछे धकेल रही है। इस मामले में महुआ के खिलाफ नादिया जिले के कृष्णानगर के कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई गई है। यह शिकायत स्थानीय निवासी संदीप मजूमदार ने दर्ज कराई है।

महुआ बोलीं-बॉर्डर की सुरक्षा शाह की जिम्मेदारी

मीडिया से बात करते हुए तृणमूल सांसद ने कहा- मेरा उनसे (अमित शाह) साफ सवाल है। वह सिर्फ कहे जा रहे हैं घुसपैठिया... घुसपैठिया। हमारा जो बॉर्डर है, उसकी रखवाली जो एजेंसी कर रही है, वह केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत आती है। प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त को लाल किले से कहा कि घुसपैठ हो रही है और उसकी वजह से डेमोग्राफी चेंज हो रही है। तृणमूल सांसद ने कहा, 'अगर गृह मंत्री और गृह मंत्रालय भारतीय सीमाओं की रक्षा नहीं कर सकते और प्रधानमंत्री खुद बोल रहे हैं कि बाहर से आकर लोग हमारी मां-बहनों पर नजर डाल रहे हैं, हमारी जमीनें छीन रहे हैं तो फिर ये गलती किसकी है? हमारी और आपकी गलती है। यहां तो बीएसएफ है, हम भी उनसे डरकर रहते हैं। बांग्लादेश हमारा दोस्त है, लेकिन आपकी वजह से पिछले कई सालों में ये स्थिति बदल चुकी है।'

मुख्य न्यायाधीश ने नए सर्वोच्च न्यायालय न्यायाधीशों को दिलाई शपथ

❊ जजों की कुल संख्या 34 हुई

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई ने शुक्रवार को बॉम्बे हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश आलोक अराधे और पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश विपुल मनुभाई पंचोली को शपथ दिलाई।

दोनों न्यायाधीशों को 27 अगस्त को सर्वोच्च न्यायालय में पदोन्नत किया गया था। उनकी पदोन्नति के साथ सर्वोच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश सहित 34 न्यायाधीशों की पूर्ण कार्य क्षमता फिर से पूरी हो गई। जस्टिस जॉयमाल्या बागची के 2 अक्तूबर, 2031 को सेवानिवृत्त होने के बाद न्यायमूर्ति पंचोली अक्तूबर 2031 में मुख्य न्यायाधीश बनने की कतार में होंगे। उनके 3 अक्तूबर, 2031 को मुख्य न्यायाधीश का पदभार ग्रहण करने और 27 मई, 2033 को सेवानिवृत्त होने का अनुमान है।

कॉलेजियम के एकमत न होने की थ्योरी क्या?

इससे पहले 25 अगस्त को सर्वोच्च न्यायालय के कॉलेजियम ने केंद्र को न्यायमूर्ति अराधे और न्यायमूर्ति पंचोली के नामों की शीर्ष न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में पदोन्नति के लिए सिफारिश की थी। हालांकि, कॉलेजियम सदस्य और सर्वोच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना ने न्यायमूर्ति पंचोली को शीर्ष न्यायालय में पदोन्नत करने की सर्वोच्च न्यायालय कॉलेजियम की सिफारिश पर कड़ी असहमति दर्ज की और कहा कि उनकी नियुक्ति न्यायपालिका के लिए प्रतिकूल होगी। शीर्ष न्यायालय की एकमात्र महिला न्यायाधीश, न्यायमूर्ति नागरत्ना ने विभिन्न मुद्दों पर अपनी असहमति दर्ज की थी। इस घटनाक्रम से जुड़े सूत्रों ने बताया कि न्यायमूर्ति नागरत्ना ने अपनी असहमति में कहा था कि उनकी नियुक्ति को आगे बढ़ाने से कॉलेजियम प्रणाली की बची-खुची विश्वसनीयता खत्म हो सकती है।

जस्टिस आलोक अराधे

13 अप्रैल, 1964 को जन्मे न्यायमूर्ति अराधे 12 जुलाई, 1988 को अधिवक्ता के रूप में नामांकित किया गया। उन्होंने मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में दीवानी एवं संवैधानिक, मध्यस्थता और कंपनी मामलों में वकालत की।

'भविष्य के खतरों से निपटने के लिए सहयोग-तालमेल जरूरी'

शिलांग, 29 अगस्त (एजेंसियां)। वायुसेना प्रमुख एयरचीफ मार्शल एपी सिंह ने शुक्रवार को पूर्वी वायु कमान (ईएसी) के कमांडरों के सम्मेलन में भाग लिया। उन्होंने कमांडरों को पूर्वी और उत्तरी सीमाओं की सुरक्षा में भूमिका पर बात की।

साथ ही सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए मिलकर काम करने का आह्वान किया। शिलांग में कमांडरों के सम्मेलन में वायुसेना प्रमुख ने कहा कि पूर्वी वायु कमान हमारी उत्तरी और पूर्वी सीमाओं की सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें सतर्क रहना चाहिए और किसी भी स्थिति से निपटने के लिए उच्चतम स्तर की तैयारी बनाए रखनी चाहिए। भविष्य के खतरों के लिए सहयोगी सेवाओं के साथ निर्बाध समन्वय और तालमेल की आवश्यकता है। ताकि पूरे क्षेत्र में प्रभावी संचालन सुनिश्चित किया जा सके। ईएसी वार्षिक सम्मेलन 27 से 30 अगस्त तक ईएसी मुख्यालय में आयोजित किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपशब्द पर मायावती ने राहुल और तेजस्वी को घेरा

लखनऊ, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल की साझा रैली में राहुल गांधी एवं तेजस्वी यादव के मंच से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपशब्द कहे जाने पर प्रतिक्रियाओं का दौर जारी है। इसी क्रम में बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष और यूपी की पूर्व सीएम मायावती ने टिप्पणी की है। हालांकि अपनी टिप्पणी में मायावती ने न तो पीएम मोदी का जिक्र किया और न ही राहुल और तेजस्वी का नाम लिया। सोशल मीडिया साइट एक्स पर मायावती ने लिखा- देश में ख़ासकर राजनीतिक स्वार्थ के कारण राजनीति का गिरता हुआ स्तर अति-दुखद एवं चिन्तनीय। इस सम्बंध में सभी पार्टियों की राजनीति, पार्टी के संविधान के हिसाब से विचार और सिद्धान्तों के आधार पर, देश व करोड़ों ग़रीबों व आमजन के हित में होनी चाहिए, जो कि ख़ासकर पिछले कुछ वर्षों से सही से देखने को नहीं मिल रहा है, जबकि इस दौरान देश के सामने विभिन्न प्रकार की आन्तरिक एवं बाहरी चुनौतियाँ काफी बढ़ी हैं।

हैदराबाद के 57 में से 6 और घोड़ों की मौत

जबलपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। हैदराबाद से जबलपुर लाए गए घोड़ों की मौत का सिलसिला थमा नहीं है। बीते दो सप्ताह में 6 और घोड़ों की मौत हुई है, जबकि पहले ही 57 में से 13 घोड़ों की जान जा चुकी थी। अब तक कुल 19 घोड़ों की मौत हो गई है। हैरानी की बात यह है कि यह सब उस समय हुआ जब पशुपालन विभाग के डॉक्टर और अधिकारी 24 घंटे निगरानी में तैनात थे। नोडल अधिकारी डॉ. ज्योति तिवारी के अनुसार घोड़ों की देखरेख के लिए लगातार डॉक्टरों की टीम तैनात है। उन्होंने जानकारी दी कि जिन घोड़ों की मौत हुई है, उनमें से दो की मौत सेप्टीसीमिया, दो की पैरीलिसिस, एक की कोलिक (पेट दर्द) और एक की रेस्पिरेटरी फेल्योर (सांस लेने में तकलीफ) के कारण हुई है। बाकी घोड़ों का इलाज भी जारी है। नोडल अधिकारी ने स्पष्ट किया कि अब तक किसी भी घोड़े में ग्लैंडर्स बीमारी की पुष्टि नहीं हुई है। जो घोड़ा नंबर 644 संदिग्ध था, वह अब पूरी तरह स्वस्थ है।

चेन्नई एयरपोर्ट पर बड़ा हादसा कांच का पैनल गिरने से मचा हड़कंप

चेन्नई, 29 अगस्त (एजेंसियां)। चेन्नई के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शुक्रवार को एक बड़ा हादसा हो गया। यहां पर एक कांच का पैनल टूटकर गिर गया। गनीमत रही कि इस हादसे में किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है। हादसे के कारण एअरपोर्ट पर मौजूद यात्रियों को असुविधा हुई। हवाई अड्डे के एक अधिकारी ने इस संबंध में कोई हताहत नहीं हुआ है और एअरपोर्ट पर सभी सेवाएं जारी हैं। ध्यान देने योग्य है कि चेन्नई एअरपोर्ट पर कांच टूटने की घटना पहली नहीं है। यहां पर पहले भी इस प्रकार की घटना देखी जा चुकी है। बताया जा रहा है कि गुरुवार को हुई यह घटना 89वीं घटना थी। बताया जा रहा है कि यह घटना एअरपोर्ट पर रेस्टोरेंट के पास हुई। इसकी आवाज इतनी तेज थी कि वहां पर मौजूद यात्री डर गए। घटना की जानकारी होते ही मौके पर हवाई अड्डे के कर्मचारी पहुंचे। यात्रियों की सुविधाओं को देखते हुए उस क्षेत्र में बैरिकेड्स लगा दिए गए हैं।

आयकर विभाग की टीम 108 गाड़ियों के साथ व्यापारी के घर पहुंची

किशनगंज/ कटिहार, 29 अगस्त (एजेंसियां)। शहर के बड़े व्यवसायी जयकरण दफ्तरी के कई ठिकानों में आयकर विभाग की टीम पहुंची है। 108 गाड़ियों से पहुंची टीम में बड़ी संख्या में आयकर विभाग के अधिकारी और कर्मी शामिल हैं। दफ्तरी ग्रुप के नाम से इनका किशनगंज और सिलीगुड़ी समेत शहर के कई जगहों पर कई प्रतिष्ठान हैं। इनका चाय बागान भी है। आयकर विभाग की टीम आय से कम आयकर जमा करने को लेकर कागजात को खंगाल रही है। अलग-अलग जगहों पर टीम सुबह एक साथ पहुंची और कार्रवाई शुरू की। टीम की जांच के बाद इनसे जुड़े कई व्यवसाई भी घबराए हुए हैं। आयकर की टीम सेमापुर के मक्का व्यवसायी राजेश चौधरी के घर व गोदाम पर पहुंची है। इनके फर्म का नाम है राजेश राकेश मेसर्स सेमापुर और मालती ट्रेडर्स है। प्रारंभिक सूचना के अनुसार आयकर टीम इनके दिल्ली और बंगाल के साथ ही खगड़िया, नवगछिया और पूर्णिया आदि ठिकानों पर जांच कर रही है। राजेश और राकेश भाई है। राकेश दिल्ली में रहते हैं।

लातूर में जनजीवन अस्त-व्यस्त, स्कूलों में छुट्टी

लातूर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के लातूर जिले में लगातार भारी बारिश के चलते जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। प्रशासन ने शुक्रवार को जिले के सभी स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया है। अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। राज्य के मराठवाड़ा क्षेत्र में स्थित लातूर जिले के 60 राजस्व मंडलों में से 29 में गुरुवार रात तक अत्यधिक बारिश दर्ज की गई। इससे नदियों और नालों का जलस्तर बढ़ गया, जिससे राहत एवं बचाव कार्य शुरू करने पड़े। लगभग 50 सड़कें और पुल बंद कर दिए गए हैं, क्योंकि उनके ऊपर से पानी बहने लगा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने 29 अगस्त के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। इसी के मद्देनजर जिला कलेक्टर और आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की अध्यक्ष वर्षा ठाकुर घुगे ने पहली से बारहवीं कक्षा तक के सभी स्कूलों में छुट्टी का एलान किया है।

'वीडियो कैसेट देखी नहीं और सुना दिया फैसला'

हाई कोर्ट ने निचली अदालत को अश्लील वीडियो मामले पर सुनाई खरी-खरी

कोच्चि, 29 अगस्त (एजेंसियां)। केरल हाई कोर्ट ने एक ऐसे व्यक्ति को बरी कर दिया है, जिसे 20 साल पहले अश्लील सामग्री वाले वीडियो कैसेट बेचने के आरोप में दोषी ठहराते हुए दो साल की सजा सुनाई गई थी। जज कौसर एडप्पागाथ की एकल पीठ ने कोट्टायम निवासी हरिकुमार को इस आधार पर बरी किया कि उसे दोषी ठहराने और सजा सुनाने वाली मजिस्ट्रेट अदालत और उसकी दोषसिद्धी को बरकरार रखने वाली सत्र अदालत, दोनों ने ही यह पता लगाने के लिए उन वीडियो कैसेटों को नहीं देखा कि उनमें अश्लील सामग्री है या नहीं। कोर्ट ने कहा कि जब कोई वीडियो कैसेट भारतीय दंड संहिता की धारा 292 (अश्लील पुस्तकों आदि की बिक्री) के तहत सबूत के रूप में पेश किया जाता है, तो कोर्ट के लिए यह आवश्यक है कि वह खुद उस वीडियो को देखे और यह सुनिश्चित करे कि उसमें वास्तव में अश्लील सामग्री है या नहीं।

जब तक जज स्वयं न देखे वीडियो कैसेट

हाई कोर्ट ने अपने आठ अगस्त के निर्णय में कहा, 'दूसरे शब्दों में,

जब तक अदालत या न्यायाधीश स्वयं वीडियो कैसेट को नहीं देखता और उसे यह विश्वास नहीं हो जाता कि उसमें अश्लील सामग्री है, तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि अदालत के समक्ष कोई ठोस साक्ष्य मौजूद है जिससे धारा 292 के तहत अपराध सिद्ध हो।' कोर्ट ने यह भी कहा कि इस मामले में वीडियो कैसेट की प्रत्यक्ष जांच आवश्यक थी, जो कि नहीं की गई। फैसले में कहा गया, 'निचली अदालत और अपीलीय अदालत दोनों का साक्ष्य और कानून की व्याख्या करने का पूरा दृष्टिकोण गलत था।' हाई कोर्ट ने हरिकुमार की पुनरीक्षण याचिका पर सुनवाई करते हुए उसकी दोषसिद्धि और सजा को रद्द कर दिया तथा उसे बरी कर दिया। हरिकुमार ने अपनी याचिका में मजिस्ट्रेट और सत्र अदालत दोनों के निर्णयों को चुनौती दी थी।

69 हेलीकॉप्टर, 45 वॉटर विंग और 30 गाड़ियां

राहत-बचाव कार्य तेज

गुरदासपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बीएसएफ हेडक्वार्टर गुरदासपुर की ओर से जिले में बाढ़ की स्थिति को देखते हुए लगातार बचाव और राहत अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान में बीएसएफ के 69 हेलीकॉप्टर, 45 वाटर विंग, 43 एनडीआरएफ और 30 वाहन बचाव कार्यों में जुटे हुए हैं। भारतीय वायु सेना और बीएसएफ वायु विंग के हेलीकॉप्टरों को जलमग्न क्षेत्रों और सीमा चौकियों (बीओपी) से फंसे हुए सैनिकों को निकालने के लिए सक्रिय रूप से तैनात किया गया है। सभी कर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए वीरवार से कई उड़ानें भरी जा चुकी हैं। इसके अलावा एनडीआरएफ और बीएसएफ वाटर विंग की स्पीड बोटें चल रहे बचाव कार्यों में व्यापक रूप से लगी हुई हैं। डीआईजी जेके बिरदी के नेतृत्व में पूरी गति से बचाव कार्य चलाए जा रहे हैं। उनके निर्देशन में सेक्टर मुख्यालय गुरदासपुर और उनके समर्पित अधिकारियों की टीम के गतिशील नेतृत्व में, बचाव और राहत कार्यों की योजना, समन्वय और क्रियान्वयन अत्यंत सटीकता के साथ किया जा रहा है।

एमपी: चुनाव आयोग पर दिग्विजय सिंह ने साधा निशाना

कहा- 'एक पार्टी बनकर काम करता दिख रहा है'

भोपाल, 29 अगस्त (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने चुनाव आयोग और बीजेपी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग अब एक स्वतंत्र संस्था की तरह काम नहीं कर रहा, बल्कि एक राजनीतिक पार्टी बनकर काम करता दिख रहा है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि कांग्रेस पार्टी कभी भी प्रधानमंत्री या किसी भी नेता पर पारिवारिक टिप्पणी नहीं करती। कांग्रेस नेता साफ कहा- "कोई भी पीएम पर पारिवारिक टिप्पणी नहीं चाहेगा। आप जिसको पकड़ना है पकड़िए, लेकिन कांग्रेस की संस्कृति में इस तरह की बातें नहीं रहीं।" चुनाव व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि "गुजरात के वोटरों को यहां लाकर रजिस्टर किया जा रहा है और बिहार के लोगों के नाम वोटर लिस्ट से काटे जा रहे हैं। यह बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।" उन्होंने आगे चुनौती दी कि अगर बीजेपी यह कह रही है कि रोहिंग्या को वोटर बनाया गया है, तो उसका सबूत पेश करे। "कम से कम एक-दो नाम तो दिखाइए कि कहां रोहिंग्या को लाया गया है।" आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के 'हम दो, हमारे तीन' बयान पर भी दिग्विजय सिंह ने तंज कसा। उन्होंने कहा- "मोहन भागवत खुद कुंवारे हैं। उन्हें इस तरह का ज्ञान देना बंद करना चाहिए।"

3 साल की मासूम को टेंपो ने कुचला, मौत

मुंबई, 29 अगस्त (एजेंसियां)। मुंबई के घाटकोपर इलाके में दर्दनाक हादसा हुआ है। नारायण नगर क्षेत्र में खेल रही 3 साल की बच्ची टेंपो की चपेट में आ गई और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। घटना के बाद टेंपो के चालक ने पुलिस के सामने सरेंडर कर दिया। घटना से स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश है। पुलिस की तरफ से मिली जानकारी के मुताबिक घटना बीते शनिवार की है। मुंबई के टकोपर इलाके में नारायण नगर के पास एक 3 साल की मासूम बच्ची घर के बाहर खेल रही थी। इसी दौरान वहां से गुजर रहे एक टेंपो का अगला पहिया बच्ची के ऊपर चढ़ गया। हादसे के बाद बच्ची को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। यह पूरी घटना वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई।

फिरौती में मांगा 25 लाख और 1 किलो सोना

कर्मचारी ने मालिक को लॉरेंस बिश्नोई के नाम से डे डाली धमकी, लेकिन फेल हुआ पूरा प्लान

मुंबई, 29 अगस्त (एजेंसियां)। मुंबई के एक बिजनेसमैन को अचानक लॉरेंस बिश्नोई गैंग के नाम से धमकी आ गई और कॉल करने वाले ने कहा कि बिजनेसमैन को मारने के लिए उन्हें 25 लाख कैश और लगभग 1 किलो सोना फिरौती में दिया गया है। अगर वह अपनी जान बचाना चाहता है, तो उसे इस रकम से अधिक पैसे देने होंगे।

यह सुनकर बिजनेसमैन की हालत खराब हो गई और उसने तुरंत मुंबई के गोरेगांव पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया। इस प्रकरण में जिस बिजनेसमैन को धमकी भरा फोन आया उसने पुलिस को बताया कि फोन करने वाले ने कहा है कि मैं बिश्नोई गैंग से तालुकात रखता हूं, तुम जुहू में रहते हो, तुम्हारा ऑफिस गोरेगांव में है और फैक्ट्री वसई में है, ये हम जानते हैं। तुम्हें मारने के लिए 25 लाख और 1 किलो सोने की फिरौती हमें मिली है। बिजनेसमैन ने फोन करने वाले से पूछा कि उसकी गलती क्या है, तो जवाब मिला हमें ऊपर से मेसेज आया है, हमें पता है कि तुम्हारी 2 बेटी हैं और उनमें से एक बेटी अभी गोरेगांव पहुंची है, हमने शूटर तुम्हारे गोरेगांव ऑफिस, वसई की फैक्ट्री और जुहू, जहां तुम रहते हो वहां पर भेजे हैं।

पुलिस को जांच के दौरान पता चला कि बिजनेसमैन को धमकी देने वाला उसी की कंपनी में काम करने वाला एम्पलॉई तेजस सेलार नाम का 26 वर्षीय युवक है जिसने ऑनलाइन गेमिंग में 3 लाख रुपये डूबा दिए। जिन लोगों से लोन लिया था, उन्हें वापस करने के लिए उसे पैसों की जरूरत थी।

मराठा आरक्षण पर निष्क्रियता को लेकर बीजेपी ने विपक्षी नेताओं पर साधा निशाना, कहा- जनता मांग रही जवाब

मुंबई, 29 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र भाजपा के प्रवक्ता केशव उपाध्ये ने शुक्रवार को विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) पर आरोप लगाया कि जब वह सत्ता में थी, तब उसने मराठा समुदाय की मांगों की अनदेखी की। उपाध्ये ने कहा कि मुंबई में मराठा आरक्षण की मांग को लेकर कार्यकर्ता मनोज जरांगे के आंदोलन के बीच राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार गुट) के प्रमुख शरद पवार, शिवसेना (उद्धव ठाकरे गुट) के प्रमुख उद्धव ठाकरे और कांग्रेस को मराठा आरक्षण मुद्दे पर निरुत्तर हैं। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, महा विकास अघाड़ी सरकार के दौरान शरद पवार, उद्धव ठाकरे और कांग्रेस ने मराठा समुदाय को जानबूझकर नजरअंदाज किया। आज भी जब मनोज जरांगे बिना ओबीसी आरक्षण को प्रभावित किए मराठों के लिए आरक्षण की मांग कर रहे हैं, तब भी ये तीनों चुप्पी साधे हुए हैं।

चर्चित आईआरएस अधिकारी समीर वानखेड़े के प्रमोशन पर मुहर

दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार से क्या कहा?

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वह भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) अधिकारी और एनसीबी के पूर्व जोनल डायरेक्टर समीर वानखेड़े के प्रमोशन से संबंधित यूपीएससी की सिफारिश का पता लगाए। यदि ऐसी सिफारिश की गई हो, तो उन्हें पदोन्नत किया जाए। जस्टिस नवीन चावला और जस्टिस मधु जैन की बेंच ने कहा कि वानखेड़े की ओर से किसी भी तरह के दोष को स्वीकार नहीं किया गया है,

जबकि उनके खिलाफ सीबीआई और ईडी की जांच अब भी लंबित है। बेंच ने यह आदेश केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (कैट) के दिसंबर 2024 के उस आदेश को बरकरार रखते हुए पारित किया, जिसमें सरकार को वानखेड़े के प्रमोशन से संबंधित सीलबंद लिफाफा खोलने और यदि यूपीएससी ने उनके नाम की सिफारिश की हो, तो उन्हें एक जनवरी 2021 से अतिरिक्त आयुक्त पद पर पदोन्नत करने का निर्देश दिया गया था। सरकार ने हाई कोर्ट का रुख करते हुए कहा था कि वानखेड़े का मामला उनके खिलाफ दर्ज मामलों के कारण सीलबंद लिफाफे में रखा गया है। हालांकि, बेंच ने कहा, वर्तमान में प्रतिवादी (वानखेड़े) के खिलाफ ऐसा कोई विभागीय मामला लंबित नहीं है जिसमें उनके खिलाफ कोई आरोपपत्र जारी किया गया हो।

बेंच ने यह भी कहा कि वानखेड़े को न तो सस्पेंड किया गया है और न ही उनके खिलाफ किसी आपराधिक मामले में चार्जशीट दाखिल की गई है। सरकार ने कैट के आदेश को इस आधार पर चुनौती दी थी कि वानखेड़े के खिलाफ गंभीर आरोप हैं, जिनके आधार पर एफआईआर दर्ज की गई थीं और पहले एक अवसर पर सीवीसी ने भी उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करने की सलाह दी थी। वानखेड़े 2008 बैच के आईआरएस अधिकारी हैं।

वर्ष 2021 में एनसीबी मुंबई में तैनाती के दौरान क्रूज ड्रग्स मामले में अभिनेता शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को फंसाने की धमकी देकर उनके परिवार से कथित रूप से 25 करोड़ रुपये मांगने के आरोपों के चलते चर्चा में आए थे।

कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी ने जिला कोर्ट में किया सरेंडर

हिंदू युवतियों से दुष्कर्म के लिए देता था पैसा

इंदौर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। लव जिहाद केस में फरार चल रहे कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी को आखिरकार इंदौर जिला कोर्ट में सरेंडर करना पड़ गया। उसपर 40 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। पुलिस उसकी कुर्की की तैयारी में थी। बाणगंगा थाना क्षेत्र में उसके खिलाफ दो मामले दर्ज हैं। जानकारी के अनुसार, अनवर कादरी की बेटी को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। अनवर पर हिंदू युवतियों से दुष्कर्म कराने के गंभीर आरोप हैं। उस पर लव जिहाद के आरोपियों को फंडिंग करने का भी संदेह है। लंबे समय से फरार रहने के बाद उसने शुक्रवार को अदालत में आत्मसमर्पण किया। लव जिहाद के लिए मुस्लिम युवकों का वित्त पोषक पार्षद अनवर कादरी उर्फ अनवर डकैत ने जिला कोर्ट में आत्म समर्पण कर दिया है।

बाणगंगा और सदर बाजार पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। बाणगंगा पुलिस के अनुसार अनवर पुत्र मोहम्मद असलम कादरी का नाम दुष्कर्म और लव जिहाद के आरोपी अल्ताफ खान और साहिल ने लिया था। हिंदू युवतियों से दुष्कर्म करने वाले इन दोनों आरोपियों को अनवर ने 3 लाख रुपये देकर कहा था कि उनसे शादी करो और अनैतिक कारोबार में शामिल करो। आरोपियों की अनवर से मुस्लिम समुदाय के कार्यक्रमों में मुलाकात होती थी।

हर घंटे 55 हादसे और 20 लोगों की मौत 2023 में बेकाबू रफ्तार ने लीं 1.72 लाख जानें

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। देश में सड़क हादसों की संख्या 2023 में 4.2 प्रतिशत बढ़कर 4.8 लाख पहुंच गई। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की रिपोर्ट रोड एक्सीडेंट्स इन इंडिया 2023 के अनुसार 2023 में देश में 4,80,583 सड़क हादसे हुए। इनमें 1,72,890 लोगों की मौत हो गई और 4,62,825 लोग घायल हुए। यानी हर घंटे औसतन 55 हादसे और 20 मौतें हुईं। रिपोर्ट बताती है कि सड़क हादसों में सबसे ज्यादा मौतें 18 से 45 वर्ष के लोगों की हुईं। यह कुल मृतकों का 66.4 प्रतिशत है। वहीं 18-60 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग में यह आंकड़ा 83.4% रहा।

सड़क हादसों के मामले में राज्यों में तमिलनाडु ने राष्ट्रीय राजमार्गों पर सर्वाधिक हादसे दर्ज किए गए, जबकि उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा मौतें हुईं। रिपोर्ट के अनुसार, हादसों के मुख्य कारणों में मानवीय त्रुटि, सड़क की स्थिति और वाहन की खराबी शामिल हैं। यातायात नियम उल्लंघन में तेज रफ्तार सबसे बड़ा कारण रही, जिससे 68.1% मौतें हुईं। गलत दिशा में गाड़ी चलाने से 5.5% मौतें हुईं।

पांच दिन बाद लौटी श्रद्धा तिवारी, पति संग थाने पहुंचते ही मचा हड़कंप

इंदौर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। इंदौर से 23 अगस्त को लापता हुई 22 वर्षीय श्रद्धा तिवारी शुक्रवार सुबह अपने पति के साथ एमआईजी थाने पहुंच गई। पुलिस अब उससे पूरे मामले को लेकर पूछताछ कर रही है। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह ने कहा- श्रद्धा सही सलामत इंदौर आ गई है। उसने मंदसौर के एक मंदिर में करण योगी नाम के युवक से शादी कर ली है।

श्रद्धा उसे पहले से जानती थी। अभी मामले में पूछताछ की जा रही है। गुजराती कॉलेज की सेकेंड ईयर की छात्रा श्रद्धा की गुमशुदगी के बाद परिजनों ने उसके घर के बाहर उल्टी

श्रद्धा तिवारी

तस्वीर टांग दी थी। साथ ही यह भी घोषणा की थी कि जो भी उसे घर लाएगा, उसे 51 हजार रुपए इनाम दिया जाएगा। परिजनों का मानना था कि उल्टी तस्वीर टांगने से गुमशुदा व्यक्ति लौट आता है। इसी विश्वास के चलते उन्होंने यह कदम उठाया। ऐसा ही टोटका कुछ समय पहले राजा रघुवंशी हत्याकांड की मास्टरमाइंड सोनम रघुवंशी के पिता ने भी अपनाया था। श्रद्धा घर से जाते समय अपना मोबाइल वहीं छोड़ गई थी। इसीलिए जांच में पुलिस ने उसकी सहेली से पूछताछ की थी। इसमें पता चला कि परिजन ने उसे किसी बात को लेकर फटकारा था।

पुलिस को मिले सीसीटीवी फुटेज में श्रद्धा पहले घर के पास से गुजरती दिखी थी। इसके बाद वह गली से निकलकर लोटस शोरूम के सामने से होते हुए एमआर-4 की ओर जाती नजर आई। इन्हीं सुरागों के आधार पर पुलिस को आशंका थी कि वह उज्जैन की ओर जा सकती है।

एक और महिला दहेज की बलिवेदी पर

बेंगलुरु में फांसी के फंदे पर लटका मिला प्रेग्नेंट इंजीनियर का शव

बेंगलुरु, 29 अगस्त (एजेंसियां)। दक्षिण बेंगलुरु के सुद्दगुंटेपल्या स्थित अपने आवास पर 27 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर महिला का शव फांसी फंदे से लटका हुआ मिला। महिला के माता-पिता ने शिकायत दर्ज कराई है कि पति के परिवार द्वारा दहेज के लिए लगातार प्रताड़ित किए जाने के बाद उसने आत्महत्या कर ली। मृतक शिल्पा की शादी पूर्व सॉफ्टवेयर इंजीनियर प्रवीण से ढाई साल पहले हुई थी। दंपति का डेढ़ साल का एक बच्चा है। शादी से पहले शिल्पा ने इंजीनियरिंग में स्नातक की पढ़ाई पूरी की थी और इंफोसिस में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम करती थी। जबकि प्रवीण ओरेकल में कार्यरत थे। शादी के एक साल बाद ही उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और खाद्य पदार्थों का व्यवसाय शुरू कर दिया। शिकायत के अनुसार, प्रवीण के परिवार ने शादी के दौरान शुरुआत में 15 लाख रुपये नकद, 150 ग्राम सोने के आभूषण और घरेलू सामान की मांग की थी। हालाँकि ये मांगें पूरी कर दी गईं। शिल्पा के परिवार ने आरोप लगाया कि उत्पीड़न जारी रहा और बार-बार अतिरिक्त पैसे और कीमती सामान की मांग की गई। छह महीने पहले परिवार ने दावा किया कि प्रवीण के व्यवसाय को सहारा देने के लिए उन पर 5 लाख रुपये देने का दबाव डाला गया था। शिल्पा के माता-पिता ने आगे आरोप लगाया कि उनके सांवले रंग को लेकर उन्हें अपमानित किया गया। शिकायत में कहा गया कि उसकी सास अक्सर उसे, तुम काली हो और मेरे बेटे के लिए अच्छी जोड़ी नहीं हो।

उसे छोड़ दो, हम उसके लिए एक बेहतर दुल्हन ढूंढ लेंगे। कहकर प्रताड़ित करते थे। पुलिस ने बताया कि सुद्दगुंटेपल्या पुलिस स्टेशन में दहेज उत्पीड़न और अप्राकृतिक मृत्यु का मामला दर्ज किया गया है। प्रवीण को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया है। एक सहायक पुलिस आयुक्त जांच की निगरानी कर रहे हैं।

मानसून से मरने वालों की संख्या इस राज्य में हुई 312

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) के अनुसार, हिमाचल प्रदेश में 20 जून को मानसून की शुरुआत के बाद से 312 मौतें हुई हैं, जिनमें से 160 मौतें बारिश से संबंधित आपदाओं जैसे भूस्खलन, अचानक बाढ़, बादल फटने, डूबने, बिजली का झटका और अन्य मौसम संबंधी घटनाओं से जुड़ी हैं। सड़क दुर्घटनाओं में 152 लोगों की मौतें हुई हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था को कुल मिलाकर 2,75,354.81 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है, जिसमें सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे, निजी संपत्ति, कृषि, बागवानी और पशुधन को नुकसान शामिल है। इस अवधि में 1,854 पशुओं और 25,700 से ज्यादा पोल्ट्री पक्षियों की भी जान चली गई है। रिपोर्ट बताती है कि बारिश से संबंधित मौतें व्यापक रूप से हुई हैं, जिनमें सबसे ज्यादा मौतें कांगड़ा (30) में दर्ज की गईं, उसके बाद मंडी (29), चंबा (14), किन्नौर (14) और कुल्लू (13) का स्थान है। सड़क दुर्घटनाओं में भी मौतें काफी हुई हैं। चंबा और मंडी में 22-22 मौतें हुईं, इसके बाद कांगड़ा (19) और शिमला (15) का स्थान है।

बेगम बाग में महाकाल मंदिर के पास चिकन मटन की अवैध दुकान पर चला बुलडोजर

उज्जैन, 29 अगस्त (एजेंसियां)। उज्जैन के विश्व प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर के पास बेगम बाग क्षेत्र में चिकन मटन की अवैध दुकान पर मोहन यादव सरकार की एक बार फिर बुलडोजर कार्रवाई देखने को मिली है। यह कार्रवाई अंगारा रेस्टोरेंट पर हुई है। यह मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में शहर की चर्चित नॉनवेज की दुकान थी। इस दुकान को लेकर पूर्व में कई बार हिंदूवादी संगठनों ने आपत्ति ली थी कि महाकाल मंदिर पहुंच मार्ग पर इस प्रकार की नॉनवेज दुकान संचालित नहीं होना चाहिए।

किन्नौर में फटा बादल, भूस्खलन से किरतपुर-मनाली फोरलेन बंद

शिमला, 29 अगस्त (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश में मानसून की बारिश का कहर लगातार जारी है। लगातार जारी बारिश से जगह-जगह भूस्खलन, बाढ़ से लोगों की दुश्वारियां बढ़ गई हैं। जनजातीय जिले किन्नौर के लिप्पा में शुक्रवार सुबह बादल फटने के कारण व्यापक नुकसान की सूचना है। बादल फटने से आई बाढ़ में बगीचे बह गए।

सूचना मिलते ही प्रशासन की टीम मौके के लिए रवाना हुई। बादल फटने के बाद दो लोग भी लापता थे लेकिन बाद में दोनों सुरक्षित मिल गए हैं। उधर, किरतपुर-मनाली फोरलेन शुक्रवार सुबह से पूरी तरह से बंद है। बीती रात से लगातार हो रही बारिश और कैंची मोड़ व बनाला क्षेत्र में भारी भूस्खलन के कारण रास्ता खोलने का कार्य अब तक शुरू नहीं हो सका है।

सुविचार: अपनी अंतरात्मा को छोड़कर किसी के आगे मस्तक मत झुकाओ ईश्वर तुम्हारे अंदर ही विद्यमान है इसका अनुभव करो

शिक्षण संस्थानों में "चेहरे से पहचान" की सुविधा लागू करें: मुख्यमंत्री

सीएम ने शिक्षा विभाग की उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक की

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। शिक्षा के बुनियादी ढांचे में सुधार और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए, मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने आज संबंधित अधिकारियों को स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में बुनियादी ढांचे का उन्नयन करके पूरे तेलंगाना में शिक्षा के गुणवत्ता मानकों को मजबूत करने का निर्देश दिया।

मुख्यमंत्री ने ज़ोर देकर कहा कि शिक्षण सुविधाओं में सुधार के अलावा, उन्होंने बेहतर उपस्थिति और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सभी संस्थानों में छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए "चेहरे से पहचान" की सुविधा अनिवार्य करने का आदेश दिया। शुक्रवार को यहां शिक्षा विभाग की एक उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक में, मुख्यमंत्री ने अनियमितताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कई विभाग कक्षाओं, रसोई, शौचालयों और गार्ड हाउस के निर्माण का काम संभाल रहे हैं, जिससे प्रगति बाधित हो रही है। इस प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए, शिक्षा से संबंधित सभी निर्माण कार्यों को "शिक्षा और कल्याण बुनियादी ढांचा विकास निगम (ईडब्ल्यूआईडीसी)" के अंतर्गत लाया जाना चाहिए, जो पहले से ही यंग इंडिया इंटीग्रेटेड रेजिडेंशियल स्कूलों की देखभाल कर रहा है। उन्होंने कहा कि आवश्यक कर्मचारियों की तैनाती अन्य विभागों से की जाएगी। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को अम्मा आदर्श विद्यालयों के अंतर्गत लंबित "मध्याह्न भोजन" कार्यक्रम के बिलों और स्वच्छता शुल्क का अविलंब भुगतान करने के निर्देश दिए, साथ ही महिला महाविद्यालयों में मूत्रालयों, शौचालयों और सौर ऊर्जा चालित कंटेनर रसोई के निर्माण में तेजी लाने के निर्देश दिए।

खेलों के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता पर ज़ोर देते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर "शारीरिक शिक्षा शिक्षकों (पीईटी)" को अनुबंध के आधार पर नियुक्त किया जा सकता है। उन्होंने छात्राओं के मार्गदर्शन के लिए गुरुकुल विद्यालयों में 'महिला परामर्शदाताओं' की नियुक्ति का भी प्रस्ताव रखा। शिक्षा पर व्यय को "खर्च नहीं, निवेश" माना जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्क पहले ही केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से आवासीय विद्यालयों सहित शिक्षा विकास ऋणों को एफआरबीएम सीमा से मुक्त करने की अपील कर चुके हैं।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को सरकारी संस्थानों में पढ़ने वाले पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यक समुदायों के छात्रों पर "10 साल की रिपोर्ट" तैयार करने का निर्देश दिया, क्योंकि नामांकन में 90% से ज़्यादा हिस्सा इन्हीं का है। बैठक में सरकारी सलाहकार वेम नरेंद्र रेड्डी, विशेष सचिव बी. अजित रेड्डी, ओएसडी वेमुलु श्रीनिवासुलु, प्रमुख सचिव योगिता राणा, उच्च शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. बालकिष्टा रेड्डी, तकनीकी शिक्षा आयुक्त श्रीदेवसेना, स्कूल शिक्षा निदेशक नवीन निकोलस और अन्य उपस्थित थे।

बचाव प्रयासों पर अग्निशमन विभाग का स्पष्टीकरण

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। पिछले 48 घंटों में तेलंगाना के छह जिलों - कामारेड्डी, मेडक, निज़ामाबाद, निर्मल, राजन्ना सिरिसिला और सिद्दीपेट - में आई भीषण बाढ़ के बाद, तेलंगाना अग्निशमन एवं आपदा प्रतिक्रिया विभाग ने कहा कि परियोजनाओं के कारण आए पानी और टैंकों में दरारों के कारण निचले इलाके, कृषि भूमि और आवासीय कॉलोनियाँ जलमग्न हो गई हैं, जिससे पुल और सड़कें कट गई हैं। विभाग ने बताया कि बचाव कार्यों के लिए अधिकतम उपलब्ध जनशक्ति और उपकरण तैनात किए गए हैं। अपने व्यापक बचाव प्रयासों पर स्पष्टीकरण जारी करते हुए, अधिकारियों ने बताया कि कुल 1,646 लोगों को बचाया गया, जिनमें किसान, चरवाहे, बच्चे, बुजुर्ग और गर्भवती महिलाएं और पशुधन शामिल थे।

जुबली हिल्स उपचुनाव के लिए भाजपा निगरानी समिति

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एन रामचंदर राव ने आज आगामी जुबली हिल्स उपचुनाव के लिए पाँच सदस्यीय निगरानी समिति की घोषणा की। समिति के पाँच सदस्य सांसद एम रघुनंदन राव, विधायक पायल शंकर, पूर्व सांसद गरिकापति मोहन राव, पूर्व विधायक चिंताला रामचंद्र रेड्डी और हैदराबाद जिला इकाई के पूर्व अध्यक्ष डॉ गौतम राव है। जुबली हिल्स विधानसभा सीट विधायक मगंती गोपीनाथ के निधन के बाद रिक्त हुई थी।

निजी और कॉर्पोरेट अस्पतालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का आदेश

स्वास्थ्य मंत्री ने निम्स में मरीजों को दी जा रही चिकित्सा सेवाओं की समीक्षा की
इस वर्ष अब तक सौ से ज़्यादा किडनी प्रत्यारोपण सर्जरी

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। स्वास्थ्य मंत्री दामोदर राज नरसिम्हा ने निम्स में मरीजों को दी जा रही चिकित्सा सेवाओं की समीक्षा की। मंत्री ने हैदराबाद स्थित आरोग्यश्री ट्रस्ट कार्यालय में निम्स निदेशक बीरप्पा और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की। बीरप्पा ने बताया कि इस वर्ष के पहले 7 महीनों (जनवरी से जुलाई) में निम्स में 5 लाख 44 हज़ार लोगों को चिकित्सा सेवाएँ प्रदान की गईं। उन्होंने बताया कि इनमें से आधे से ज़्यादा लोगों को आरोग्यश्री और ईजेएचएस जैसी सरकारी योजनाओं के तहत मुफ़्त इलाज मिला।

बीरप्पा ने बताया कि बेहतर चिकित्सा सेवाओं के कारण, निम्स में आने वाले मरीजों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष अब तक सौ से ज़्यादा किडनी प्रत्यारोपण सर्जरी की जा चुकी हैं। इस अवसर पर, मंत्री ने निम्स निदेशक, डॉक्टरों और कर्मचारियों को बधाई दी। मंत्री ने सुझाव दिया कि आपातकालीन स्थितियों में निम्स आने वाले मरीजों के संबंध में अधिक सतर्कता बरती जानी चाहिए। यह सुझाव दिया गया कि मरीजों को जल्द से जल्द भर्ती करके उनका इलाज किया जाना चाहिए। आपातकालीन वार्ड में आवश्यक उपचार प्रदान किया जाना चाहिए और रोगी को संबंधित वार्ड में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। निदेशक बीरप्पा ने कहा कि वर्तमान में निम्स आपातकालीन कक्ष में प्रतिदिन 80 से 100 रोगी आ रहे हैं। बीरप्पा ने बताया कि इनमें से आधे से ज़्यादा रोगी निजी और कॉर्पोरेट अस्पतालों में उपचार प्राप्त कर रहे हैं और अपनी हालत बिगड़ने पर अंतिम समय में निम्स आ रहे हैं। बीरप्पा ने बताया कि कुछ कॉर्पोरेट अस्पताल ऑपरेशन कर रहे हैं और रोगियों को पूरी तरह ठीक होने से पहले ही छुट्टी देकर निम्स, उस्मानिया और गांधी अस्पताल भेज रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों से मुश्किलें पैदा हो रही हैं। निम्स में आपातकालीन स्थिति में आने वाले रोगियों में, मंत्री ने सुझाव दिया कि उन रोगियों को प्राथमिकता दी जाए जो सीधे निम्स आते हैं और जो सरकारी अस्पतालों से रेफरल पर आते हैं। निजी और कॉर्पोरेट अस्पतालों से आने वाले रोगियों के साथ सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए और उन्हें उपचार प्रदान किया जाना चाहिए। मंत्री ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को उन निजी और कॉर्पोरेट अस्पतालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का आदेश दिया जो ऑपरेशन के बाद और उपचार के बीच में रोगियों को छुट्टी दे देते हैं। गांधी, उस्मानिया, निम्स और अन्य सरकारी अस्पतालों के आपातकालीन विभागों के बीच समन्वय होना चाहिए और किसी अस्पताल के आपातकालीन वार्ड में बिस्तर भर जाने पर मरीज को दूसरे अस्पताल में रेफर करने और भर्ती करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। मरीज को रेफर करने से पहले, उसे आवश्यक प्राथमिक उपचार प्रदान किया जाना चाहिए और उसकी स्थिति स्थिर होनी चाहिए। मंत्री ने सुझाव दिया कि मरीज को एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल ले जाते समय उसके साथ एम्बुलेंस में एक डॉक्टर भी भेजा जाना चाहिए। मंत्री ने चेतावनी दी कि अगर ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर और आरएमओ मरीजों को भर्ती करने और रेफर करने में लापरवाही बरतते हैं तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में स्वास्थ्य सचिव क्रिस्टीना जेड चोंगटू, निम्स निदेशक बीरप्पा, चिकित्सा शिक्षा अतिरिक्त निदेशक वाणी, उस्मानिया मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य राजा राव डॉ. वाणी और अन्य ने भाग लिया।

सीपी ने बीबीनगर पेद्दा चेरुवु का दौरा किया

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। रचाकोंडा कमिश्नर सुधीर बाबू आईपीएस ने बीबीनगर पेद्दा चेरुवु का दौरा किया और गणेश विसर्जन की व्यवस्था का निरीक्षण किया। बाद में उन्होंने विसर्जन की व्यवस्था को लेकर पुलिस अधिकारियों को कई सुझाव व सलाह दिये। इस कार्यक्रम में भुवनगिरि डीसीपी अक्षांश यादव, अतिरिक्त डीसीपी लक्ष्मी नारायण, एसीपी राहुल रेड्डी, ट्रैफिक डीसीपी मनोहर, ट्रैफिक एसीपी प्रभाकर रेड्डी, बीबीनगर सीआई प्रभाकर रेड्डी, ट्रैफिक भुवनगिरि सीआई मधुसूदन रेड्डी, एसआई रमेश और अन्य ने भाग लिया।

कांग्रेस सरकार ने चुनावी वादों से तेलंगाना की जनता को धोखा दिया: बीजेएलपी नेता

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। बीजेएलपी नेता ए. महेश्वर रेड्डी ने आज आरोप लगाया कि रेवंत रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार पिछले विधानसभा चुनावों में किए गए वादों से मुकरकर तेलंगाना की जनता को धोखा दे रही है और 'ध्यान भटकाने वाले नाटकों' से नागरिकों को गुमराह कर रही है। आज यहाँ राज्य भाजपा कार्यालय में भाजपा विधान परिषद और विधानसभा सदस्यों की बैठक के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुए, महेश्वर रेड्डी ने कहा, "हमने तेलंगाना की जनता से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा की है। रेवंत रेड्डी ने विधानसभा में किए गए अपने ही वादे को नज़रअंदाज़ कर दिया है कि वे 420 वादों और छह गारंटियों को लागू करेंगे। उन्हें पूरा करने के बजाय, सरकार स्थानीय निकाय चुनावों में पिछड़ा वर्ग आरक्षण और कालेश्वरम परियोजना पर भ्रष्टाचार के आरोपों जैसे मुद्दों को उठाकर बिना कोई कानूनी कार्रवाई किए लोगों का ध्यान भटका रही है।" बीजेएलपी नेता ने सवाल उठाया कि कालेश्वरम परियोजना में भ्रष्टाचार की पूरी रिपोर्ट होने का दावा करने के बावजूद, मुख्यमंत्री ने सत्ता में लगभग दो साल बाद भी सीबीआई जाँच शुरू क्यों नहीं की और न ही कोई मामला दर्ज किया। उन्होंने कहा, "100 दिनों के भीतर कार्रवाई के बड़े-बड़े वादों के बावजूद, एक भी रुपया बरामद नहीं हुआ है और न ही किसी भ्रष्टाचारी पर मामला दर्ज किया गया है।" भाजपा विधायक पायल शंकर, धनपाल सूर्यनारायण, वेंकटरमण रेड्डी, भाजपा विधान परिषद दल के नेता एवीएन रेड्डी, एमएलसी अंजी रेड्डी, मलका कोमुरैया और अन्य उपस्थित थे।

CLASSIFIEDS

CHANGE OF NAME

I, C KAVITHA, W/O: SEP DEEPAK M R/o: HOUSE NO.1084, 6TH CROSS COLONY, PRAKASH NAGAR, RAJAJI NAGAR, NORTH BANGALORE, BENGALURU, KARNATAKA - 560021 have changed my name from C KAVITHA to KAVITHA C and my DOB is 10-05-1980 vide Affidavit dt.29-08-2025 AT Hyderabad.

I, RAMA DEVI, W/O: HAV PRASAD DURBESULA R/o: HOUSE NO. 1-203E162-B1, MARKAPUR, PRAKASAM, ANDHRA PRADESH - 523316 have changed my name from RAMA DEVI to DURVESULA RAMADEVI and my DOB is: 07-06-1987 vide Affidavit dt.25-08-2025 AT Hyderabad.

I, HAV PRASAD DURBESULA R/o: HOUSE NO. 1-203E162-B1, MARKAPUR, PRAKASAM, ANDHRA PRADESH – 523316 have changed my Daughter's name from DURUVESULA VENKATA SIVA SAI JYOSHNA to DURVESULA VENKATA SIVA SAI JYOSHNA and her DOB is: 02-03-2011 vide Affidavit dt.25-08-2025 AT Hyderabad.

सावधान

पाठकों को सूचित किया जाता है कि वर्गीकृत विज्ञापन का प्रतिवादन करने से पहले उसकी पूरी तरह से जाँच पड़ताल कर लें। विज्ञापनदाता ने दावा कर रहे हैं या कह रहे हैं, उन बातों से दैनिक समाचार पत्र (स्वतंत्र वार्ता) का किसी भी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं है।

एआईएमआईएम ने ईद-ए-मिलाद-उन-नबी के लिए मस्जिदों और दरगाहों को सजाने का आग्रह किया

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी, एआईएमआईएम के नेता अकबरुद्दीन ओवैसी और मरकज़ी मिलाद ज़ुलुस समिति के सदस्यों ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी से मुलाकात की। उन्होंने उनसे ईद-ए-मिलाद-उन-नबी के उपलक्ष्य में प्राचीन मस्जिदों और दरगाहों को सजाने और मुफ्त बिजली की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया। इसके अतिरिक्त, समिति के सदस्यों ने मुख्यमंत्री से 14 सितंबर को पूरे तेलंगाना में प्रदर्शन आयोजित करने की अनुमति मांगी।

रेलवे ने यात्रियों से ट्रेनों की नवीनतम स्थिति पर नजर रखने की अपील की

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश राज्यों में भारी बारिश और गंभीर चक्रवाती परिस्थितियों के कारण, हैदराबाद मंडल के अंतर्गत कई रेलवे खंड बाढ़ से प्रभावित हुए हैं, जिसके कारण भीकनूर-ताड़मदला, अकनापेट-मेडक, गजवेल-लकुदरम और बोलसा-कारखेली स्टेशनों के बीच पटरियों पर पानी भर गया है। सुरक्षा उपायों के तहत, स्थिति के अनुसार ट्रेन सेवाओं को रद्द, आंशिक रूप से रद्द, पुनर्निर्धारित या परिवर्तित किया जा रहा है। रेलवे अधिकारियों ने यात्रियों को यात्रा से पहले अपनी ट्रेनों की नवीनतम स्थिति की जाँच करने की सलाह दी है। एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, आवश्यक जानकारी एसएमएस, रेलवे ऐप्स/वेबसाइटों (आईआरसीटीसी, एनटीईएस, रेलोन) और डायल 139 सेवाओं के माध्यम से दी जा रही है। एससीआर के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल जैसे X (ट्विटर): @SCRailwayIndia, फेसबुक: दक्षिण मध्य रेलवे - एससीआर इंस्टाग्राम: @scrailwayindia; वेबसाइट: https://scr.indianrailways.gov.in/, https://scr.indianrailways.gov.in पर भी अपडेट उपलब्ध है। हेल्प डेस्क नंबर काचीगुडा - 9063318082, निज़ामाबाद - 9703296714, कामारेड्डी - 9281035664, सिकंदराबाद - 040-27786170 में उपलब्ध है। यात्रियों से अनुरोध है कि वे मौजूदा मौसम को देखते हुए अपनी यात्रा की योजना सावधानीपूर्वक बनाएँ।

एसीबी ने छात्रावासों का निरीक्षण किया

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) के अधिकारियों ने शुक्रवार को यादाद्री भुवनगिरी और नारायणपेट जिलों में स्थित विभिन्न छात्रावासों का औचक निरीक्षण किया और कई अनियमितताएँ पाईं। एसीबी संबंधित अधिकारियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई शुरू करने के लिए राज्य सरकार को एक विस्तृत रिपोर्ट भेजेगा। एसीबी ने यादाद्री जिले के रमन्नापेट गाँव में स्थित सरकारी अनुसूचित जाति बालिका छात्रावास और नारायणपेट जिले के सिंगरेनी चौराहे पर दामरगिड्डा स्थित तेलंगाना समाज कल्याण आवासीय विद्यालय और लड़कों के जूनियर कॉलेज का भी औचक निरीक्षण किया।

दहेज के लिए गर्भवती की हत्या का आरोप

संभल, 29 अगस्त (एजेंसियां)। संभल के गांव बहलोलपुर में एक गर्भवती महिला की मौत के मामले में पति समेत पूरा ससुराल पक्ष फरार हो गया है। मृतका धर्मवती (22) की शादी श्यामसुंदर के साथ दो साल पहले हुई थी। मायके पक्ष का आरोप है कि शादी के बाद से ही दहेज की मांग को लेकर उसे प्रताड़ित किया जा रहा था। मृतका के भाई लवकुश ने बताया कि सुबह 5 बजे उन्हें फोन पर सूचना मिली। उनकी बहन की मारपीट कर हत्या कर दी गई थी। जब परिजन मौके पर पहुंचे तो धर्मवती का शव जमीन पर पड़ा मिला। ससुराल वाले घर का सामान लेकर फरार हो चुके थे। मायके पक्ष ने ससुराल वालों पर दहेज हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। थाना प्रभारी अखिलेश प्रधान के अनुसार तहरीर मिलने पर रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

बहू की दहेज हत्या के मामले में सास गिरफ्तार

नूरपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बिजनौर के नूरपुर थाना क्षेत्र में दहेज हत्या के एक मामले में पुलिस ने आरोपी सास को गिरफ्तार किया है। मृतका के पिता उमेश शर्मा की शिकायत पर यह कार्रवाई की गई है। उमेश शर्मा ने 21 अगस्त 2025 को नूरपुर थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि उनकी बेटी कनक को उसके पति संजीव उर्फ चिन्टू और सास कौशल दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित करते थे। इसी दिन उनकी बेटी की मौत हो गई। पुलिस ने इस मामले में धारा 304-बी और दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धाराओं में केस दर्ज किया। आज नूरपुर पुलिस ने आरोपी सास कौशल को गिरफ्तार कर लिया है। कौशल ब्रह्मपुरी मोहल्ले की रहने वाली है। मामले में आरोपी पति संजीव अभी फरार है। पुलिस उसकी गिरफ्तारी के लिए लगातार प्रयास कर रही है। गिरफ्तारी में महिला उप-निरीक्षक जूही, महिला आरक्षी सोनी तोमर और होमगार्ड मनफूल सिंह की टीम शामिल थी।

सेक्स रैकेट की मेंबर पिंकी अरेस्ट

मुरादाबाद, 29 अगस्त (एजेंसियां)। पुलिस ने गोशाला की आड़ में सेक्स रैकेट चलाने वाली पिंकी को अरेस्ट कर लिया है। पिंकी ही गोशाला में लड़कियों को बंधक बनाकर रखती थी। उसकी जिम्मेदारी थी कि वो लड़कियों को बाहर नहीं निकलने देती थी। पिंकी उर्फ संतोष को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इस मामले में एक महिला समेत 6 आरोपियों को पुलिस पहले ही जेल भेज चुकी है। सुबह ट्रेन में बेटिकट पकड़ी गईं तीन लड़कियों से पूछताछ में सामने आया था कि कांशीराम नगर में सेक्स रैकेट चल रहा है। तीनों लड़कियां गिरोह के चंगुल से निकल आई हैं। इसके बाद बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष अमित कौशल ने मझोला थाने में महिला समेत चार लोगों पर केस दर्ज कराया।

घरेलू विवाद में बहू ने खाया जहर

बरेली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बरेली के थाना बारादरी क्षेत्र में एक महिला ने घरेलू कलह से परेशान होकर जहरीला पदार्थ खा लिया। महिला को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। संजय नगर की रहने वाली महिला की शादी को एक वर्ष हुआ है। उसकी ननद का 8 वर्षीय बेटा अंशु उसके साथ रहता है। बच्चे की शरारतों को लेकर अक्सर घर में विवाद होता है। जब महिला बच्चे को डांटती है, तो सास और पति गौरव उसके साथ मारपीट करते हैं। शुक्रवार सुबह भी इसी बात को लेकर विवाद हुआ। अंशु को डांटने पर सास और पति ने महिला के साथ मारपीट की। इससे आहत होकर महिला ने घर में रखा जहरीला पदार्थ खा लिया। महिला ने तुरंत अपनी मां को फोन कर सूचना दी। मां कोहड़ापीर से दौड़कर पहुंची और बेटी को अस्पताल ले गई। वर्तमान में महिला की स्थिति स्थिर बताई जा रही है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

यमुना का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर

मथुरा, 29 अगस्त (एजेंसियां)। मथुरा में यमुना का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर बने रहने के कारण मथुरा यमुनापार क्षेत्र का हंसगंज गांव संकट में आ गया है। पिछले तीन दिनों में नदी के तेज कटान से करीब 20 फीट जमीन यमुना में समा चुकी है। कटान का रुख सीधे गांव की ओर होने से ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। गांव से सटे करीब 20 मकानों के पास यमुना का बहाव पहुंच चुका है। कटान की आशंका को देखते हुए एक दर्जन से अधिक परिवार अपने मकान खाली कर चुके हैं। लोग रात में अपने घरों में सोने से डर रहे हैं और रिश्तेदारों या परिचितों के यहां शरण लिए हुए हैं।

साली के प्यार में जीजा पागल

कन्नौज, 29 अगस्त (एजेंसियां)। यूपी के कन्नौज में साली से शादी की जिद पर अड़े जीजा ने शोले फ़िल्म का सीन जीवंत कर वीरू बन गया। साली से शादी करने पर परिजनों ने मना किया तो जीजा चुपचाप बिजली की 33 हजार वोल्ट लाइन के टॉवर पर चढ़ गया और वहीं से साली को बसंती बता शादी कराने की जिद करने लगा। युवक के टॉवर पर चढ़ने से हड़कंप मच गया और पुलिस व बिजली विभाग के अफसर उसकी मान मनौव्वल मे लग गये।

युवक ने अपना नाम नवल किशोर उर्फ राज सक्सेना बताया है। हाई वोल्टेज ड्रामे के बीच करीब 7 घंटे बाद जब परिजनों ने साली से शादी का आश्वासन दिया उसके बाद युवक टॉवर से उतरा। युवक अपनी तीसरी साली से शादी की जिद पर अड़ा था। युवक को बिजली टॉवर से उतारने के बाद उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। अस्पताल में भी वह बार-बार कहता रहा कि वह अपनी साली से शादी करके ही मानेगा।

वोटर अधिकार यात्रा में, राहुल को बांधी पगड़ी

बेतिया, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार में वोटर अधिकार यात्रा के 13वें दिन राहुल गांधी ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी। बेतिया के चनपटिया से शुरू हुई यात्रा हरि वाटिका चौक पहुंची, जहां गांधी जी की प्रतिमा पर माला चढ़ाकर उन्हें नमन किया। यात्रा में समर्थकों से मिलने के दौरान तेजस्वी यादव के हाथ में चोट लगी है। गाड़ी के गेट में उनका हाथ दब गया, जिससे उन्हें हल्की चोट आई। 29 अगस्त को सुबह यात्रा शुरू हुई तो 100 घोड़ों का काफिला भी इसमें शामिल हुआ। साथ ही हाथी-ऊंट भी हैं। प्रदेश में जारी अलर्ट के बीच राहुल की यात्रा की सुरक्षा में 400 जवान तैनात हैं। राहुल गांधी को कांग्रेस नेता अभिषेक रंजन ने नीली पगड़ी बांधी। फिलहाल यात्रा बेतिया शहर में है। काफिला छावनी रोड, सुप्रिया रोड, रेलवे स्टेशन चौक से गुजरेगा। यात्रा नौतन प्रखंड होते हुए गोपालगंज जिले में प्रवेश करेगी। कांग्रेस सांसद तनुज पुनिया को इस पूरी यात्रा का प्रभारी बनाया गया है। 1 सितंबर को पटना में यात्रा खत्म होगी।

मंदिर भूमि विवाद में पैमाइश के लिए पहुंची प्रशासन की टीम, भारी पुलिस बल तैनात

देवरिया, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राज्य मंत्री विजय लक्ष्मी गौतम व मनोकामना पूर्ण मंदिर के उत्तराधिकारी राजेश नारायण दास के बीच भूमि विवाद में पैमाइश के लिए प्रशासन की टीम मंदिर मंत्री आवास पर पहुंची है। प्रशासन की टीम शुक्रवार की सुबह भारी पुलिस बल के साथ विवादित भूमि पर पहुंची है। एडीएम प्रशासन जैनेंद्र सिंह, एडीएम वित्त एवं राजस्व रामशंकर सिटी, मजिस्ट्रेट श्रुति शर्मा, एडिशनल एसपी सुनील कुमार सिंह के नेतृत्व में दोनों ही पक्षों से बातचीत के बाद पैमाइश शुरू हो चुकी है। सुरक्षा के मद्देनजर हनुमान मंदिर और राज्यमंत्री के आवास के आसपास लगभग 500 पुलिसकर्मी तैनात है। सभी की निगाहें पिछले कुछ दिनों से इस प्रकरण पर लगी हुई है।

जब्तीकरण के कारण राज्य मंत्री की चहारदीवारी का निर्माण कार्य रुका हुआ है। शहर के मनोकामना हनुमान मंदिर के समीप राज्यमंत्री विजय लक्ष्मी गौतम की भूमि है। वह बैनामा कराए गए भूमि की चहारदीवारी निर्माण करा रही थीं। उनका आरोप था कि राज्य मंत्री ने मंदिर की भूमि पर कब्जा किया है। उसे मुक्त कराया जाए।

टैरिफ की मार : यूपी के निर्यात से जुड़े उद्योग गंभीर संकट में

22 हजार करोड़ के एक्सपोर्ट पर असर

लखनऊ, 29 अगस्त (एजेंसियां)। भारत पर अमेरिका के 50 फीसदी टैरिफ से यूपी के निर्यात से जुड़े उद्योगों पर गंभीर संकट मंडराने लगा है। प्रदेश के करीब 22 हजार करोड़ रुपये के निर्यात पर गंभीर असर पड़ेगा। निर्यात में 40 से 50 फीसदी तक कमी आने की आशंका है।

टैरिफ का सबसे ज्यादा असर लेदर, पीतल, कांच, टेक्सटाइल और साड़ी व कालीन उद्योग पर पड़ा है। इन सेक्टरों में अधिकांश छोटी इकाइयां हैं। यूपी से सालाना करीब 1.86 लाख करोड़ रुपये का निर्यात होता है। इसमें अमेरिकी हिस्सेदारी 19 फीसदी है। वित्त वर्ष 24-25 में यूपी से अमेरिका को करीब 36 हजार करोड़ का कुल निर्यात किया गया। इसमें लगभग 14 हजार करोड़ का निर्यात इलेक्ट्रानिक्स उपकरणों का है जो टैरिफ से बाहर है।

फेडरेशन आफ इंडियन एक्सपोर्ट आर्गनाइजेशन के यूपी प्रमुख आलोक श्रीवास्तव ने कहा कि इससे कीमतें बढ़ने की संभावना है, जिससे प्रतिस्पर्धा कठिन हो जाएगी। लगभग 1200 करोड़ के कालीन और जरदोजी आर्डर फंस गए हैं, जिसका असर पूर्वांचल में करीब 50 लाख श्रमिकों की रोजगार सुरक्षा पर पड़ेगा। वहीं चर्म निर्यात परिषद के पूर्व चेयरमैन मुख्तारुल अमीन ने कहा कि चुनौती बड़ी है लेकिन उम्मीद है कि जल्द सरकार इसका समाधान निकाल लेगी। इन सेक्टरों पर ज्यादा असर फुटवियर और लेदर उत्पाद वर्ष 2024-25 में निर्यात 16 हजार करोड़ हुआ।

अमेरिका की हिस्सेदारी लगभग 5000 करोड़ रही। अब 45% घटने की आशंका। कालीन, दरी पिछले साल हुए करीब 17 हजार करोड़ के निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी 7 हजार करोड़ रही। 50% तक घटने की आशंका।

एक्सप्रेस वे पर दर्दनाक हादसा आगरा में तैनात एसडीएम की मौत

आगरा, 29 अगस्त (एजेंसियां)। आगरा के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और वर्तमान में कलेक्ट्रेट में अपर नगर मजिस्ट्रेट का चार्ज संभाल रहे एसडीएम राजेश जायसवाल की लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर सड़क हादसे में मौत हो गई। एसडीएम अपनी कार से वापस लौट रहे थे। इटावा के पास एक्सप्रेस वे पर दर्दनाक हादसे में उनकी जान चली गई। जानकारी के अनुसार, राजेश जायसवाल की कार इटावा के पास एक्सप्रेस वे पर अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हादसे की खबर मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई। राजेश जायसवाल किरावली में एसडीएम के पद पर तैनात थे। और वर्तमान में कलेक्ट्रेट में अपर नगर मजिस्ट्रेट का चार्ज संभाल रहे थे। हादसे के बाद स्थानीय पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने तुरंत मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया। अधिकारियों ने बताया कि हादसे की पूरी जांच की जा रही है। राजेश जायसवाल का निधन प्रशासनिक सेवा में एक प्रमुख नुकसान माना जा रहा है।

पीएम मोदी को अपशब्द कहे जाने के मामले में सीएम नीतीश कुमार ने कडी निंदा

पटना, 29 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किए जाने पर अब बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रतिक्रिया सामने आई है। शुक्रवार (29 अगस्त, 2025) की सुबह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के एक्स हैंडल से इस मामले में उनका बयान जारी किया गया। इस एक्स पोस्ट में लिखा गया है, दरभंगा में वोटर अधिकार यात्रा के दौरान कांग्रेस और राजद के मंच से माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी स्व. माता जी के विरूद्ध जिस प्रकार की अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया है वह अत्यंत अशोभनीय है और मैं इसकी निंदा करता हूं।

आठ जिलों में पटाखा बनाने भंडारण करने और बिक्री पर प्रतिबंध के निर्देश जारी

लखनऊ, 29 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के अनुपालन में एनसीआर और आसपास के 8 जिलों में पटाखों का निर्माण, भंडारण और बिक्री पर प्रतिबंध लगाया है। यह प्रतिबंध मेरठ, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर (नोएडा), बुलंदशहर, हापुड़, बागपत, शामली, मुजफ्फरनगर में प्रभावी होगा। यदि कोई व्यक्ति या संस्था इस आदेश का उल्लंघन करती है तो उसे पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 की धारा-15 के तहत सजा और जुर्माने से दंडित किया जाता है। प्रदेश पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के मुताबिक आदेश का उल्लंघन करने पर 5 साल तक की सजा, एक लाख रुपये तक का जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं। पुलिस ने जनता से अपील की है कि यदि कहीं पटाखों के विनिर्माण, संग्रहण, विक्रय एवं उपयोग हो रहा है, तो इसकी शिकायत यूपी 112 पर की जा सकती है।

सीएम नीतीश कुमार की कैबिनेट का महिलाओं के लिए बड़ा फैसला

रोजगार के लिए मिला सीधा ऑफर

पटना, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने महिलाओं के सशक्तिकरण को लेकर बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने 2005 में सत्ता संभालने के बाद से ही महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई कदम उठाए हैं और अब इसी दिशा में एक ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने एक्स अकाउंट (पूर्व में ट्विटर) पर महिला सशक्तिकरण को लेकर एक बड़ी घोषणा की। उन्होंने लिखा कि नवंबर 2005 में सरकार बनने के बाद से ही महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। अब महिलाएं अपनी मेहनत से न केवल राज्य के विकास में योगदान दे रही हैं, बल्कि अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत कर रही हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि इसी मिशन को आगे बढ़ाते हुए कैबिनेट की बैठक में 'मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना' को मंजूरी दी गई है। इस योजना का उद्देश्य राज्य के हर परिवार की एक महिला को उनकी पसंद का रोजगार शुरू करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना है।

नोट जलाने वाले इंजीनियर की नहीं मिली रिमांड

पटना, 29 अगस्त (एजेंसियां)। लाखों रुपये के नोट जलाने वाले ग्रामीण कार्य विभाग के अधीक्षण अभियंता विनोद कुमार राय के स्वास्थ्य का हवाला देते हुए उनकी रिमांड नामंजूर कर दी गई है। आर्थिक अपराध इकाई (ईओयू) ने इंजीनियर की पांच दिनों की रिमांड कोर्ट से मांगी थी, मगर रिमांड की स्वीकृति नहीं मिल पाई। सूत्रों के अनुसार, इंजीनियर के स्वास्थ्य को देखते हुए नर्सिंग होम या डॉक्टरों की टीम के सामने पूछताछ के विकल्प दिए गए हैं। ईओयू की टीम अब आगे की कार्रवाई के लिए लीगल टीम से विचार-विमर्श करेगी। दूसरी ओर, नोट जलाने के मामले में ईओयू अब इंजीनियर की पत्नी बबली राय की तलाश कर रही है। बबली राय की गिरफ्तारी के लिए ईओयू ने वांरट की मांग कोर्ट से की है। बबली राय पर भारतीय मुद्रा को जलाने, पुलिस के काम में बाधा डालने आदि का मामला दर्ज किया गया है। ईओयू की टीम जब छापेमारी करने इंजीनियर के आवास पहुंची थी तो पत्नी बबली राय ने पुलिस को अकेले होने का हवाला देकर गेट के बाहर ही रात भर रोके रखा। इस दौरान रात भर घर में नोटों और दस्तावेजों को जलाया जाता रहा। इसके बावजूद सुबह छापेमारी में इंजीनियर के आवास से 52 लाख नकद, 26 लाख के गहने और बड़ी संख्या में अधजले नोट और दस्तावेज मिले थे।

संभल में अलर्ट: न्यायिक आयोग की जांच रिपोर्ट आने के बाद सतर्कता

जामा मस्जिद समेत कई इलाकों में कड़ी सुरक्षा

संभल, 29 अगस्त (एजेंसियां)। संभल दंगे को लेकर न्यायिक आयोग की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक होने के बाद जिले में सुरक्षा के दृष्टिकोण से अलर्ट जारी कर दिया गया है। जिला प्रशासन और पुलिस ने किसी भी संभावित स्थिति से निपटने के लिए शहर के संवेदनशील क्षेत्रों में अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात कर दिए हैं। खासतौर पर जामा मस्जिद क्षेत्र और आसपास के इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, रिपोर्ट के सामने आने के बाद कुछ क्षेत्रों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती थी, जिसे ध्यान में रखते हुए पहले से ही तैयारियां की गई थीं। जिला प्रशासन ने आम जनता से शांति बनाए रखने की अपील की है और अफवाहों पर ध्यान न देने की सलाह दी है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। किसी भी प्रकार की अव्यवस्था बर्दाश्त नहीं की जाएगी। लगातार गश्त की जा रही है और इंटेलिजेंस विंग भी सक्रिय है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि सोशल मीडिया पर भी नजर रखी जा रही है और किसी भी भड़काऊ पोस्ट पर तुरंत कार्रवाई की जाएगी।

बख्शी का तालाब इलाके में नाबालिग से सामूहिक दुष्कर्म

दो नामजद सहित चार पर मुकदमा दर्ज

लखनऊ, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राजधानी लखनऊ के बख्शी का तालाब इलाके में एक नाबालिग लड़की से सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। मामले में दो नामजद सहित चार पर मुकदमा दर्ज किया गया है। पीड़िता के पिता का आरोप है कि घटना बृहस्पतिवार रात लगभग साढे आठ बजे की है। उनकी बेटी पुराने घर से नए घर जा रही थी। रास्ते में सूनसान जगह पर दो लोगों ने बेटी का मुंह दबाकर कार में बैठा लिया। उसे गांव के बाहर सूनसान जंगल में लेकर गए। जहां पर दोनों ने उसके साथ गैंगरेप किया। इसमें दो और अज्ञात लोग शामिल थे। घटना को अंजाम देकर चारों फरार हो गए। उनकी बेटी ने घर पहुंचकर सारी आपबीती बतायी। इसके बाद बीकेटी थाने पहुंचकर पुलिस को शिकायत देकर एफआईआर दर्ज करवाई है। प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार सिंह ने बताया कि पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर पीड़िता का मेडिकल करवाया है। आरोपियों की तलाश की जा रही है। पुलिस ने पीड़िता के पिता की शिकायत पर शिवा सिंह व राज सहित चार के खिलाफ केस दर्ज किया है।

पीएम मोदी पर अभद्र टिप्पणी करने वाला गिरफ्तार, कांग्रेस से है जुड़ा

दरभंगा, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार के दरभंगा में पीएम मोदी पर अभद्र टिप्पणी करने वाले रफीक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। बिहार में महागठबंधन की वोटर अधिकार यात्रा के दौरान कथित तौर पर पीएम मोदी की मां को गाली देने वाले युवक का वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ था। इसके सामने आने के बाद बीजेपी ने कांग्रेस और राहुल गांधी पर हमला बोला था। इसके साथ ही मानसिकता पर सवाल भी खड़े किए थे। वायरल वीडियो के बाद बीजेपी ने पटना में राहुल गांधी के खिलाफ केस भी दर्ज कराया था। अब इस मामले में पुलिस ने दरभंगा से अभद्र टिप्पणी करने वाले युवक को गिरफ्तार कर लिया है। युवक का नाम रफीक बताया जा रहा है।

पीएम मोदी की मां पर टिप्पणी का मामला बढ़ते देख पुलिस भी हरकत में आई। पुलिस ने आनन-फानन में वायरल वीडियो के आधार पर युवक की पहचान की और उसकी गिरफ्तारी कर ली। अब तक इस गिरफ्तारी को लेकर पुलिस की तरफ से कुछ नहीं कहा गया है। बिहार में महागठबंधन की तरफ से वोटर अधिकार यात्रा निकाली जा रही है। रैली सुबह सीतामढ़ी से दरभंगा पहुंची थी। यहां एक जनसभा का आयोजन किया गया था। इसी दौरान रफीक ने पीएम मोदी और उनकी मां पर अभद्र टिप्पणी की थी। हालांकि इस मामले पर रैली के आयोजक नौशाद ने पहले ही माफी मांग ली थी। बीजेपी ने वायरल वीडियो के बाद कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साधा था। साथ ही कहा था कि राजनीति में इस तरह की नीचता पहले कभी नहीं देखी है।

सरकारी कर्मचारी की मौत दो-दो महिलाओं ने कहा

मैं उनकी पत्नी', 2-2 डेथ सर्टिफिकेट भी हो गया जारी; उलझा पूरा मामला

हापुड़, 29 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के हापुड़ से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है, जहां हापुड़ नगर पालिका द्वारा उत्तराखंड सरकार के एक कर्मचारी का फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया है। पूरी घटना फिल्म गब्बर एज बैक की फिल्मी कहानी की तरह पुलिस के सामने पहुंची। जिसको सुनकर पुलिस भी हैरान है। जिसमें पहले से एक स्थान पर घोषित मृत व्यक्ति का अन्य स्थान से भी फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र जारी कर दिया जाता है। उत्तराखंड में ड्यूटी के दौरान मृत हुए कर्मी अरुण कुमार वर्मा का उत्तराखंड सरकार द्वारा पहले मृत्यु प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया था। इसके एक माह बाद हापुड़ निवासी एक अन्य महिला के आवेदन पर फर्जी तथ्यों के आधार पर पहले से मृत घोषित सरकारी कर्मी अरुण का एक और मृत्यु प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया। उत्तराखंड सरकार द्वारा जारी किए गए मृत्यु प्रमाण पत्र में मृत्यु का स्थान कर्णप्रयाग, जिला चमोली, उत्तराखंड दिखाया गया है। जबकि हापुड़ नगर पालिका द्वारा जारी किए गए प्रमाण पत्र में उनका मृत्यु का स्थान जनपद हापुड़ अंकित किया गया है। उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश दोनों राज्यों से एक ही व्यक्ति के जारी हुए दो मृत्यु प्रमाण पत्रों के मामले में पुलिस द्वारा जांच शुरू कर दी गई है।

3 लाख से अधिक लोगों की नागरिकता पर सवाल

एसआईआर के तहत भेजा गया नोटिस

पटना, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार के सीमावर्ती और तराई क्षेत्रों के आठ जिलों में एक बड़ा अभियान शुरू किया गया है, जिसके तहत 3 लाख से अधिक संदिग्ध नागरिकता वाले मतदाताओं को नोटिस भेजा गया है। यह कार्रवाई सिस्टमैटिक इंटरवेंशन एंड रिफॉर्म (एसआईआर) कार्यक्रम के तहत की जा रही है, जिसका उद्देश्य मतदाता सूचियों को शुद्ध और त्रुटि-रहित बनाना है। इस बड़े पैमाने के अभियान ने उन जिलों में रहने वाले लोगों के बीच हलचल मचा दी है, जिनकी नागरिकता पर सवाल उठाए गए हैं।

आशंका है कि ये नेपाल या बांग्लादेश के हो सकते हैं। जिन जिलों में यह नोटिस भेजा गया है। उनमें मुख्य रूप से किशनगंज, पूर्णिया, पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, अररिया, सहरसा, मधुबनी और सुपौल शामिल हैं। ये जिले भौगोलिक रूप से नेपाल और बांग्लादेश की सीमा से सटे हैं, जिस कारण यहां की आबादी की नागरिकता को लेकर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं।

धर्मांतरण गिरोह का पाक कनेक्शन

बरेली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बरेली में पकड़े गए धर्मांतरण गिरोह की जांच में नए तथ्य सामने आ रहे हैं। कट्टरपंथी जाकिर नाइक के अलावा गिरोह के सदस्य पाकिस्तानी धर्मगुरु इंजीनियर अली मिर्जा के भी मुरीद हैं। दूसरे धर्म के लोगों को अपने धर्म से जोड़ने से पहले वे अली मिर्जा जैसे धर्मगुरुओं का भाषण उन्हें सुनाते थे। प्रभात को हामिद बनाने वाले गिरोह के पास से अली मिर्जा से जुड़ा साहित्य मिला है। बरामद सीडी में अली मिर्जा की तकरीर भी है। अली मिर्जा यूट्यूब पर अक्सर भारत के मुद्दों पर चर्चा करता है। कुछ दिन पहले दाढ़ी को लेकर टिप्पणी की थी और संगीत को जायज बताया था। वहां सरकार के खिलाफ बोलने पर उसे गिरफ्तार भी किया गया था। चूंकि अली मिर्जा कट्टरपंथी विचारधारा के विरोध में रहता है, इसलिए उसे पाकिस्तान के साथ ही भारत के समुदाय विशेष के युवा भी फॉलो करते हैं।

अधिकारियों को जानकारी मिली है कि शुरुआत में शिकार का ब्रेनवॉश करने के लिए उनको अली मिर्जा की ही तकरीर सुनाई जाती थी। अधिकारियों ने बताया कि गिरोह के पास से जाकिर नाईक का भी साहित्य मिला है। इससे ऐसा लग रहा है कि गिरोह के सदस्य धर्मांतरण के लिए पहले शिकार के दिमाग में अली मिर्जा की आधुनिक विचारधारा डालते थे। हिंदू और मुस्लिम धर्म की समानता बताते थे।

जब शिकार फंस जाता था तो धीरे-धीरे ब्रेनवॉश कर उसके अंदर जाकिर नाईक की नफरती विचारधारा विकसित करते थे। गिरोह के लोगों को बाकायदा इसके लिए फंडिंग की जाती थी। आरोपी अब्दुल मजीद, सलमान, आरिफ और फहीम कोई बड़ा कारोबार नहीं करते, फिर भी उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर है। पूरे गिरोह को संचालित करने के लिए कहां से फंडिंग हो रही थी? इसकी जांच की जा रही है। सभी के खाते खंगाले जा रहे हैं। कुछ दिनों में बड़ा खुलासा हो सकता है।

बस से भारी मात्रा में नशीली दवा और 47 लाख रुपये बरामद, आरोपी फरार

अररिया, 29 अगस्त (एजेंसियां)। भारत नेपाल सीमा से सटे बथनाहा में एसएसबी और बथनाहा पुलिस के द्वारा एक यात्री की जांच में 47 लाख 49 हजार रुपया नकदी सहित नशीली दवा बरामद की गई है। एसएसबी 56 वीं बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी संजीव कुमार के निर्देश पर बथनाहा में एसएसबी के इंस्पेक्टर प्रवीण प्रभाकर एवं जवानों के द्वारा बथनाहा थानाध्यक्ष राजवीर कुमार साहू के साथ मिलकर सूचना पर एक बस से 16,500 ट्रामाडोल हाइड्रोक्लोराइड टेबलेट व एक बैग में रखा 47 लाख 49 हजार 500 भारतीय मुद्रा बरामद हुआ है। यह कार्रवाई शाम बथनाहा-बीरपुर चौक के समीप की गई है।

जानकारी के अनुसार अशोक विहार यात्री बस पूर्णिया से बीरपुर जा रही थी। इसी दौरान गुप्त सूचना पर एसएसबी एवं पुलिस की टीम नाकेबंदी कर बस की जांच की। हालांकि, इस दौरान आरोपित पकड़ में नहीं आया। इधर तीन आतंकी के बिहार में प्रवेश की सूचना पर जहां एसएसबी एवं पुलिस हाई अलर्ट पर है। वहीं, तस्कर रुपया को छुपाकर नेपाल भेजने की फिराक में था। हालांकि, पुलिस एवं एसएसबी ने बड़ी कार्रवाई करते हुए रुपया एवं नशीली दवा को बरामद कर लिया है।

पाकिस्तानी मंत्री बोले- भारत पानी को हथियार बना रहा

जानबूझकर पानी छोड़ा, जिससे बाढ़ आई, अब तक 750 से ज्यादा की मौत

इस्लामाबाद, 29 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान सरकार के मंत्री अहसान इकबाल ने आरोप लगाया कि भारत पानी को हथियार की तरह इस्तेमाल कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारत ने अपने बांधों से जानबूझकर पानी छोड़ा, जिससे पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में भयंकर बाढ़ आ गई।

इकबाल ने बुधवार को एक टीवी चैनल से कहा- भारत ने रावी, सतलुज और चिनाब नदियों में अचानक पानी छोड़ा। इससे बाढ़ आई, जिसकी वजह से गुजरांवाला डिवीजन में 7 लोगों की मौत हो गई और हजारों एकड़ जमीन डूब गई।

अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान में इस साल से जून से अब तक बाढ़ और लैंडस्लाइड की वजह से 197 बच्चों समेत करीब 776 लोगों की मौत हो चुकी है और 993 घायल हुए हैं। जबकि 4000 से ज्यादा घर डैमेज हुए हैं।

मंत्री बोले- भारत अचानक बांध से पानी छोड़ देता है

इकबाल ने एक अन्य वीडियो में कहा कि भारत की तरफ से पानी छोड़ना सबसे खराब हमला है। भारत नदियों में पानी रोकता है और फिर अचानक बांध से पानी छोड़ देता है, जिससे लोगों की जान और माल खतरे में पड़ जाते हैं। पानी जैसे मुद्दे को राजनीति से अलग रखना चाहिए।

उन्होंने भारत पर यह भी आरोप लगाया कि उसने समय पर पानी छोड़ने की जानकारी पाकिस्तान को नहीं दी, जो बहुत गलत है।

पाकिस्तान की नेशनल डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (एनडीएमए) ने सिंध प्रांत में अलर्ट जारी किया है कि सरकार वहां से सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के किनारे बसे गांवों और निचले इलाकों से लोगों को सुरक्षित ठिकानों पर ले जाए।

वहीं, पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने अधिकारियों को राहत और बचाव कार्य तेज करने के आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा कि नुकसान का हिसाब रखा जाए और लोगों को बाढ़ वाले इलाकों में जाने से रोका जाए।

भारत ने जम्मू-कश्मीर की तवी नदी में बाढ़ के हालात को देखते हुए 4 दिन पहले ही मानवीय आधार पर पाकिस्तान को इसकी जानकारी दी थी। भारतीय विदेश मंत्रालय ने बताया था कि यह कदम पूरी तरह से मानवीय सहायता के मकसद से उठाया गया है।

इस्लामाबाद में भारतीय हाई कमीशन ने रविवार को पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय को बाढ़ की जानकारी दी थी। यह पहला मौका था जब इस तरह की जानकारी हाई कमीशन के जरिए साझा की गई थी।

आमतौर पर, सिंधु जल संधि के तहत बाढ़ से जुड़ी चेतावनी दोनों देशों के वाटर कमिश्नर के बीच शेयर की जाती थी। इसी साल मई में भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद से दोनों देशों में बातचीत लगभग बंद है।

रूस ने यूक्रेन पर 600 ड्रोन दागे, 4 बच्चों समेत 21 लोगों की मौत

मास्को, 29 अगस्त (एजेंसियां)। रूस ने गुरुवार को यूक्रेन पर 598 ड्रोन और 31 मिसाइलों से हमला किया। इस हमले में 4 बच्चों सहित 21 लोगों की मौत हो गई। इसके अलावा 45 लोग घायल हुए हैं। यह हमला अलास्का में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की मुलाकात के सिर्फ 13 दिन बाद हुआ।

यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा, 'रूस शांति की बजाय मिसाइलें चुन रहा है।' रूसी मिसाइल के छर्रों से ब्रिटिश काउंसिल का कार्यालय क्षतिग्रस्त हुआ है। यह पहली बार है जब ब्रिटिश सरकार की संपत्ति रूसी हमले की चपेट में आई है।

यूरोपीयन यूनियन मिशन की इमारतों को नुकसान पहुंचा। ब्रिटेन और यूरोपीय संघ ने रूस को चेतावनी दी है, जबकि व्हाइट हाउस ने बातचीत जारी रखने की बात कही।

हमलों में कीव कार्यालयों को नुकसान पहुंचने के बाद ब्रिटेन और यूरोपीय संघ ने रूसी दूतों को तलब किया है।

ट्रम्प सरकार की शिकागो में सेना तैनात करने की धमकी

कहा- दिल्ली से 15 गुना ज्यादा मर्डर हुए, कड़े कदम उठाना जरूरी

वॉशिंगटन, 29 अगस्त (एजेंसियां)। ट्रम्प प्रशासन ने वॉशिंगटन डीसी और लॉस एंजिलिस में नेशनल गार्ड तैनात करने के बाद अब शिकागो में भी ऐसा करने की धमकी दी है।

व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने गुरुवार को एक प्रेस ब्रीफिंग में कहा कि शिकागो में हिंसा की स्थिति बहुत गंभीर है। उन्होंने कहा कि शिकागो में हत्या की दर नई दिल्ली की तुलना में 15 गुना ज्यादा है। शहर की बेहतरी के लिए कड़े कदम उठाना जरूरी है।

शिकागो के मेयर ब्रैंडन जॉनसन ने शहर में नेशनल गार्ड के तैनाती की खबरों पर कड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति अपने राजनीतिक मकसद को पूरा करने के लिए ऐसे कदम उठा रहे हैं।

लेविट ने यह आरोप भी लगाया कि डेमोक्रेट शासित राज्यों की नीतियां अपराध को बढ़ावा देती हैं, जबकि राष्ट्रपति ट्रम्प अपराध को रोकने के लिए सख्त कदम चाहते हैं।

लेविट ने शिकागो के हालिया अपराधिक रिकॉर्ड भी साझा किए। इसके मुताबिक 2025 में अब तक शिकागो में कुल 147,899 केस दर्ज किए गए हैं और इनमें से केवल 16 फीसदी मामलों में गिरफ्तारी हुई है।

ट्रम्प के राष्ट्रपति पद संभालने के बाद से इलिनॉय में 1,400 प्रवासियों की गिरफ्तारी हुई है। इसमें से 1000 शिकागो से हैं।

लेविट ने यह भी कहा कि शिकागो में लॉस एंजिलिस और न्यूयॉर्क की तुलना में अधिक अवैध हथियार बरामद किए गए हैं और बाइक चोरी के मामले 2021 की तुलना में दोगुना बढ़ गए हैं।

शिकागो, इलिनॉय राज्य का सबसे बड़ा शहर है। लेविट ने कहा कि इलिनॉय के गवर्नर जेबी प्रित्जकर ने अपराध से निपटने के लिए कड़े कदम नहीं उठाए हैं।

राष्ट्रपति ट्रम्प ने वॉशिंगटन डीसी में 11 अगस्त 2025 को नेशनल गार्ड की तैनाती की थी। इसके तहत उन्होंने 800 सैनिकों वहां भेजा। इससे पहले जून में ट्रम्प सरकार ने लॉस एंजिलिस में लगभग 4,000 नेशनल गार्ड सैनिक और 700 मैरीन्स को तैनात किया था।

ट्रम्प ने वॉशिंगटन डीसी में नेशनल गार्ड तैनात करने का कारण वहां बढ़ती हिंसा को जिम्मेदार बताया था। उन्होंने कहा था कि राजधानी पर हिंसक गिरोहों और अपराधियों का प्रभाव बढ़ रहा है और नेशनल गार्ड की मदद से कानून-व्यवस्था बहाल की जा सकेगी। ट्रम्प 52 साल पुराने कानून के तहत शहरों में नेशनल गार्ड की तैनाती कर रहे हैं।

ट्रंप अच्छी स्थिति में, फिर भी जरूरत पड़ी तो मैं राष्ट्रपति बनने को तैयार

उपराष्ट्रपति वेंस का अहम बयान

वॉशिंगटन, 29 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सेहत को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि अगर कोई 'खौफनाक हादसा' हो जाए, तो वह अमेरिका के राष्ट्रपति की जिम्मेदारी संभालने के लिए पूरी तरह तरह तैयार हैं। हालांकि, उन्होंने भरोसा जताया कि ट्रंप व्हाइट हाउस में अपना चार साल का कार्यकाल पूरा करने के लिए अच्छी हालत में है।

यूएसए टुडे को दिए एक इंटरव्यू में वेंस ने याद किया कि जनवरी में जब वह पहली बार ओवल कार्यालय में दाखिल हुए तो वह वहां की भव्यता और शानदार इतिहास से बहुत प्रभावित हुए थे। 79 साल के ट्रंप की सेहत को लेकर उठ रहे सवालों पर वेंस ने कहा, राष्ट्रपति की सेहत बहुत अच्छी है, उनमें जबरदस्त ऊर्जा है। रिपब्लिकन नेता वेंस ने कहा, मुझे पूरा भरोसा है कि अमेरिका के राष्ट्रपति की सेहत अच्छी है। वह अपना बाकी कार्यकाल पूरा करेंगे और अमेरिकी जनता के लिए बेहतरीन काम करेंगे।

ट्रंप की सेहत को चर्चा इसलिए तेज हो गई, क्योंकि हाल ही में दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ली जे म्युंग के साथ मुलाकात के दौरान ट्रंप के हाथ पर एक बड़ा नीला निशान देखा गया था। ट्रंप ने जनवरी 2025 में 78 साल और सात महीने की उम्र में राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी, जिससे वह अमेरिका के इतिहास में शपथ लेने वाले सबसे बुजुर्ग राष्ट्रपति बन गए। इससे पहले जो बाइडन ने 2021 में 78 साल और दो महीने की उम्र में पद संभाला था।

वेंस अमेरिका के इतिहास में तीसरे सबसे युवा उपराष्ट्रपति हैं। उन्होंने कहा कि अगर किसी खौफनाक हादसे में ट्रंप को कुछ हो जाए, तो वह जिम्मेदारी निभाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने यूएसए से कहा, अगर, भगवान न करे, कोई बड़ी दुर्घटना होती है, तो मुझे नहीं लगता कि इससे बेहतर कोई प्रशिक्षण हो सकता है जो मैंने पिछले 200 दिनों में सीखा है। इस महीने की शुरुआत में ट्रंप ने वेंस को 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन आंदोलन का सबसे संभावित उत्तराधिकारी' कहा था, लेकिन वेंस ने 2028 में राष्ट्रपति चुनाव लड़ने की अटकलों को अभी तक नजरअंदाज ही किया है।

पोलैंड में एयरशो के दौरान अमेरिकी एफ-16 फाइटर जेट धड़ाम से जमीन पर गिरा

बना आग का गोला, पायलट की मौत

वारसॉ, 29 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिका के लड़ाकू विमानों के क्रैश होने का सिलसिला जारी है। इस बार पोलैंड में होने वाले रादोम एयरशो से पहले बहुत बड़ा हादसा हुआ है। पोलैंड की वायुसेना का एक एफ-16 फाइटर जेट रिहर्सल के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें पायलट की मौत हो गई। सेना की ओर से जारी बयान में कहा गया कि यह हादसा उस समय हुआ, जब फाइटर जेट एक मुश्किल हवाई करतब का अभ्यास कर रहा था।

पायलट नाटो की एलिट टाइगर डेमो एयर यूनिट से जुड़ा था और हादसे के दौरान उसे विमान से बाहर निकलने का मौका भी नहीं मिल पाया। पोलैंड की मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि विमान ने बैरल रोल जैसी एरोबेटिक मूवमेंट की कोशिश की थी, लेकिन अचानक फाइटर जेट बेकाबू हो गया और उसका नियंत्रण जेट से हट गया।

पूर्व पीएम और पूर्व प्रथम महिला के खिलाफ चलेगा मुकदमा

मार्शल लॉ का समर्थन और भ्रष्टाचार के आरोप

सियोल, 29 अगस्त (एजेंसियां)। दक्षिण कोरिया में मॉर्शल लॉ लगाने वाले पूर्व राष्ट्रपति यून सुक येओल के बाद अब पूर्व प्रधानमंत्री हान डक-सू और पूर्व प्रथम महिला किम कियोन-ही को भी जेल जाना होगा। अभियोजकों ने उन पर मार्शल लॉ का समर्थन करने और भ्रष्टाचार से संबंधित मामलों में अभियोग लगाया है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि आरोपों की घोषणा से पहले कई सप्ताह तक हान विशेष अभियोजकों की एक टीम की जांच के दायरे में थे।

किम और यून दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया है और वे अभी भी हिरासत में हैं। वहीं, पूर्व राष्ट्रपति पर पहले से ही सैन्य शासन लागू करने के प्रयास के तहत विद्रोह सहित कई आरोपों में मुकदमा चल रहा है।

पूर्व प्रधानमंत्री हान डक-सू पर आरोप है कि उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति यून सुक-योल के पिछले वर्ष लागू किए गए अल्पकालिक मार्शल लॉ को समर्थन दिया और उसे संवैधानिक रूप से वैध ठहराने की सक्रिय कोशिश की। उन पर झूठी गवाही और सरकारी दस्तावेजों में हेरफेर जैसे मामले भी दर्ज किए गए हैं।

सहायक विशेष वकील पार्क जी-यंग ने कहा कि उस समय पद पर सबसे वरिष्ठ पद पर होने के नाते हान के पास यून की घोषणा को रोकने का अधिकार था, लेकिन उन्होंने इसे आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाई। अभियोजकों ने आरोप लगाया है कि उन्होंने कैबिनेट काउंसिल की बैठक में यून के फरमान को पारित करवाने का प्रयास किया था ताकि उसे वैधानिक रूप मिल सके। हालांकि, हान का कहना है कि उन्होंने राष्ट्रपति यून को इस योजना का विरोध जताया था।

वहीं, पूर्व प्रथम महिला किम कियोन-ही को रिश्वतखोरी और स्टॉक मैनिपुलेशन से जुड़े मामलों में अभियुक्त बनाया गया है। उन पर विवादित यूनिफिकेशन चर्च और अन्य स्रोतों से महंगे उपहार लेने के भी आरोप हैं। हालांकि, उनके वकीलों ने इन आरोपों को आधारहीन अटकलें बताया है।

गौरतलब है कि पूर्व राष्ट्रपति यून सुक-योल पहले से ही हिरासत में हैं और उन पर विद्रोह तथा मार्शल लॉ थोपने की कोशिश जैसे गंभीर आरोपों में मुकदमा चल रहा है। उन्हें इसी वर्ष अप्रैल में महाभियोग का सामना करना पड़ा था। वहीं, मार्शल लॉ संकट के बाद हान डक-सू ने दो बार कार्यवाहक राष्ट्रपति का पद संभाला था। इसके बाद उन्होंने पीपुल पावर पार्टी से राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी हासिल करने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे।

यून सुक येओल ने राष्ट्रपति रहते हुए पिछले साल तीन दिसंबर को अपने विरोधियों को दबाने के लिए मार्शल लॉ लागू किया था। हालांकि यह आदेश सिर्फ कुछ घंटे चला, क्योंकि कुछ सांसदों ने नेशनल असेंबली में भारी हथियारों से लैस सैनिकों की घेराबंदी तोड़ दी और कानून को रद्द करने के लिए मतदान किया।

पीएम पैतोंगतार्न शिनावात्रा को अदालत ने किया बर्खास्त

कंबोडियाई नेता से बात करना पड़ा भारी

बैंकॉक, 29 अगस्त (एजेंसियां)। कंबोडियाई नेता के साथ फोन पर समझौता करने के आरोप में थाईलैंड की अदालत ने प्रधानमंत्री पैतोंगतार्न शिनावात्रा को पद से बर्खास्त कर दिया गया है। शिनावात्रा पर नैतिकता संबंधी संवैधानिक नियमों के उल्लंघन का आरोप है। गौरतलब है कि इन आरोपों में थाईलैंड की संवैधानिक अदालत ने जुलाई में पद से निलंबित कर दिया था और उनकी जगह उप-प्रधानमंत्री फुमथम वेचायाचाई को पीएम पद की जिम्मेदारी सौंपी थी।

अब संवैधानिक अदालत ने शिनावात्रा को पद से बर्खास्त कर दिया है, जिसका मतलब है कि शिनावात्रा का कार्यकाल अब पूरी तरह से समाप्त हो गया है। नए प्रधानमंत्री के नाम को मंजूरी मिलने तक कार्यवाहक पीएम फुमथम प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी संभालेंगे। कार्यवाहक मंत्रिमंडल संसद को भंग करके नए चुनाव भी करवा सकती है।

रूस ने घातक हमले में यूक्रेनी नौसेना के सबसे बड़े युद्धपोत को डुबोया

पहली बार समुद्री ड्रोन का इस्तेमाल, युद्ध में नया मोर्चा खुला

कीव/मॉस्को, 29 अगस्त (एजेंसियां)। रूस ने पहली बार समुद्री-ड्रोन का इस्तेमाल करते हुए यूक्रेन नौसेना के सबसे बड़े युद्धपोत को डुबो दिया है। रूस ने दावा किया है कि उसने पहली बार सी-ड्रोन का इस्तेमाल कर यूक्रेनी नौसेना के सबसे बड़े जहाज सिम्फरोपोल को डुबो दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक, यूक्रेन का ये जहाज लागुना-क्लास का मध्यम आकार का रिकॉन्नेसांस (जासूसी) जहाज था, जिसे रेडियो, इलेक्ट्रॉनिक, रडार और ऑप्टिकल सर्विलांस के लिए डिजाइन किया गया था।

रूसी रक्षा मंत्रालय के रिपोर्ट में कहा गया है, कि यह हमला डेन्यूब नदी के डेल्टा क्षेत्र में किया गया था और इसमें पहली बार समुद्री ड्रोन का इस्तेमाल किया गया है और ये हमला पूरी तरह से सटीक रहा है। ये क्षेत्र जो आंशिक रूप से यूक्रेन के ओडेसा क्षेत्र में आता है।

रूसी मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है, कि यह पहला मौका है जब सी-ड्रोन का इस्तेमाल कर यूक्रेन की नौसेना के किसी जहाज को सफलतापूर्वक निशाना बनाया गया। ये हमला एक केस स्टडी इसलिए बन गया है, क्योंकि अभी तक हवाई युद्ध में ड्रोन इस्तेमाल किया जाता रहा है, लेकिन समुद्री ड्रोन ने दनिया के महंगे महंगे जहाजों को खतरे में डाल दिया है।

यूक्रेनी अधिकारियों ने भी पुष्टि की है, कि रूस ने उसके जहाज पर घातक हमला किया है। कीव इंडिपेंडेंट ने यूक्रेन नौसेना प्रवक्ता के हवाले से लिखा है, कि हमले में एक क्रू मेंबर की मौत हो गई और कई अन्य घायल हुए हैं। यूक्रेनी नौसेना के प्रवक्ता ने कहा है कि हमले के बाद की स्थिति को संभालने के लिए कोशिशें की जा रही हैं और ज्यादातर चालक दल के सदस्य सुरक्षित हैं, लेकिन कई लापता नाविकों की तलाश अभी भी चल रही है। यूक्रेनी नौसेना का जहाज साल 2019 में लॉन्च हुआ था और दो साल बाद यूक्रेनी नौसेना में शामिल किया गया था।

करेन जातीय विद्रोही संगठन को घोषित किया गया आतंकी संगठन

चुनाव से पहले सेना का बड़ा कदम

नैपिडो, 29 अगस्त (एजेंसियां)। लंबे समय से गृहयुद्ध का दंश झेल रहे म्यांमार में सेना ने दिसंबर में चुनाव कराने का एलान किया है, लेकिन उससे भी पहले वहां की सैन्य सरकार ने प्रमुख जातीय विद्रोही संगठन करेन नेशनल यूनियन (केएनयू) को लेकर बड़ा कदम उठाया है। सेना ने केएनयू को आतंकी संगठन घोषित कर दिया। सैन्य सरकार के इस फैसले के बाद इस संगठन से जुड़े किसी भी व्यक्ति या उससे संपर्क रखने को अब गैरकानूनी माना जाएगा।

म्यांमार की सरकारी मीडिया ने सैन्य सरकार के इस एलान के बारे में बताया। उसने कहा कि केएनयू ने सामान्य नागरिक सुरक्षा, जान-माल और बुनियादी ढांचे को गंभीर नुकसान पहुंचाया है। जिसके कारण उसे आतंकी संगठन घोषित किया गया। बता दें कि यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब सेना 28 दिसंबर से राष्ट्रीय चुनाव कराने की तैयारी कर रही है। आलोचकों का कहना है कि ये चुनाव सिर्फ तख्तापलट को वैध ठहराने का तरीका हैं, खासकर तब जब सेना ने आंग सान सू ची की पार्टी नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी (एनएलडी) को भंग कर दिया है। वहीं, दूसरी ओर केएनयू के प्रवक्ता प्रवक्ता पादोह साव ताव नी ने सेना के इस एलान को खारिज कर दिया है। उन्होंने शुक्रवार को कहा कि समूह को इस घोषणा की कोई परवाह नहीं है। उन्होंने कहा कि सेना खुद अंतरराष्ट्रीय अदालतों में अपराधों के लिए दोषी ठहराई जा चुकी है। ऐसे में यह साबित करने की भी जरूरत नहीं है कि असली आतंकवादी और अंतर्राष्ट्रीय अपराधी कौन हैं, और गैरकानूनी संगठन कौन हैं। बता दें कि केएनयू ने 28 दिसंबर से शुरू होने वाले राष्ट्रीय चुनावों को बाधित करने की कसम खाई है। संगठन पहले ही चुनाव का बहिष्कार और विफल करने की चेतावनी दे चुका है, लेकिन अब इस नए आदेश से शांतिपूर्ण अभियान भी अपराध की श्रेणी में आ जाएंगे।

इजरायली सेना ने गाजा के सबसे बड़े शहर को युद्ध क्षेत्र घोषित किया

मानवीय मदद देने पर भी लगाई रोक

तेल अवीव, 29 अगस्त (एजेंसियां)। इजरायली सेना ने गाजा के सबसे बड़े शहर गाजा सिटी को युद्ध क्षेत्र में बदल दिया है और साथ ही गाजा सिटी में मानवीय मदद के वितरण पर भी रोक लगा दी है।

इससे गाजा शहर में रहने वाले हजारों लोगों की परेशानी और बढ़ेगी, जो पहले ही भुखमरी जैसे हालात से जूझ रहे हैं।

इजरायली सेना ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में लिखा कि आज सुबह 10 बजे से गाजा सिटी में सैन्य गतिविधियों पर स्थानीय सामरिक रोक लागू नहीं रहेगी। इस क्षेत्र को खतरनाक युद्ध क्षेत्र घोषित किया गया है।

क्या गाजा सिटी पर कब्जे की तैयारी कर रहा इजरायल?

इजरायली सेना का दावा है कि हाल के हफ्तों में गाजा में मानवीय सहायता के प्रवेश और वितरण को सुगम बनाने के लिए गाजा पट्टी के कुछ हिस्सों में इस तरह की रोक लगाई गई है। इजरायली सेना आईडीएफ ने कहा कि गाजा शहर को छोड़कर, बाकी पूरे क्षेत्र में स्थानीय सामरिक रोक लागू रहेगी।

आईडीएफ ने कहा 'वे इजरायली नागरिकों की रक्षा के लिए गाजा में आतंकवादी समूहों के खिलाफ आक्रामक अभियान चलाएंगे'। माना जा रहा है कि इजरायली सेना गाजा शहर पर कब्जा करने की तैयारी कर रही है, जहां गाजा की अनुमानित 10 लाख की आबादी में से आधी आबादी शरण लिए हुए है।

गाजा में भुखमरी की स्थिति, लेकिन इजरायल ने इनकार किया

एक वैश्विक भूख निगरानीकर्ता ने शुक्रवार को कहा कि गाजा शहर और उसके आसपास के इलाके अब आधिकारिक तौर पर अकाल से जूझ रहे हैं। यह आगे और भी फैल सकता है।

एकीकृत खाद्य सुरक्षा चरण वर्गीकरण प्रणाली के अनुसार, 5,14,000 लोग अकाल की चपेट में हैं। सितंबर के अंत तक यह संख्या बढ़कर 6,41,000 लोगों तक पहुंच सकती है।

हालांकि इजरायल ने इस रिपोर्ट को खारिज कर दिया। उसने कहा कि यह निष्कर्ष गलत और पक्षपातपूर्ण हैं।

इजरायल का कहना है कि सर्वेक्षण में सिर्फ अधूरी जानकारी ली गई है, जो ज्यादातर हमास से मिली थी, और इसमें यह नहीं बताया गया है कि हाल ही में गाजा में खाद्यान्न भी पहुंचा है।

पाकिस्तान के हवाई हमलों से अफगानिस्तान आगबबूला

भड़के तालिबान ने राजदूत को किया तलब, कहा- भुगतने होंगे अंजाम

काबुल/इस्लामाबाद, 29 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच के रिश्ते काफी खराब होते नजर आ रहे हैं। ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक पाकिस्तानी एयरफोर्स ने अफगानिस्तान के अंदर घुसकर हवाई हमले किए हैं। जिनमें तीन आम लोगों की मौत हो गई है, वहीं सात लोग घायल हो गये हैं। पाकिस्तान एयरफोर्स ने अफगानिस्तान के नंगरहार और खोस्त प्रांत में हवाई हमले किए हैं। जिसके बाद तालिबान सरकार ने काबुल में पाकिस्तानी राजदूत को तलब कर अल्टीमेटम दिया है। वहीं दोनों देशों के सीमा पर भी तनाव गहरा गया है।

अफगानिस्तान विदेश मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि पाकिस्तान ने हवाई सीमा का उल्लंघन करते हुए सीमा से लगे इलाकों में बमबारी की है और अफगानिस्तान की संप्रभुता का खुला उल्लंघन किया है। तालिबान ने इसे उकसावे वाली कार्रवाई बताया है। अफगान विदेश मंत्रालय ने सख्त विरोध जताते हुए चेतावनी दी है कि अफगानिस्तान की सीमा और जमीन की रक्षा करना तालिबान के लिए रेड लाइन है और ऐसे गैर जिम्मेदार हरकतों के पाकिस्तान को नतीजे भुगतने होंगे। नंगरहार के स्थानीय अधिकारियों ने बताया है कि बुधवार रात दो ड्रोन हमलों में शिनवार जिले के एक घर को निशाना बनाया गया। प्रांत के उप-राज्यपाल मौलवी अजीज़ुल्लाह मुस्तफा ने कहा है कि अफगानिस्तान शांति, स्थिरता और पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध रखना चाहता है, लेकिन पाकिस्तान ने जो किया है, उससे पूरे क्षेत्र की सुरक्षा प्रभावित होगी और अस्थिरता बढ़ेगी। वहीं हवाई हमलों के बाद पाकिस्तान की तरफ से अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गई है। ये हवाई हमले उस वक्त किए गये हैं जब पहले से ही दोनों देशों के संबंध खराब रहे हैं और चीन, मध्यस्थता करते हुए दोनों देशों के बीच तनाव को कम करने की कोशिश कर रहा है।

पाकिस्तान, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान यानि टीटीपी पर पाकिस्तान में आतंकी हमलों के लिए जिम्मेदार मानता है और उसका कहना है की टीटीपी के आतंकी, अफगानिस्तान में शरण लेते हैं। जबकि, तालिबान सबूत देने के लिए कहता है और कहता है कि ये पाकिस्तान की अंदरूनी समस्या है और इससे अफगानिस्तान का कोई लेनादेना नहीं है। पाकिस्तान पहले भी अफगानिस्तान में हवाई हमले करता रहा है, जिसे तालिबान, अफगानिस्तान की संप्रभुता का उल्लंघन बताता है।

स्वतंत्र वार्ता

शनिवार, 30 अगस्त- 2025

टैरिफ के बाद रिश्तों में खटास

अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने भी एक आम नागरिक की तरह उम्मीद पाल रखा है कि हो न हो एक दिन भारत और अमेरिका के रिश्ते में फिर से मिठास आएगी और फिर प्रगति का पहिया तेजी से घूमने लगेगा। देखा जाए तो मौजूदा वक्त की सबसे बड़ी जरूरत भी यही मानी जा रही है। अच्छी बात यह है कि अमेरिका के एकतरफा टैरिफ और कुछ तीखे बयानों के बावजूद भारत ने बातचीत का रास्ता बंद नहीं किया है। हो सकता है जल्द ही वॉशिंगटन और नई दिल्ली, एक साथ मिलकर इस मसले को सुलझा लें। भारत पर जिस तरह से ट्रंप ने 50 फीसद का टैरिफ का बोझ लादा है उसे लेकर उनके देश में ही विरोध के स्वर उठने लगे हैं। वहां का एक धड़ा ऐसा भी है जो कूटनीतिक सीमाओं की चिंता की परवाह न करते हुए अनर्गल बयानबाजी कर रहा है। जिसकी वजह से दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ा है। वहीं, दूसरे धड़े का मानना है कि रूस से तेल खरीदने के लिए केवल भारत को जिस तरह से निशाना बनाया जा रहा है वह कदापि सही नहीं है। ऐसे लोगों का तर्क है कि रूस से तेल का सबसे बड़ा खरीदार तो चीन है। आखिर ट्रंप उस पर भारी-भरकम टैरिफ से परहेज क्यों कर रहे हैं। बहरहाल, ऐसे माहौल में जरूरी है कि दोनों देशों के बीच शीर्ष स्तर पर संवाद जारी रहे। अच्छी बात यह है कि अमेरिकी वित्तमंत्री बेसेंट ने कहा है कि दोनों पक्ष मौजूदा हालात को लेकर चिंतित हैं और मसले को सुलझाने में ज्यादा रुचि रखते हैं। बता दें कि भारत-अमेरिका का रिश्ता केवल व्यापार तक सीमित नहीं है। हाल के बरसों में दोनों ने सुरक्षा, तकनीक, ऊर्जा समेत दूसरे क्षेत्रों में भी सहयोग के लिए हाथ बढ़ाया है। चीनी मनमानी पर नियंत्रण के लिए अमेरिका को भारतीय सहयोग की जरूरत है। इसी मकसद से क्वॉड का गठन किया गया था, जिसे अमेरिकी सरकार ने तवज्जो भी दी थी। लेकिन, ट्रंप की टैरिफ पॉलिसी की वजह से क्वॉड के भविष्य पर ही सवाल उठने लगे हैं। वहीं, वॉशिंगटन में यह भी चिंता है कि पिछले दो दशकों में भारत-अमेरिका रिश्तों में जो प्रगति हुई थी, वह कुछ दिनों में बेकार हो गई। आखिर कौन नहीं जानता कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और अमेरिका सबसे पुराना। भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और अमेरिका सबसे अमीर। दोनों देशों के बीच टकराव बढ़ता है, तो असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा। अमेरिका की जिद है कि भारत अगर रूस से खरीदारी बंद कर देता है, तो इससे ग्लोबल ऑयल सप्लाई बाधित होगी और तेल की कीमतें बढ़ सकती हैं। लेकिन यूएस इस पहलू को लगातार नजरअंदाज कर रहा है। दोनों देशों के बीच पिछले एक दशक में द्विपक्षीय व्यापार लगभग दोगुना हो गया है और इसे 2030 तक 500 बिलियन डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। लेकिन हाल ही में आए गतिरोध ने इस तरह की संभावनाओं पर पानी फेर दिया है। इसके लिए दोनों ही देशों को अडियल रुख त्याग कर बातचीत की टेबल पर आना होगा। आखिरकार एक न एक दिन अमेरिका को भारतीय नजरिया समझ में आएगा ही, लेकिन कहीं ऐसा न हो की तब तक बहुत देर हो जाए।

मोदी का जापान मिशन

आरके जैन

जब वैश्विक आर्थिक और भू-राजनीतिक मंच पर तूफान मचा हो, और अमेरिका के 50% टैरिफ भारत के व्यापारिक ढांचे को हिलाने की कोशिश कर रहे हों, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 29 अगस्त से शुरू होने वाला जापान दौरा एक दूरदर्शी और निर्णायक कदम के रूप में सामने आता है। यह यात्रा केवल एक कूटनीतिक औपचारिकता नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक रणनीति को नया आयाम देने का एक सशक्त प्रयास है। अमेरिकी दबाव के बीच जापान के साथ गहरी साझेदारी न केवल भारत को आर्थिक स्थिरता प्रदान कर सकती है, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसकी रणनीतिक स्थिति को अभेद्य बना सकती है।

मोदी का जापान के साथ रिश्ता 2007 में तब शुरू हुआ, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में टोक्यो और क्योटो की यात्रा पर गए और जापानी कंपनियों के साथ निवेश के अवसरों पर चर्चा की। इस मुलाकात ने जापानी उद्योगों और भारतीय बाजार के बीच एक मजबूत सेतु बनाया। 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद, उनकी शिंजो आबे के साथ पहली भेंट ने भारत-जापान संबंधों को विशेष रणनीतिक और वैश्विक भागीदारी का दर्जा दिलाया। 2022 में आबे की हत्या के बाद मोदी ने उन्हें प्रिय मित्र कहकर श्रद्धांजलि दी, जो उनके गहरे व्यक्तिगत और पेशेवर बंधन को उजागर करता है। यह बंधन आज भी भारत-जापान संबंधों की रीढ़ बना हुआ है, खासकर ऐसे समय में जब अमेरिकी टैरिफ भारत को नई आर्थिक रणनीतियों की ओर प्रेरित कर रहे हैं।

मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना भारत-जापान सहयोग की चमकती मिसाल है। 2017 में शिंजो आबे के साथ इसकी आधारशिला रखी गई, जिसमें जापान की विश्व-प्रसिद्ध शिंकानसेन तकनीक और 68 बिलियन डॉलर का भारी-भरकम निवेश भारत के बुनियादी ढांचे को क्रांतिकारी रूप देने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। हालाँकि समय और लागत की चुनौतियाँ बाधाएँ खड़ी करती हैं, जापान का तकनीकी समर्थन इस परियोजना को अभूतपूर्व गति प्रदान कर रहा है। इसके अलावा, जापान की 68 बिलियन डॉलर की प्रस्तावित निवेश योजना, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर और अन्य अत्याधुनिक तकनीकी क्षेत्रों पर केंद्रित है, भारत को आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकती है। अमेरिकी टैरिफ के कारण उत्पन्न व्यापारिक अस्थिरता के बीच यह निवेश भारत के लिए एक मजबूत जीवनरेखा बन सकता है।

2016 में वाराणसी और क्योटो को सिस्टर सिटी घोषित करना दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक जुड़ाव का एक प्रेरक कदम था, जिसने लोगों के दिलों को और करीब लाया। जापानी विशेषज्ञता से प्रेरित स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ और शहरी विकास मॉडल भारत के लिए एक आदर्श बन गए हैं। यह सहयोग न केवल आर्थिक प्रगति को गति देता है, बल्कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संतुलन स्थापित करने की क्षमता रखता है, बशर्ते निवेश का वितरण समान और समावेशी हो।

2018-19 में क्वाड (भारत, जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया) पहल ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता के खिलाफ एक मजबूत रणनीतिक संतुलन स्थापित किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आगामी जापान यात्रा, जिसमें 15वें भारत-जापान शिखर सम्मेलन और नए जापानी पीएम शिगेरु इशिबा के साथ निर्णायक वार्ता शामिल है, क्वाड, समुद्री सुरक्षा और रक्षा सहयोग जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी। जापान के साथ सूचना साझा करने और संयुक्त सैन्य अभ्यासों से भारत की रक्षा क्षमता अभेद्य होगी, जो अमेरिकी तनाव के बीच एक रणनीतिक बढ़त प्रदान करेगी। हालाँकि, इस साझेदारी के सामने चुनौतियाँ भी हैं। जापान-अमेरिका के बीच हालिया बातचीत, जिसमें एक जापानी दौरा रद्द हुआ, यह संकेत देती है कि जापान अमेरिकी दबाव में झुक सकता है, जो भारत के साथ उसकी प्रतिबद्धता को प्रभावित कर सकता है। साथ ही, जापानी निवेश को केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित रखने के बजाय ग्रामीण और पिछड़े इलाकों तक विस्तारित करना होगा, ताकि आर्थिक असमानता को दूर किया जा सके।

भारत को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि परियोजनाएँ समयबद्ध तरीके से पूरी हों, अन्यथा जापान का विश्वास डगमगा सकता है।

दहेज मानवता के लिए भयावह कुरीति

ममता कुशवाहा

भारतीय समाज आज भी अनेक सामाजिक बुराइयों से जूझ रहा है। उनमें से एक सबसे भयावह और अमानवीय कुरीति है- दहेज प्रथा। यह केवल एक आर्थिक लेन-देन का मामला नहीं बल्कि सामाजिक विकृति का ऐसा रूप है जिसने बेटियों के जीवन को असुरक्षा, हिंसा और अपमान की जंजीरों में जकड़ रखा है। आधुनिक और शिक्षित समाज कहे जाने के बावजूद, आए दिन दहेज से जुड़ी हत्या, आत्महत्या और शोषण की खबरें सामने आती रहती हैं। यह स्थिति इस बात का प्रमाण है कि विकास के तमाम दावों के बीच हमारी मानसिकता अभी भी पुरानी जड़ों से मुक्त नहीं हो पाई है। दहेज की परंपरा सदियों पुरानी है। प्राचीन काल में इसे कन्या को विवाह के समय विदाई उपहार के रूप में दिया जाता था। माता-पिता अपनी सामर्थ्य के अनुसार बेटी को गहने, कपड़े और आवश्यक सामग्री देते थे। उस समय यह बेटी के लिए सुरक्षा और सम्मान का प्रतीक माना जाता था। परंतु समय के साथ यह परंपरा लालच का रूप धारण कर गई और अब यह विवाह का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। आज दहेज की मांग अक्सर नकद राशि, गाड़ी, मकान, व्यवसायिक निवेश और आलीशान जीवनशैली तक पहुँच गई है। ग्रेटर नोएडा की निक्की भाटी हत्या जैसी घटनाएं दर्शाती हैं कि दहेज की मांग जब पूरी नहीं होती, तो उसका परिणाम प्रताड़ना, हिंसा और अंततः हत्या के रूप में सामने आता है। यह कोई अकेली घटना नहीं बल्कि देशभर में रोज़ घटने वाली हजारों कहानियों का प्रतिबिंब है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आँकड़े बताते हैं कि 2022 में दहेज हत्या के 6,450 मामले दर्ज हुए। यह आँकड़ा केवल दर्ज मामलों का है, जबकि वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक होने की आशंका रहती है क्योंकि ग्रामीण और छोटे कस्बों में ऐसे कई मामले पुलिस तक पहुँच ही नहीं पाते। 2020 में यह संख्या 6,996 थी और 2021 में लगभग 6,700। यह स्पष्ट करता है कि दहेज हत्या के मामले लगातार घट-बढ़ रहे हैं, परंतु समस्या जस की तस बनी हुई है। इन आँकड़ों का मतलब है कि हर दिन औसतन 17 से अधिक महिलाएँ दहेज की भेंट चढ़ रही हैं। यह स्थिति केवल परिवारों की त्रासदी नहीं बल्कि देश की सामूहिक विफलता है, जहाँ बेटी के जीवन का मूल्य अभी भी उसके मायके की हैसियत से आँका जाता है।

सामाजिक दबाव और मानसिकता

दहेज प्रथा केवल पति या उसके परिवार के लालच का परिणाम नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता से भी जुड़ी हुई है। विवाह को आज भी लेन-देन की प्रक्रिया मान लिया गया है। कई बार मायके वाले इस डर से बेटियों को चुप रहने को मजबूर कर देते हैं कि कहीं घर टूट न जाए, रिश्तेदार बदनाम न हो जाएँ या समाज उँगली न उठाए।निक्की भाटी और उसकी बहन का मामला इसका ज्वलंत उदाहरण है। 2016 में शादी के बाद से ही दोनों को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जा रहा था, लेकिन मायके का दबाव यह था कि बेटियाँ एक बार ससुराल चली गईं तो वहीं की होकर रह जाएँ। यही मानसिकता बेटियों को चुप्पी और सहनशीलता की ओर धकेलती है, जिसका अंत कई बार मौत में होता है।यह बात सोचने पर मजबूर करती है कि जिस समाज में तकनीकी प्रगति, आर्थिक विकास और शिक्षा की उपलब्धियां गर्व का विषय बनी हुई हैं, वहीं उसी समाज में दहेज के नाम पर क्रूरताएँ भी समानांतर रूप से बढ़ रही हैं। यह विरोधाभास बताता है कि केवल शिक्षा या आर्थिक प्रगति पर्याप्त नहीं है, जब तक मानसिकता में बदलाव न हो। शहरों से लेकर गाँवों तक, सम्पन्न परिवारों से लेकर गरीब घरों तक,हर जगह दहेज की मांग किसी न किसी रूप में देखी जाती है। फर्क केवल इतना है कि संपन्न वर्ग में यह मांग अधिक भव्य और बड़े पैमाने पर होती है जबकि गरीब वर्ग में यह उनकी सामर्थ्य से परे जाकर उन्हें कर्ज और बर्बादी की ओर धकेल देती है।

कानून और उसकी सीमाएँ

भारत में दहेज प्रथा को रोकने के लिए 1961 में दहेज निषेध अधिनियम बनाया गया और उसके बाद भारतीय दंड संहिता (अब भारतीय न्याय संहिता - बीएनएस) की धारा 80 के अंतर्गत दहेज हत्या के लिए न्यूनतम सात वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक का प्रावधान किया गया। बावजूद इसके, दहेज हत्या और प्रताड़ना के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे। इसके कई कारण हैं- न्याय मिलने की धीमी गति, मामलों में लंबित मुकदमे, पुलिस जांच में लापरवाही, चार्जशीट दाखिल करने में देरी और सामाजिक दबाव। पीड़ित परिवारों को कई बार अदालत के बाहर समझौते के लिए मजबूर किया जाता है। यही वजह है कि 2022 में जितने मामले दर्ज हुए, उनमें से मात्र 2% मामलों में ही दोषियों को सज़ा मिल सकी। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है, जो अपराधियों के हौसले को और बढ़ा देती है।दहेज की समस्या केवल कानूनी नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक ढांचे से भी जुड़ी हुई है। बेटियों को अक्सर बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि शादी ही उनका अंतिम लक्ष्य है और मायके से मिला दान-दहेज ही उनका भविष्य सुरक्षित करता है। यही सोच लड़कियों को आत्मनिर्भर बनने से रोकती है और उन्हें परिवार तथा समाज के दबाव के बीच सहनशीलता का बोझ उठाने को मजबूर करती है। माता-पिता का डर होता है कि अगर बेटी के ससुराल वालों की मांग पूरी न की तो बेटी की जिंदगी नरक बन जाएगी। इसी डर के कारण वे अपनी हैसियत से अधिक खर्च करने को मजबूर हो जाते हैं। कई बार यही बोझ उन्हें कर्ज़, गरीबी और सामाजिक अपमान तक पहुँचा देता है। दहेज की समस्या का मूल कारण मानसिकता है। जब तक बेटियों को परिवार की जिम्मेदारी न मानकर समान अधिकार वाली संतान के रूप में नहीं देखा जाएगा, तब तक दहेज जैसी कुरीतियाँ बनी रहेंगी। बेटों और बेटियों के बीच भेदभाव भी इसका बड़ा कारण है। जिस समाज में बेटियों को “पराया धन” कहा जाता है, वहां विवाह को एक लेन-देन मान लेना स्वाभाविक हो जाता है। जरूरत इस बात की है कि समाज इस सोच से बाहर निकले औरबेटियों को आत्मनिर्भर और अधिकारयुक्त नागरिक के रूप में स्वीकार करे। जब परिवार और समाज बेटियों की शिक्षा, करियर और स्वतंत्र पहचान को प्राथमिकता देंगे, तब ही दहेज की मांग स्वतः समाप्त हो पाएगी।

आर्थिक और सांस्कृतिक आयाम

दहेज प्रथा केवल सामाजिक मानसिकता का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे आर्थिक विषमता और सांस्कृतिक परंपराओं की गहरी जड़ें भी मौजूद हैं। जिन परिवारों के पास अधिक धन-संपत्ति होती है, वे ऊँचे और प्रतिष्ठित रिश्तों को पाने के लिए दहेज को साधन बना लेते हैं। उनके लिए दहेज प्रतिष्ठा का प्रतीक और सामाजिक दर्जा बढ़ाने का माध्यम बन जाता है। इसके विपरीत, गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार दहेज की मांग पूरी करने के लिए अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च करते हैं, कर्ज़ में डूब जाते हैं और कभी-कभी जीवनभर उस बोझ से उबर नहीं पाते। इस तरह यह प्रथा अमीरी और गरीबी के बीच की खाई को और गहरी करती है। दहेज की मानसिकता ने विवाह को पवित्र बंधन के बजाय व्यापार का रूप दे दिया है। वर पक्ष अक्सर बेटे की शिक्षा, नौकरी, पद और प्रतिष्ठा को 'मूल्य टैग' की तरह इस्तेमाल करता है और उसी हिसाब से दहेज की मांग तय की जाती है। यह सोच न केवल नारी की गरिमा को ठेस पहुँचाती है बल्कि पूरे समाज की नैतिकता और मानवीय संवेदना को भी कमजोर करती है। धीरे-धीरे यह कुरीति सामाजिक ताने-बाने को खोखला करती जा रही है, जहाँ रिश्ते प्रेम, विश्वास और समानता के आधार पर नहीं, बल्कि आर्थिक सौदे पर टिके दिखाई देते हैं। यही वह स्थिति है जो दहेज प्रथा को और भी घातक बना देती है।दहेज प्रथा और इससे जुड़ी हत्याओं को रोकने के लिए केवल कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यापक सामाजिक आंदोलन की आवश्यकता है।

डोनाल्ड ट्रंप का आर्थिक युद्ध

संजीव ठाकुर

यह बड़ी प्रसिद्ध कहावत है कि दुश्मन का दुश्मन अपना दोस्त और अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति पद की ताजपोशी के साथ-साथ डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अपनी विदेश नीति के तहत अंधाधुंध आयात टैरिफ लगाकर भारत रूस और चीन को नाराज कर लिया है। भारत पर आज से 50% टैरिफ लागू कर दिया गया है अब भारत अमेरिका के विकल्प के रूप में नया बाजार तलाश करने और रूस तथा चीन से गहरे गढ़ जोड़ बनाने में लगा हुआ है। (स्वतंत्रता के बाद से अविश्वसनीय चीन पर भारत ने अब भरोसा जताना शुरू किया है चीन के विदेश मंत्री के भारत में व्यापारिक के लिए यात्रा पर उनका स्वागत किया गया । भारत के प्रधानमंत्री बहुत जल्द चीन की यात्रा पर जाने वाले वाले हैं और चीन के राष्ट्रपति शी जिन पिंग खुद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत करने की योजना बना रहे हैं। ब्राज़ील पर भी अमेरिका ने 40 से 50% आयात शुल्क आरोपित कर दिया है ब्राजील ने अमेरिका से बात करने की बजाय भारत के राष्ट्रपति नरेंद्र मोदी से बात करना उचित समझा। ब्राज़ील भी अमेरिका से व्यापारिक मुद्दों पर काफी खफा नजर आ रहा है। इस तरह भारत रूस चीन और ब्राजील एक प्लेटफार्म पर खड़े नजर आ रहे हैं। निश्चित तौर पर एशिया और दक्षिण एशिया डोनाल्ड ट्रंप और अमेरिका की नीतियों के विरोध में आ चुका है।) भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था है अमेरिका से व्यापारिक संबंध खराब होने पर भारत को 25% तक नुकसान होने की संभावना है पर भारत के लिए यह एक बड़ा सबक प्रमाणित होगा कि किसी एक पश्चिमी देश पर निर्भर रहना भारत की विदेश नीति के लिए उपयुक्त नहीं होगा। फल स्वरुप उसे ओपन मार्केट पॉलिसी अपना कर सभी देशों से अपना व्यापार और व्यवसाय करने की योजना निर्मित करनी होगी तब जाकर ही भारत तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का सपना देख सकता है। दूसरी बार डोनाल्ड ट्रंप राष्ट्रपति बनने के बाद रूस यूक्रेन युद्ध के युद्ध को विराम तो नहीं दे पाए किंतु युद्ध की आग को और भड़का दिया है। उधर परमाणु संपन्न देश चीन नॉर्थ कोरिया और रूस की त्रिगुटीय जुगलबंदी ने अमेरिका सहित नाटो यूरोपीय देश और यूक्रेन की नींद उड़ा दी है। उल्लेखनीय की नॉर्थ कोरिया और साउथ कोरिया के आपस के कड़वे रिश्ते के बीच अमेरिका का साउथ कोरिया को लेकर काफी हस्तक्षेप है जिसे नॉर्थ कोरिया कई दशक से पसंद नहीं करता आया है ।संयुक्त राष्ट्र संघ और एमनेस्टी इंटरनेशनल की भूमिका निरर्थक हो चुकी है वैसे भी संयुक्त राष्ट्र संघ अमेरिका तथा यूरोपीय देशों की कठपुतली बन चुका है। क्या मानवीय संवेदनाओं की आशाएं निर्मूल साबित हो रही हैं। वैश्विक शांति और अमन की कल्पनाओं से परे वैश्विक युद्ध की आशंका में उत्तर कोरिया ने भी अपना मोर्चा खोल दिया है ताजा ताजा घटनाक्रम में रूस के विदेश मंत्री लावरोव उत्तर कोरिया के दौरे पर जाकर वहां के समकक्ष चोई सांन संग से उत्तर कोरिया के शहर पूर्वी वोंनसान मैं अत्यंत महत्वपूर्ण मीटिंग की है।रूसी विदेश मंत्री लावरोव ने उत्तरी कोरिया के तानाशाह नेता किम जोंग उन से भी मुलाकात कर रुस को यूक्रेन और अमेरिका के खिलाफ समर्थन देने की बात रखी जवाब में उत्तरी कोरिया के तानाशाह नेता किम जोंग उन ने रूस को अमेरिका यूरोप और यूक्रेन के खिलाफ निशर्त खुला समर्थन देने की घोषणा कर दी है। गौरतलब है कि उत्तरी कोरिया पिछले कई महीनो से मिसाइल का परीक्षण कर साउथ कोरिया अमेरिका तथा यूरोपीय देशों को सीधा-सीधा संदेश दिया है कि साउथ कोरिया और नॉर्थ कोरिया के संबंधों के बीच किसी देश के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उत्तर कोरिया की आधिकारिक न्यूज़ एजेंसी कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी के अनुसार दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया के बीच अब तनाव बढ़ने लगा है1 उधर उत्तर कोरिया के बढ़ते परमाणु कार्यक्रम के जवाब में अमेरिका दक्षिण कोरिया व जापान त्रिपक्षीय त्रिपक्षी संधियां और सैनिक अभ्यास का विस्तार तथा फिर से बहाली कर रहे हैं। तीनों देशों ने उत्तर कोरिया के रूस और चीन को समर्थन देने के और परमाणु परीक्षणों के खिलाफ दक्षिण कोरिया प्रायद्वीप के पास अमेरिकी परमाणु सक्षम बम वर्षको के साथ संयुक्त हवाई अभ्यास किया है। उल्लेखनीय है कि तीनों देशों के सैन्य प्रमुखों ने एक गंभीर बैठक कर उत्तर कोरिया से क्षेत्रीय सुरक्षा को खतरा पैदा करने वाली सभी गैर कानूनी गतिविधि बंद करने का आह्वान किया है वैसे भी उत्तर कोरिया अमेरिका के नेतृत्व में दक्षिण कोरिया और जापान के इस युद्ध अभ्यास को उत्तर कोरिया के खिलाफ होने वाले हमले का पूर्व अभ्यास मानता है। उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया पर बड़े हमले की चेतावनी भी दे डाली है। इन परिस्थितियों में विश्व में चल रहे रूस यूक्रेन युद्ध तथा इसराइल हमास लेबनान ईरान युद्ध के अलावा उत्तर कोरिया ने हमले की धमकी देकर एक नये युद्ध का मोर्चा खोल दिया है1 यह तो सर्व विदित है कि उत्तर कोरिया का तानाशाह किम जोंग-उन एक सनकी तानाशाह है और अमेरिका पर परमाणु युद्ध के हमले की गाहे-बगाहे धमकियां भी दिया करता है1 उत्तर कोरिया दक्षिण कोरिया की किसी भी हिमाकत पर उस पर हमला कर सकता है1 उधर रूस यूक्रेन युद्ध को ढाई वर्ष पूरे हो चुके है कई प्रभावशाली प्रयासों के बाद भी युद्ध रुकने का नाम नहीं ले रहा है रूस के व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेन के व्लादिमीर जेलेन्स्की हास्य कलाकार होने के बावजूद यूक्रेन के लिए त्रासदी के नायक बन गए हैं। दोनों देशों में हजारों नागरिक एवं सैनिक मारे जा चुके हैं इसके अलावा अरबों डॉलर की संपत्ति का भारी नुकसान भी हुआ है । इसराइल हमास लेबनान तथा ईरान के मध्य युद्ध अपने पूरे शबाब पर है1 इजरायल के आतंकवादी समूह हिज्बुल्लाह के कमांडर याह्या सिंनवार को रॉकेट लांचर से मार देने के बाद इसके जवाब में लेबनान से इजरायल के सिरोसिया शहर में जहां इसराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू का आधिकारिक निवास है रॉकेट लांचर से हमला किया है। ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामनेई ने अपने बयान में बताया की इस तरह के और हमले अभी जारी रहेंगे। पूरा विश्व इस समय विश्व युद्ध की कगार पर है और यदि उत्तर तथा दक्षिण कोरिया के मध्य युद्ध होता है तो निश्चित तौर पर अमेरिका साउथ कोरिया की तरफ से एवं रूस,चीन नॉर्थ कोरिया की तरफ से इस युद्ध में शामिल हो सकते हैं। पूरा विश्व दो भागों में बट गया है एक तरफ रूस,चीन, नॉर्थ कोरिया, पाकिस्तान तथा पश्चिम एशिया के देश होंगे तथा दूसरी तरफ अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, कनाडा, इजरायल तथा अन्य देश के युद्ध में शामिल होने की संभावना बलवती हो रही है1 भारत लगातार रूस-यूक्रेन, इसराइल-हमास युद्ध को रोकने के लिए प्रयासरत है और इस प्रयास के अंतर्गत भारत के प्रधानमंत्री ने रूस तथा यूक्रेन की आधिकारिक यात्राएं भी की है। परंतु दोनों देशों के राष्ट्रपतियों के अडियल रवैये के कारण शांति वार्ता संभव नहीं हो पाई, परंतु जैसा पुतिन ने अपने वक्तव्य में बताया की रूस यूक्रेन के साथ युद्ध विराम शांतिपूर्वक तरीके से करना चाहता है पर यूक्रेन इस वार्ता से पीछे हटकर अमेरिका तथा नाटो देशों के दम पर इनकार कर दिया है 1

तुष्टिकरण के भंवर में डूबता विपक्ष

सुरेश गांधी

बिहार की राजनीति फिर एक बार गरमाई हुई है। चुनाव आयोग ने भले ही आधिकारिक तारीख़ का ऐलान नहीं किया है, लेकिन राजनीति की गर्माहट मैदान में उतर चुके नेताओं के तेवरों से साफ झलकने लगी है। सड़कों से लेकर संसद तक हर ओर चुनावी माहौल साफ दिखाई दे रहा है। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों ओर से जोड़तोड़, गठजोड़, आरोप-प्रत्यारोप और यहां तक कि गाली-गलौज जैसी अमर्यादित घटनाएं माहौल को और गरमा रही हैं। नेताओं की बयानबाज़ी, मंचों से गूंजते नारे, और सोशल मीडिया पर तेज़ होती बहस इस बात का संकेत दे रहे हैं कि मुकाबला अब सिर्फ राजनीतिक दलों का नहीं, बल्कि दो विचारधाराओं का है। एक ओर भाजपा और एनडीए है, जो विकास, सुशासन और स्थिरता की राजनीति की बात कर रहा है। वहीं दूसरी ओर राहुल गांधी और तेजस्वी यादव का विपक्ष है, जो अपनी नैया मुस्लिम वोटों और जातीय समीकरणों के सहारे पार करने की कोशिश करता दिखाई दे रहा है। सवाल यही है कि क्या बिहार की जनता एक बार फिर जातिवादी तुष्टिकरण के जाल में फँसेगी या विकास की राह पर चलने वाले नेतृत्व को प्राथमिकता देगी?

फिरहाल, राहुल गांधी और तेजस्वी यादव मिलकर भले ही “जातिवादी बयार” और “मुस्लिम वोट बैंक” की राजनीति से चुनावी नैया पार करने का सपना देख रहे हों, लेकिन जनता की नब्ज़ अब बदल चुकी है। लोकसभा 2024 ने साफ कर दिया कि बिहार की जनता भाजपा और एनडीए के साथ है। विपक्ष की बांटो और काटो वाली राजनीति, उल्टा भाजपा के लिए फायदे का सौदा बन सकती है। मतलब साफ है धीरे-धीरे तैयार हो रही यह सियासी पृष्ठभूमि आने वाले चुनाव में निर्णायक साबित होगी। जब चुनावी रणभूमि पूरी तरह सज जाएगी, तब बिहार में भी वही शोर सुनाई देगा जो यूपी, दिल्ली और महाराष्ट्र में सुना गया, “बांटो और काटो” का शोर। फर्क बस इतना होगा कि बिहार की जनता अब इस शोर को अनसुना कर, विकास और स्थिरता की ओर बढ़ चुकी है।

यही भाजपा की सबसे बड़ी ताकत और विपक्ष की सबसे बड़ी कमजोरी है। तेजस्वी यादव की राजनीति लगभग पूरी तरह मुस्लिम वोट बैंक और यादव समीकरण पर टिकी है। दूसरी तरफ राहुल गांधी कांग्रेस को “मुस्लिम तुष्टिकरण” की ओर और ज्यादा झुका रहे हैं।

सवाल है कि जब गरीब, बेरोजगार, किसान और युवा बेहतर शिक्षा-स्वास्थ्य और नौकरी की उम्मीद कर रहे हों, तब सिर्फ एक वर्ग को खुश करने की राजनीति कब तक चलेगी? आज भले ही चुनाव दूर हों, लेकिन विपक्ष जिस तरह रैलियों और सोशल मीडिया के जरिए “ध्रुवीकरण” की पृष्ठभूमि तैयार कर रहा है, उससे साफ़ है कि चुनाव आते-आते माहौल को गरमाने की पूरी कोशिश होगी। यूपी में मुस्लिम-दलित-यादव यानी पीडीए फॉर्मूला बार-बार आजमाया गया। दिल्ली में अल्पसंख्यक तुष्टिकरण और मुफ्तखोरी की राजनीति पर चुनाव लड़े गए। महाराष्ट्र में भी धर्म और जाति की लाइनों पर समाज को बांटने का प्रयास हुआ। अब यही प्रयोग बिहार में भी देखने को मिल रहा है। यह धीमी आंच पर पक रही सियासी खिचड़ी है, जिसे चुनावी मौसम में उबाल तक ले जाने की योजना है। यह अलग बात है कि भाजपा ने पिछले एक दशक में बिहार में सड़क, बिजली, इंफ्रास्ट्रक्चर और डिजिटल इंडिया जैसे एजेंडे पर काम किया है। नीतीश कुमार के साथ गठबंधन ने कानून-व्यवस्था और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की दिशा में कुछ ठोस कदम भी उठाए। 2024 लोकसभा नतीजों ने साफ कर दिया है कि जनता जातिवादी समीकरणों से ऊपर उठकर विकास और स्थिरता को तरजीह दे रही है। यही कारण है कि भाजपा आज भी बिहार की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभर रही है।

इसकी पुष्टि हाल के कई राष्ट्रीय और स्थानीय सर्वे भी करते हैं. सर्वे के मुताबिक बिहार में भाजपा-जदयू गठबंधन को 45 से 50 फीसदी तक वोट शेयर मिलने की संभावना जताई गई है। जबकि राजद-कांग्रेस गठबंधन 30 फीसदी के आसपास सिमटा दिख रहा है। सबसे अहम यह कि युवा और प्रथम बार वोटर भाजपा को ज्यादा पसंद कर रहे हैं। मतलब साफ है राहुल-तेजस्वी की जातिवादी और तुष्टिकरण वाली राजनीति जनमानस को प्रभावित करने में सफल नहीं हो रही है।

बिहार की जनता ने लंबे समय तक जातिवादी राजनीति का दंश झेला है। लालू राज के दौर में भ्रष्टाचार, कानून-व्यवस्था की बिगड़ी स्थिति और रोजगार का अभाव आज भी लोगों की स्मृतियों में ताजा है। यही कारण है कि राजद की वापसी का डर लोगों को ध्रुवीकृत करने की बजाय भाजपा के पक्ष में खड़ा कर सकता है। लोग अब जानते हैं कि जातिवाद से रोजगार नहीं मिलेगा। तुष्टिकरण से शिक्षा और स्वास्थ्य नहीं सुधरेगा। बांटो और काटो की राजनीति से बिहार का भविष्य नहीं बनेगा।

राजनीति गटर है या गंगा?

डॉ टी महादेव राव

मतदान जोरों पर चल रहा था। काफी भीड़ लाइन में लगी थी। एक बंदा आकर चुनाव अधिकारी से पूछा क्यों भाई साहब सविता देवी पत्नी भगवान सिंह ने मतदान कर दिया है? मतदान अधिकारी ने रजिस्टर देखकर बताया हां दस मिनट पहले ही सविता जी ने मतदान कर दिया है। लेकिन आप यह क्यों पूछ रहे हो। जी दरअसल वह मेरी पत्नी है और मैं चाह रहा था उससे कम से कम यहां मिल सकूं। क्यों तुम दोनों साथ नहीं रहते? कैसे रह सकते हैं? उसकी तो ग्यारह साल पहले मौत हो गई। इत्तेफाक देखिए वह हर चुनाव में अपना मतदान करने आती है और चली जाती है मैं तीन-चार बार से किसी न किसी चुनाव में उससे मिलने की नाकामयाब कोशिश करता रहा हूं। मतदान अधिकारी अचंभित सा खड़ा रह गया। दो भाई मतदान केंद्र के बाहर एक आदमी को पकड़कर उससे झगड़ा कर रहे थे। पुलिस में पूछा क्यों भाई क्यों झगड़ा कर रहे हो। साब यह हमारा पिता सुखलाल हमारे जायदाद का बंटवारा किए बिना ग्यारह साल पहले मर गया। लेकिन देखिए हर मतदान के लिए हाजिर हो जाता है और अपना वोट देकर चला जाता है। हमने सोचा इस बार किसी न किसी तरह पकड़ा जाए। तो देखिए साहब यह हाथ में आ गया है। लेकिन चेहरा मोहरा सारा कुछ बदला हुआ है। पुलिस ने उसे आदमी की जेब से पर्ची निकाल कर देखा। सुखलाल पिता दुखी लाल ग्राम जेवरा जिला कोबरा का मतदान पर्ची निकाला। नकली वोट देने के लिए आया यह व्यक्ति हमारा बाप नहीं है हम इसको थाने ले जाते हैं। दोनों भाई झगड रहे, नहीं मैं जायदाद का का सही-सही बटवारा करके पैसे देने होंगे वरना हम इसे फिर से मौत के गले डाल देंगे। पुलिस जैसे तैसे करके नकली मतदाता को लेकर चल दी। लेकिन ये सारे हादसे मुझे क्यों सुना रहा है छोटू? भैया! देखिए नकली वोट, नकली मतदाताओं के साथ साथ यह जो तथाकथित जीत है क्या सही में जीत है। जैसे जैसे पता चलता है कि लोकप्रियता का ग्राफ नीचे की ओर जा रहा है, सत्ता प्रेमी, कुर्सी आशिक और गद्दी के घमंडी बस तीन तेरह और नौ बारह करने में लगे रहते हैं। सत्ता में हैं तो रेवड़िया बांटते अपनी जीत पुख्ता करने में लगे रहते हैं जबकि अन्य विपक्षी बीयर, बिरयानी और पैसे के लालच में लगाते हैं। तो बताएं लोकतंत्र का सही उद्देश्य क्या यही है? वोटों की चोरी या मतदाताओं की मृत्यु के बाद भी उनका नाम सूची में होना और लाई तरह के विवादों से बचने का मेरे पास एक रामबाण उपाय है जो कारगर हो सकता है।भैया! धीरे धीरे आप गृहमंत्री से भी बड़े चाणक्य हुए जा रहे हैं। उन्हें चाणक्य, कूटनीतिज्ञ और चुनावों का शहंशाह कहते हैं। मेरी तुलना किसी से न कर छोटू, मुझे छोटू का भैया ही रहने दे। चाणक्य को गाली मत दो उनकी इनसे तुलना करके। जैसा कि आरोप है वोटों की चोरी करवाके, चारों संस्थाओं से लोगों को डराकर, ईवीएम में धांधली करके चुनाव जीतना षडयंत्र है, धोखेबाजी है। कूटनीति या राजनीति तो है ही नहीं।

सुख-शांति के लिए शिव- पार्वती के साथ करें गणपति पूजा

सुख-समृद्धि का प्रतीक है गणेश जी का परिवार

गणेश जी संपूर्णता के प्रतीक हैं। इनकी दो पत्नियां- रिद्धि और सिद्धि हैं, दो पुत्र- शुभ और लाभ (क्षेम) हैं। रिद्धि सुख-समृद्धि का प्रतीक हैं। सिद्धि सफलता और सिद्धियों की प्रतीक हैं। शुभ जीवन में शुभता, शांति और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं। लाभ से तात्पर्य है प्रगति और आर्थिक सफलता।

कुछ कथाओं में गणेश जी की एक पुत्री का भी उल्लेख है, जिनका नाम संतोषी माता है। इन्हें संतोष और आत्मिक शांति का प्रतीक माना जाता है। संतोषी माता की पूजा विशेष रूप से शुक्रवार को की जाती है, देवी के इस स्वरूप की पूजा करने से घर-परिवार में संतोष बना रहता है, अभावों में व्यक्ति निराश नहीं होता है और हमेशा प्रसन्न रहता है।

गणेश जी के माता-पिता भगवान शिव और माता पार्वती हैं, इनका परिवार संदेश देता है कि घर में सभी सदस्यों की विचारधारा भले ही अलग हो, लेकिन हमें परिवार के साथ ही रहना चाहिए।

भगवान शिव, जो तपस्या, त्याग और विवेक के प्रतीक हैं। माता पार्वती, जो शक्ति, ममता और करुणा की प्रतीक हैं। स्वामी कार्तिकेय, जो वीरता, अनुशासन और ब्रह्मचर्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। भगवान गणेश, जो बुद्धि, विवेक और समर्पण के प्रतीक हैं। इन सभी के वाहन नंदी, सिंह, मोर, मूषक हैं, शिव जी गले में नाग को धारण करते हैं।

नंदी बैल (शिव का वाहन) सेवा और निष्ठा का प्रतीक है। सिंह (पार्वती का वाहन) साहस और शक्ति का प्रतीक है। मोर (कार्तिकेय का वाहन) सुंदरता और संतुलन का प्रतीक है। मूषक (गणेश का वाहन) सूक्ष्मता और चपलता का प्रतीक है। ये सभी जीवन एक-दूसरे के शत्रु हैं। आमतौर सिंह यानी शेर नंदी यानी बैल को मार देता है, मोर नाग को और नाग चूहे को मार देता है। ये सभी जीव अलग-अलग स्वभाव के हैं, लेकिन फिर भी शिव परिवार में एक साथ रहते हैं, इनका संदेश यही है कि परिवार में सभी लोगों की सोच, विचारधारा अलग-अलग हो सकती है, लेकिन सभी को एक साथ ही रहना चाहिए। इस परिवार की एक साथ पूजा करने से जीवन में संतुलन, शांति और समृद्धि आती है। ये परिवार हमें सिखाता है कि विविधताओं के बावजूद एकजुटता और प्रेम से जीवन को सुंदर बनाया जा सकता है।

तुलसी ने गणेश जी को दिया था शाप

पौराणिक कथा है कि तुलसी गणेश जी से विवाह करना चाहती थी। तुलसी ने गणपति से विवाह करने की प्रार्थना की, लेकिन गणेश जी ने विवाह करने से मना कर दिया, क्योंकि वे ब्रह्मचारी रहना चाहते थे। गणेश जी के मना करने से तुलसी क्रोधित हो गई।

क्रोध में तुलसी ने गणेश जी को दो विवाह होने का शाप दे दिया। इस शाप की वजह से गणेश जी भी क्रोधित हो गए और उन्होंने भी तुलसी को शाप देते हुए कहा कि तुम्हारा विवाह एक असुर से होगा।

असुर से विवाह होने का शाप सुनकर तुलसी दुखी हो गई, उसने गणेश जी से अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। तब गणेश जी ने कहा कि तुम्हारा विवाह शंखचूर्ण नाम के असुर से होगा, लेकिन तुम भगवान विष्णु को प्रिय रहोगी, तुम्हारी पूजा भी होगी, तुम्हारे बिना विष्णु पूजा अधूरी मानी जाएगी, लेकिन मेरी पूजा में तुलसी वर्जित रहेगी। इस शाप की वजह से गणेश जी की पूजा में तुलसी का इस्तेमाल नहीं किया जाता है।

शिव जी ने किया था तुलसी के पति शंखचूड़ का वध

शंखचूड़ एक असुर था। उसका विवाह तुलसी के साथ हुआ था। शंखचूड़ को वरदान प्राप्त था कि जब तक उसकी पत्नी तुलसी का पतिव्रता धर्म खंडित नहीं होगा, तब तक उसे कोई मार नहीं सकता। वरदान मिलने से शंखचूड़ बहुत शक्तिशाली हो गया, उसने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। इसके बाद सभी देवता भगवान शिव की शरण में गए। इसके बाद शिव जी और भगवान विष्णु ने योजना बनाई और विष्णु जी ने तुलसी का पतिव्रता धर्म भंग किया। जिससे शंखचूड़ का सुरक्षा कवच खत्म हो गया। इसके बाद भगवान शिव ने शंखचूड़ का वध कर दिया।जब तुलसी को ये मालूम हुआ कि उसका पतिव्रता धर्म भंग हुआ है, तब उसने भगवान विष्णु को पत्थर बन जाने का शाप दिया। विष्णु जी ने तुलसी का ये शाप स्वीकार किया। शालिग्राम विष्णु जी का वही पत्थर स्वरूप है और विष्णु जी ने तुलसी पौधे का रूप दे दिया और ये पौधा विष्णु जी को बहुत प्रिय हो गया। तभी से तुलसी के साथ शालिग्राम पूजन की परंपरा चली। शिव जी ने तुलसी के पति शंखचूड़ का वध किया था, इस कारण तुलसी ने खुद को शिव पूजा के लिए वर्जित किया था।

भगवान श्रीचन्द्र के आगे नतमस्तक हो जाते थे क्रूर शासक

उदासीनाचार्य जगद्गुरु श्री चन्द्र देव जी की जयंती पर विशेष

महंतश्री योगी प्रशांतदास महराज

विश्व-कल्याण के लिए अवतरित आध्यात्मिक विभूतियों ने अपने समय में जनमानस में धार्मिक एवं सामाजिक चेतना लाने के लिए एक सशक्त मार्ग धार्मिक यात्राओं का चुना था। गुरु नानक देव जी की धार्मिक यात्राओं का नाम दिया गया था उदासियां, उनकी चार उदासियां प्रसिद्ध हैं। महान पिता के महान सुपुत्र उदासीनाचार्य भगवान् श्रीचन्द्र जी ने अपने जीवन में धर्म यात्राओं के मार्ग को ही अपनाया। श्रीचन्द्र जी ने अपनी यात्राओं के दौरान उस समय के क्रूर शासकों को अपने चमत्कार से प्रभावित कर अपने उपदेशों के माध्यम से शासक-धर्म क्या होता है, उसके विषय में बतलाया। श्रीचन्द्र जी काबुल, कंधार, अफगानिस्तान, भूटान आदि देशों की यात्रा कर लोगों को मानवता का संदेश दिया। उदासीनाचार्य जगदगुरु श्रीचन्द्र देव जी का जन्मोत्सव इस बार 1 सितम्बर को है। श्रीचन्द्रदेव जी का प्रादुर्भाव जन्मोत्सव भाद्रपद शुक्ल पक्ष की नवमी संवत 1551 को हुआ था। चन्द्र देव जी का जन्म लाहौर की खड़गपुर तहसील के तलवंडी नामक स्थान में श्रीगुरु नानकदेव जी की पत्नी सुलक्षणा देवी के घर हुआ था। इनका जन्म निवृत्ति प्रधान सनातन धर्म के प्रचारक एवं पुनरुद्धार के लिए हुआ था। इनके जन्म से ही सिर पर जटाएं, शरीर पर भस्म तथा दाहिने कान में कुंडल शोभित था। इनके भस्म विभूषित विग्रह को देखकर दर्शनार्थी आपको शिवस्वरूप मानकर श्रद्धा से पूजते थे। आचार्य श्रीचन्द्र देव जी बचपन से ही वैराग्य वृत्तियों से युक्त थे। ऋद्धि-सिद्धियाँ उनके हाथ जोड़े हुए सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। ग्यारहवें वर्ष के हुए तब उनका पंडित हरिदयाल शर्मा के द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार (जनेऊ संस्कार सम्पन्न हुआ। आचार्य श्रीचन्द्रदेव जी वैदिक कर्मकाण्ड के पूर्ण समर्थक थे। उन्होंने ज्ञान-भक्ति के श्रेष्ठ सिद्धांत को

प्रतिपादित किया। उन्होंने करामाती फकीरों, सूफी संतों, अघोरी तांत्रिकों और विधर्मियों को अपनी अलौकिक सिद्धियों और उपदेशों से प्रभावित कर वैदिक धर्म की दीक्षा भी दी थी। आपने उस समय के परम ज्ञानी वेदवेत्ता विद्वान, कुलभूषण, कश्मीर मुकुटमणि पंडित श्री पुरुषोत्तम कौल जी से वेद-वेदांग और शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। अद्वितीय प्रतिभा के सम्पन्न होने के कारण आपने बहुत ही कम समय में सारी विधाएं आत्मसाध कर ली थीं। आपने भगवान बुद्ध की तरह लोकभाषा में उपदेश दिया था। भाष्यकार आदि गुरु शंकराचार्य जी की तरह वेदों का भाष्य किया तथा कबीर आदि संतों की तरह वाणी साहित्य की रचना भी की थी। ब्रह्माडम्बर, मिथ्याचार अवैदिक मत-मतान्तरों, पाखंडों का खंडन कर श्रुति-स्मृति सम्मत आचार-विचार की प्रतिष्ठा की। भावात्मक एवं वैचारिक धरातल पर जीव मात्र की एकता का प्रतिपादन किया। जाति-पांति, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े के भेदभाव को समाप्त कर मानव मात्र को मुक्ति की राह दिखाई थी। उनका उदघोष था चेतहु नगरी, तारहु गाँव अलख पुरुष का सिमरहु नांव।। आचार्य देव के थे चारों शिष्य श्री अलिमस्त साहेब जी, श्री बालूहसना साहेब जी, श्री गोविन्ददेव साहेब जी एवं श्री फूलसाहेब जी को चारों दिशाओं उत्तर, पूरब, दक्षिण एवं पश्चिम के प्रतीक चार धूना के नाम से सुशोभित किया। जिनकी परम्परा स्वरूप आज भी चार मुख्य महंत होते हैं। धूणे के रूप में वैदिक यज्ञोपासना को नया रूप दिया तथा निर्वाण साधुओं के रहने का आदर्श प्रतिपादित कर निवृत्ति प्रधान धर्म की प्रतिष्ठा की। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए शैव, वैष्णव, शाक्त, सौर तथा गणपत्य मतावलंबियों को संगठित कर पंचदेवोपासना की प्रतिष्ठा की। हिन्दू धर्म की महिमा समझाई। वैचारिक वाद-विवाद को मिटाकर सत्य सनातन धर्म को समन्वय का विराट सूत्र प्रदान किया। उन्होनें कहा-ॅनिर्वैर संध्या दर्शन छापा वाद-विवाद मिटावै आपा"। शिव रूप होकर आज भी भक्तों और श्रद्धालु आसितकों की मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। 150 वर्षों तक धराधाम पर रहकर अंतिम क्षणों में ब्रह्मकेतु जी को उपदेश दिया और रावी में शिला पर बैठकर पार गये तथा चम्बा नामक जंगल में विक्रम संवत 1700 पौष मास कृष्ण पंचमी को अंर्तध्यान हो गए।

गणेश उत्सव के दौरान गणपति के 8 पावरफुल मंत्रों का करें जप

हिन्दू धर्म में होली-दीवाली की तरह गणेश चतुर्थी का विशेष महत्व है। पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह के शुक्ल की चतुर्थी तिथि को गणेश चतुर्थी का पर्व मनाया जाता है।इस बार गणेश चतुर्थी 27 अगस्त से 06 सितंबर तक है।

यह उत्सव पूरे 10 दिन तक यानी गणेश चतुर्थी से लेकर अनंत चतुर्दशी तक मनाया जाता है।धार्मिक मान्यता है कि गणेश चतुर्थी के त्योहार को गणपति बप्पा के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है।इस खास अवसर पर भक्त अपने-अपने घरों में गणपति प्रतिमा की स्थापना और पूजा करते हैं।लेकिन, आपको बता दें कि, विध्नहर्ता की पूजा कुछ मंत्रों के जाप के बिना अधूरी है।ऐसा करने से गणेशजी का आशीर्वाद मिलता है। आइए जानते हैं इन पावरफुल मंत्रों के बारे में-

गणेशजी को प्रसन्न करने के लिए करें इन मंत्रों का जाप

'ऊं गं गणपतये नमः'
गजानंद एकाक्षर मंत्र' सरल उपाय

'गजानंद एकाक्षर मंत्र' भगवान गणेश के सबसे सरल और प्रभावी मंत्रों में एक है।इस मंत्र के उच्चारण मात्र से ही भक्तों के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।बुधवार के दिन पूजा के दौरान आप इस मंत्र का कम से कम 108 बार जाप करें।इससे आपके हर कार्य सफल होंगे और सभी मनोकामनाएं पूरी होंगी.

'ओम नमो भगवते गजननाय'

इस मंत्र के जाप से पूर्व हरे रंग की गणेश मूर्ति उत्तर दिशा में मुख करके स्थापित करना चाहिए।गणपति की पूजा के बाद लाल आसन पर बैठकर 11 दिन इस मंत्र का जाप करें।ऐसा करने से आपको गणेश जी की कृपा होगी.साथ ही, धन की समस्या भी दूर होगी।

'सिद्ध लक्ष्मी मनोहरप्रियाय नमः' या 'महालक्ष्मी प्रियतमाय नमः'

ये दोनों मंत्र भी अपार धन-दौलत की प्राप्त के लिए हैं।आपको गणेश जी और माता लक्ष्मी पूजा के बाद इन दोनों गणेश मंत्र का जाप 108 बार करना चाहिए।इन मंत्रों के जाप से आर्थिक स्थिति मजबूत होती है, दरिद्रता दूर होती है।

'ऊं वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।'

अर्थ-गणेश जी का ये मंत्र सबसे अधिक लोकप्रिय है।इस मंत्र का अर्थ ये है कि जिनकी सुंड घुमावदार है, जिनका शरीर विशाल है, जो करोड़ सूर्यों के समान तेजस्वी हैं, वहीं भगवान मेरे सभी काम बिना बाधा के पूरे करने की कृपा करें।इससे बप्पा प्रसन्न होते हैं और आपकी सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

'ऊं श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर वरद
सर्वजनं में वशमानय स्वाहा।।'

यह मंत्र समाज में मान प्रतिष्ठा दिलाता है।अगर आप कई प्रयासों के बाद भी नौकरी सफल नहीं हो रहे तो आपको रोजाना इस मंत्र का जाप 108 बार करना है।इस उपाय को करने से व्यक्ति की नौकरी की समस्या तुंरत हल हो जाती है।

'ऊं एकदन्ताय विहे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो
दन्तिः प्रचोदयात।।'

श्री गणेश गायत्री मंत्र को फलदायी माना जाता है।बुधवार की पूजा में इस मंत्र का 108 बार जाप करने से व्यक्ति का भाग्य चमकता है और सभी कार्य अनुकूल सिद्ध होते हैं।साथ ही भगवान गणेश की विशेष कृपा भी प्राप्त होती है.

'ऊं नमो गणपतये कुबेर येकद्रिको
फट् स्वाहा।।'

गणेश कुबेर मंत्र आप प्रतिदिन या बुधवार की पूजा में एक माला (108 बार) जाप करें। इससे आर्थिक समस्या दूर होती है और कर्ज से भी मुक्ति मिलती है।

मानव शरीर, हमारी संतानें और परिवार प्रसाद ही हैं

शरीर, संतानें और गृहस्थी परमात्मा का प्रसाद है और प्रसाद के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। आजकल दुनिया के कुछ हिस्सों में महिलाएं एग फ्रीजिंग करवा रही हैं और शादी के बाद उसको प्रयोग में लेंगी। ये मानव आचरण के साथ सीधी छेड़छाड़ है और इसके परिणाम परिवारों को भुगतने पड़ेंगे। भारत का जो पारिवारिक ढांचा है, उसको 10-15 साल में अलग और अजीब किस्म के धक्के लगने वाले हैं। श्रीराम के जन्म के पूर्व हुए यज्ञ में जो खीर निकली थी, उसका बंटवारा हुआ था।

कैकेयी के हाथ में खीर का पात्र था। उनके मन में विचार आया कि ये बंटवारा ठीक नहीं है। तो मन में उथल-पुथल शुरू हुई। और जिस समय प्रसाद प्राप्त करना था, वो किया नहीं तो एक चील ने उस पर झपट्टा मारा। एक हिस्सा चील के पास चला गया।

यहां समझने वाली बात यह है कि कैकेयी प्रसाद लेते समय अशांत थीं और समय का दुरुपयोग कर रही थीं। इसी तरह हम भी समझें कि शरीर, संतानें और परिवार प्रसाद ही हैं। इनके साथ छेड़छाड़ ना करिए।

कौन है तमिल एक्टर विशाल की मंगेतर साई धनशिका? रजनीकांत संग की एक्टिंग

तमिल अभिनेता विशाल की मंगेतर धनशिका भी साउथ इंडिस्ट्री में लंबे समय से अभिनय कर रही हैं। वह तमिल, तेलुगु और कन्नड़ फिल्मों में अभिनय करती हैं। धनशिका ने 16 साल की उम्र में ही अपना एक्टिंग करियर शुरू कर दिया था। वह रजनीकांत जैसे सुपरस्टार के साथ भी अभिनय कर चुकी हैं।

'थिरूडी' से लेकर 'कबाली' तक का सफर

धनशिका ने साल 2006 में 'थिरूडी' नाम की तमिल फिल्म से करियर शुरू किया। इसके बाद वह कई साउथ की फिल्मों में नजर आईं। इसमें 'पेरनमई', 'परदेसी' और 'मांजा वेलु' जैसे कई चर्चित फिल्में शामिल हैं। साल 2026 में रजनीकांत के साथ फिल्म 'कबाली' में एक्ट्रेस को काम करने का मौका मिला। वह इस फिल्म में रजनीकांत की बेटी के रोल में नजर आईं। इस किरदार के कारण उन्हें साउथ फिल्मों में काफी पॉपुलैरिटी मिली। इस साल वह 'योगी दा' नाम की एक तमिल फिल्म में नजर आएंगी। कुछ और तमिल फिल्मों के प्रोजेक्ट भी साई धनशिका के पास हैं।

'कबाली' के लिए मिला फिल्मफेयर अवॉर्ड

फिल्म 'कबाली' के लिए धनशिका को बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस का फिल्म फेयर अवॉर्ड (तमिल) था। साथ ही कई फिल्मों के लिए, कई नामी अवॉर्ड भी धनशिका मिल चुके हैं। वह दक्षिण भारतीय फिल्मों की उम्दा एक्ट्रेस के तौर पर पहचानी जाती हैं।

अभिनेता विशाल संग जल्द करेंगी शादी

तमिल फिल्मों के एक्टर विशाल ने अपने 48वें जन्मदिन पर धनशिका से सगाई की है। जल्द ही दोनों शादी के बंधन में बंध जाएंगे। दोनों के बीच 13 साल का एज गैप है। विशाल 48 साल के हैं, वहीं धनशिका 35 साल की हैं।

साउथ एक्टर नागार्जुन को जन्मदिन की बधाई देने पहुंची प्रशंसको की भारी भीड

आज 29 अगस्त के दिन तमिल इंडस्ट्री के किंग कहे जाने वाले अभिनेता नागार्जुन अपना 66वां जन्मदिन मना रहे हैं। ये दिन एक्टर के फैंस के लिए काफी खुशी वाला पल है। एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें नागार्जुन के ढेर सारे फैंस अभिनेता के घर के बाहर उनका इंतजार कर रहे हैं। देखें वीडियो।

सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में नागार्जुन के जन्मदिन पर फैंस उनके घर पर बधाई देने पहुंच गए। वीडियो में देखा जा सकता है कि काफी संख्या में प्रशंसक अभिनेता की एक झलक पाने को बेताब दिख रहे हैं। हालांकि उन्हें देख अभिनेता ने अंदर से ही दीवाल पर खड़े होकर अपने प्रशंसकों का अभिवादन स्वीकार करते हैं और उनके साथ सेल्फी लेते हैं। इस वीडियो में नागार्जुन ब्लैक आउटफिट में काफी स्मार्ट लग रहे हैं।

नेटिजंस ने दी प्रतिक्रिया

इस वीडियो के वायरल होते ही फैंस की प्रतिक्रियाएं आने लगी हैं। एक यूजर ने कहा, साउथ के लोग अपने एक्टर को भगवान की तरह मानते हैं। दूसरे यूजर ने कमेंट सेक्शन में लिखा, हैप्पी बर्थडे किंग। वहीं एक और यूजर ने कहा, जन्मदिन की बधाई मास। इसके अलावा अन्य यूजर्स भी अभिनेता को जन्मदिन की बधाइयां दे रहे हैं।

एक नजर नागार्जुन की फिल्मों पर

नागार्जुन ने अभी तक के सिनेमाई करियर में जबरदस्त फिल्में की हैं। लेकिन अभिनेता की कुछ शानदार फिल्मों की बात करें, तो उन्होंने 'शिवा', 'गीतांजलि', 'क्रिमिनल', 'मास', 'ब्रम्हास्त्र पार्ट 1', 'द घोस्ट' जैसी फिल्मों में काम किया है। इन फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर भी शानदार प्रदर्शन किया था। नागार्जुन की सबसे ज्यादा कमाऊ फिल्म की बात करें, तो 'ब्रम्हास्त्र पार्ट 1' है, जो सबसे पहले नंबर पर है।

चाइल्ड आर्टिस्ट के तौर पर शुरू किया करियर आज साउथ फिल्मों में करते हैं राज

नागार्जुन

साउथ सुपरस्टार नागार्जुन अक्किनेनी ने फिल्मी दुनिया में अपनी अदाकारी से दर्शकों को मुरीद बनाने का काम किया है। अभिनेता को सिर्फ एक्टिंग की दुनिया में ही महारत नहीं हासिल है, बल्कि वो एक सफल निर्माता, टीवी होस्ट और समाजसेवी के तौर पर भी पहचाने जाते हैं। आज 29 अगस्त को नागार्जुन अपना 66वां जन्मदिन मना रहे हैं। इस खास अवसर पर हम जानेंगे अभिनेता के सिनेमाई करियर और उनकी नेटवर्थ के बारे में। चलिए जानते हैं।

चाइल्ड एक्टर के रूप में शुरू किया करियर

29 अगस्त 1959 को चेन्नई में जन्में नागार्जुन ने अपने सिनेमाई करियर की शुरुआत एक चाइल्ड एक्टर के रूप में की थी। अभिनेता साल 1961 में 'वेलुगु नीडालु' फिल्म में बाल कलाकार के रूप में नजर आए थे। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों में चाइल्ड एक्टर के रूप में काम किया।

'विक्रम' फिल्म में पहली बार निभाई लीड एक्टर की भूमिका

नागार्जुन ने पहली बार बतौर लीड एक्टर 1986 की फिल्म 'विक्रम' में काम किया। आपको बताते चलें कि यह फिल्म कमल हासन की तमिल फिल्म 'हीरो' की रीमेक थी। इस फिल्म ने उन्हें अच्छी-खासी पहचान दिलाई। इसके बाद अभिनेता ने 'मजनू' और 'जानकी रामुडु' फिल्म में भी अभिनय किया। इन फिल्मों के दम पर अभिनेता सिनेमाई दुनिया में एक चर्चित स्टार बन गए।

हिंदी फिल्मों में नागार्जुन ने दिखाया जलवा

नागार्जुन उन अभिनेताओं में शुमार हैं, जिन्होंने सिर्फ साउथ ही नहीं बल्कि हिंदी फिल्मों में भी जलवा बिखेरने का काम किया है। अभिनेता ने साल 1990 में 'शिवा' की हिंदी रीमेक में अभिनय किया, जो उसी नाम से बनी थी। इस फिल्म को काफी सरहाना मिली थी। इसके बाद एक्टर ने 1992 में 'खुदा गवाह' फिल्म में काम किया, जिसमें उनके साथ अमिताभ बच्चन और श्रीदेवी जैसे दिग्गज कलाकार मौजूद थे। इन फिल्मों के जरिए नागार्जुन हिंदी दर्शकों के दिलों में भी छा गए।

नागार्जुन के करियर की शानदार फिल्में

नागार्जुन ने अभी तक के सिनेमाई करियर में जबरदस्त फिल्में की हैं। लेकिन अभिनेता की कुछ शानदार फिल्मों की बात करें, तो उन्होंने 'शिवा', 'गीतांजलि', 'क्रिमिनल', 'मास', 'ब्रम्हास्त्र पार्ट 1', 'द घोस्ट' जैसी फिल्मों में काम किया है। इन फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर भी शानदार प्रदर्शन किया था। नागार्जुन की सबसे ज्यादा कमाऊ फिल्म की बात करें, तो 'ब्रम्हास्त्र पार्ट 1' है, जो सबसे पहले नंबर पर है।

नागार्जुन की नेटवर्थ

नागार्जुन की नेटवर्थ की बात करें, तो नागार्जुन सिर्फ अभिनेता ही नहीं बल्कि एक व्यवसायी भी हैं। अभिनेता की प्रोडक्शन कंपनी अन्नपूर्णा स्टूडियोज तेलुगु सिनेमा के प्रमुख फिल्म स्टूडियोज में से एक है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अभिनेता की कुल नेटवर्थ 3572 करोड़ रुपये से ज्यादा है।

अपने पिता अनुज को नहीं 'बिग बॉस 19' में इस शख्स को सपोर्ट कर रही है राही

सलमान खान के शो बिग बॉस 19 का 24 अगस्त को प्रीमियर हुआ था. शो को शुरू हुए अभी महज पांच दिन हुए हैं, लेकिन अभी से ही दर्शकों ने कहना शुरू कर दिया है कि गौरव खन्ना विनर बनेंगे. बिग बॉस के बाकी कंटेस्टेंट गौरव खन्ना से कहीं ना कहीं डरे हुए नजर आ रहे हैं. सोशल मीडिया पर फैंस लगातार उनको सपोर्ट करते दिख रहे हैं. लेकिन, अनुपमा के कलाकार उन्हें सपोर्ट नहीं कर रहे हैं. इस लिस्ट में गौरव खन्ना की ऑन स्क्रीन बेटी का भी नाम शामिल है. अपने पिता को सपोर्ट करने की जगह राही किसी और को विनर बनाने में लगी हुई है.

ये बात हम नहीं कह रहे बल्कि अद्रिजा रॉय ने खुद ही ऐसा बयान दिया है. अद्रिजा ने गौरव की जगह किसी और को अपना फेवरेट कंटेस्टेंट बता दिया है. ये कंटेस्टेंट कोई और नहीं बल्कि बशीर अली हैं. बता दें बशीर के संग अद्रिजा पहले काम कर चुकी हैं.

अद्रिजा ने कहा कि बिग बॉस 19 में मैं किसी सपोर्ट कर रही हूं ये मेरे लिए बहुत ही मुश्किल सवाल है. अनुपमा में गौरव खन्ना मेरे पिता की भूमिका में नजर आ चुके है. हालांकि, मैंने उनके साथ ज्यादा काम नहीं किया है, लेकिन मिल चुकी हूं. मेरी बॉन्डिंग गौरव खन्ना से अच्छी है. हालांकि, मैं बसीर को बिग बॉस के घर में सपोर्ट करूंगी. वो मेरा अच्छा दोस्त है. मैं चाहती हूं कि बसीर विनर बनें. अद्रिजा के इस बयान की सोशल मीडिया पर खूब चर्चा हो रही है. लोग ये कह रहे हैं अनुज की बेटी होकर उसी को सपोर्ट नहीं कर रही है. शो में देखने को मिलता है कि राही को पल-पल उनके पिता की याद आती है. वो अपने पिता के लिए अनुपमा से भी लड़ जाती हैं. लेकिन, रियल लाइफ में ऐसा बिल्कुल भी नहीं है.

तमन्ना-डायना की सीरीज 'डू यू वाना पार्टनर' में दिखेगा कॉमेडी अंदाज

साउथ एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया और डायना पेंटी की आगामी वेब सीरीज 'डू यू वाना पार्टनर' का ट्रेलर मेकर्स ने रिलीज कर दिया है।

तमन्ना भाटिया और डायना पेंटी की सीरीज 'डू यू वाना पार्टनर' का ट्रेलर मेकर्स ने जारी किया है। 2 मिनटर 57 सेकेंड के इस ट्रेलर में दिखाया जाता है कि कैसे दो महिलाएं शिखा और अनाहिता अपने नए बिजनेस को शुरू करती हैं। इसमें उन्हें धैर्य और संघर्ष को बेहद ही शानदार ढंग से दिखाने का प्रयास किया जाता है। ट्रेलर में कॉमेडी भी देखने को मिलती है। इस सीरीज को युवाओं पर फोकस किया गया है, जो दर्शकों को प्रेरणा देने का काम भी कर सकती है।

किम यशपाल ने डैनी डेन्जोंगपा को किया था डेट डांस और खूबसूरती पर फिदा थे लोग!

इस एक्ट्रेस ने मिथुन चक्रवर्ती के साथ 'डिस्को डांसर' में काम किया था और पहली ही फिल्म में राजेश खन्ना हीरो रहे। 80 के दशक में इस एक्ट्रेस का तगड़ा जलवा था, पर 32 साल पहले इसने फिल्में छोड़ दी और इंडस्ट्री से भी दूरी बना ली। जानिए कौन है ये और अब क्या कर रही है।

ये एक्ट्रेस याद है आपको? 80 के दशक में इस एक्ट्रेस ने फिल्मों में एंट्री करके तहलका मचा दिया था। यह 'नसीब अपना अपना' और 'डिस्को डांसर' जैसी फिल्मों में नजर आई। बाद में यह 'जिमी जिमी गर्ल' बनकर मशहूर हुई और कई हिट फिल्में दीं...पर फिर यह अचानक ही गायब हो गई। 32 साल से यह एक्ट्रेस फिल्में छोड़कर गुमनाम जिंदगी जी रही है। जानिए कौन है ये एक्ट्रेस और अब क्या करती है।

किम यशपाल, 80s में मचाया था धमाल

इस एक्ट्रेस का नाम है किम यशपाल, जो बेरूत की रहने वाली थीं, पर फिल्मों में करियर बनाने मुंबई आ गई थीं। मुंबई आने के बाद किम यशपाल ने डांस मास्टर गोपी कृष्णा से कथक डांस सीखा और फिर फिल्म इंडस्ट्री में एंट्री की।

शशि कपूर की बदौलत मिली थी पहली फिल्म

किम यशपाल की मुलाकात एक पार्टी में एक्टर शशि कपूर से हुई। उन्होंने किम को प्रोड्यूसर एन.एन. सिप्पी से मिलवाया। सिप्पी उस वक्त हॉरर फिल्म 'फिर वही रात' पर काम कर रहे थे। इसमें राजेश खन्ना हीरो थे डैनी डेन्जोंगपा डायरेक्टर थे। किम यशपाल को इस फिल्म में लीड हीरोइन के तौर पर साइन कर लिया गया। फिल्म तो फ्लॉप रही, पर किम यशपाल को नोटिस किया गया।

डैनी डेन्जोंगपा संग अफेयर

'फिर वही रात' के बाद किम यशपाल और डैनी डेन्जोंगपा का अफेयर भी शुरू हो गया। किम ने साल 2021 में 'द डेली आई इन्फो' को दिए इंटरव्यू में बताया था कि उन्हें फिल्मों में काम डैनी संग अफेयर की वजह से मिला। किम को फिर 'नसीब' और मिथुन चक्रवर्ती संग 'डिस्को डांसर' जैसी फिल्में मिलीं, जिन्होंने उनके करियर की कायापलट ही कर दी।

'डिस्को डांसर' छाईं, पर नहीं मिले अच्छे ऑफर, छलका था दर्द

किम यशपाल ने बताया था कि 'डिस्को डांसर' जैसी हिट फिल्म के बाद किसी ने भी उन्हें न तो मिथुन चक्रवर्ती संग फिल्म मिली और ना ही ढंग के रोल। किम यशपाल ने कहा था, 'मुझे लग रहा था कि मैं करियर में कहीं नहीं पहुंच पाऊंगी। मुझे बेतरतीब रोल ऑफर किए जा रहे थे, जिनमें मुझे या तो डांस नंबर दिए जाते, या फिर ऐसे सीन्स, जिनमें कम कपड़े होते थे।' किम ने बताया था कि उन्हें साल 1988 में 'कमांडो' फिल्म में एक रोल मिला था, जो दमदार था। हीरो मिथुन चक्रवर्ती थे। लेकिन डायरेक्टर ने उनका आधे से ज्यादा रोल काट दिया था, जिससे वह बहुत दुखी हो गई थीं।

डैनी डेन्जोंगपा संगल अफेयर, परवीन बाबी ने खड़ी कीं मुश्किलें

किम यशपाल अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी खूब सुर्खियों में रहीं। हालांकि, परवीन बाबी उनके जी का जंजाल बन गई थीं। दरअसल, किम और डैनी डेन्जोंगपा एक-दूसरे को डेट कर रहे थे। उससे पहले डैनी का परवीन संग अफेयर था। एक समय पर दोनों लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहे थे। डैनी ने खुद 'फिल्मफेयर' को दिए इंटरव्यू में इस बारे में बताया था। कुछ समय बाद ब्रेकअप हो गया था, पर वो दोस्त रहे। बाद में परवीन बाबी एक्टर कबीर बेदी को डेट करने लगी थीं। डैनी भी मूव ऑन कर गए।

किम यशपाल के बॉयफ्रेंड डैनी के बेडरूम में मिलतीं परवीन बाबी

हालांकि, परवीन बाबी बिन बुलाए ही डैनी के घर पहुंच जातीं। जब किम यशपाल और डैनी डेन्जोंगपा घर पहुंचते, तो परवीन बॉबी एक्टर के बेडरूम में मिलतीं। यह देख किम यशपाल को परेशानी होने लगी और वह परवीन से चिढ़ने लगी थीं। बताया जाता है कि परवीन बाबी के दखल के कारण उनका डैनी डेन्जोंगपा के साथ ब्रेकअप हो गया। उसके बाद किम ने डैनी से कभी बात नहीं की।

अब कहां हैं किम यशपाल? करती हैं ये काम

किम यशपाल अभी काफी समय से मुंबई में ही रह रही हैं। इसके अलावा वह यूरोप आती-जाती रहती हैं। किम ने बताया था कि वहां उनका एक दोस्त है, जिसके साथ मिलकर वह जानवरों और बच्चों के लिए चैरिटी वर्क करती हैं। वह एक क्वालीफाइड डांस टीचर भी हैं। किम यशपाल ने कहा था कि वह अब एक्टिंग में कमबैक करना चाहती हैं, पर उन्हें एक एक्साइटिंग ऑफर की तलाश है। किम ने 32 साल पहले फिल्मों से दूरी बना ली थी। उनकी पिछली फिल्म साल 1993

'परम सुंदरी' में ऐसा कोई नया नहीं है जो दर्शकों को पहले न दिखा हो

सैयारा' जैसी सुपरहिट लव स्टोरी के बाद बॉलिवुड का झुकाव फिर से रोमांटिक कहानियों की ओर नज़र आ रहा है। हाल ही में रिलीज़ 'धड़क 2' के बाद अब तुषार जलोटा लेकर आए हैं 'परम सुंदरी', एक हल्की-फुल्की रोमांटिक फिल्म। कहानी सीधी-सादी है और कई जगह शाहरुख खान–दीपिका पादुकोण स्टारर 'चेन्नई एक्सप्रेस' की याद दिलाती है। हालांकि, इसमें ऐसा कोई नया मोड़ या अनोखापन नहीं है जो दर्शकों को पहले न दिखा हो।

'परम सुंदरी' की कहानी

यह कहानी है परम (सिद्धार्थ मल्होत्रा) की, एक अमीरजादे की, जो पिता (संजय कपूर) के पैसों पर बार-बार बिजनेस में नाकाम हो चुका है। इस बार पिता ने उसे आखिरी मौका दिया है, 30 दिनों में अपना नाम बनाओ, वरना सब खत्म। परम निवेश करता है एक सोलमेट ऐप में और यहीं से शुरू होती है उसकी ज़िंदगी की सबसे बड़ी जंग। ऐप बताता है कि उसकी सोलमेट सुंदरी (जाह्नवी कपूर) केरल में है। दिल्ली से केरल पहुंचा परम पहली नज़र में ही सुंदरी पर दिल हार बैठता है। लेकिन सुंदरी सोशल मीडिया और एल्गोरिदम से दूर, नृत्य की शौकीन, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी लड़की है। उत्तर और दक्षिण की दो बिल्कुल अलग

दुनिया होने के बावजूद, दोनों के दिल धीरे-धीरे करीब आने लगते हैं। मगर मुश्किल यह है कि सुंदरी की शादी उसके बचपन के दोस्त से तय हो चुकी है और शादी की घड़ी नज़दीक है। अब सवाल यह है, क्या परम और सुंदरी का प्यार हर बाधा पार कर सकेगा या किस्मत उन्हें हमेशा के लिए जुदा कर देगी?

आपके पसंद की स्टोरी

अंबानी के घर गणपति में 'देवा श्रीगणेशा' पर ऐसे टूट कर नाचे रणवीर सिंह, वीडियो देख लोग बोले- दिल जीत लिया

'ये तो हमारे जैसी है...' महिमा चौधरी की बेटी को एयरपोर्ट पर मिठाई खाते देख मचले फैंस, बोले- बेस्ट स्टार किड

'परम सुंदरी' रिव्यू

निर्देशक तुषार जलोटा की नॉर्थ बनाम साउथ कल्चर वाली प्रेम कहानी यूनिक हो सकती थी, लेकिन उनकी प्रस्तुति इसे खास नहीं बना पाई। फिल्म का पहला हाफ काफी धीमा है और पंच की कमी खटकती है। इंटरवल पर कहानी में पहला ठोस हुक आता है, जिसके बाद फिल्म थोड़ी रफ्तार पकड़ती है, मगर नएपन का अभाव पूरी तरह झलकता है। रोम-कॉम के पारंपरिक फ़ॉर्मूले बार-बार महसूस होते हैं और सांस्कृतिक टकराव का चित्रण भी घिसा-पिटा लगता है। हालांकि, क्लाइमैक्स दर्शकों को एंटरटेन करता है। तकनीकी पक्ष में संतोषजनक काम हुआ है। संथाना कृष्णन रविचंद्रन की सिनेमैटोग्राफी केरल को एक दिलकश लैंडस्केप में बदल देती है। संगीत की बात करें तो सचिन-जिगर का 'परदेसिया' गाना खूबसूरती से गूंजता है और इसकी कोरियोग्राफी भी कमाल की है। वहीं बैकग्राउंड में बजता 'सुंदरी के प्यार में' दर्शकों का ध्यान खींचता है। आर्टवर्क और कॉस्ट्यूम डिज़ाइन पर की गई मेहनत पर्दे पर साफ झलकती है। कुल मिलाकर, फिल्म यह मेसेज देने की कोशिश करती है कि प्यार डेटिंग ऐप के लेफ्ट-राइट स्वाइप से कहीं आगे की चीज है। यह दिल से महसूस करने का जज़्बा है।

'परम सुंदरी' कास्ट

एक्टिंग के मोर्चे पर सिद्धार्थ मल्होत्रा ने रोमांटिक और कन्फ्यूज़ हीरो की भूमिका को पूरी ईमानदारी से निभाया है। उनका हैंडसम लुक स्क्रीन पर असरदार लगता है। वहीं, मलयाली किरदार सुंदरी के रूप में जाह्नवी कपूर ने प्रभावशाली परफॉर्मेंस दी है। भाषा के लहजे से लेकर बॉडी लैंग्वेज तक, उन्होंने अपने रोल को बखूबी जिया है और अपनी खूबसूरती से भी दर्शकों का दिल जीता है।

सिद्धार्थ और जाह्नवी की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री फिल्म का सबसे बड़ा प्लस पॉइंट साबित होती है। कॉमिक रिलीफ के रूप में मनजोत दर्शकों को हल्की-फुल्की हंसी देते हैं, जबकि पिता की भूमिका में संजय कपूर औसत लेकिन संतुलित प्रदर्शन करते हैं। क्यों देखें: हल्की-फुल्की रोमांटिक कहानियों के शौक़ीन यह फिल्म देख सकते हैं।

पाकिस्तान से रायपुर तक ड्रग्स तस्करी

ड्रोन से बॉर्डर क्रॉस करवाया, देशभर में सप्लाई, पंजाब से मास्टर माइंड पकड़ा गया, थर्ड जेंडर से भी पूछताछ

रायपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। पुलिस ने एक अंतरराष्ट्रीय ड्रग्स तस्कर को गिरफ्तार किया है, जो पाकिस्तान-अफगानिस्तान ड्रग्स सिंडिकेट के जरिए रायपुर भेजता था। गुरुवार देर रात रायपुर पुलिस के अधिकारी उसे पंजाब से लेकर आए हैं। उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस अधिकारी पूरे मामले का जल्द खुलासा करेंगे।

पुलिस की पूछताछ में आरोपी ने बताया है कि, वो पाकिस्तान से ड्रोन के जरिए ड्रग्स मंगवाता था। उसे देश भर में बेचता था। छत्तीसगढ़ पुलिस आरोपियों के नेटवर्क को पहले ही तोड़ चुकी है।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, आरोपियों के गिरोह में थर्ड जेंडर के शामिल होने की आशंका है। पुलिस उन्हें भी बुलाकर पूछताछ कर रही है। देर रात रायपुर एसएसपी, एएसपी क्राइम, डीएसपी क्राइम ने भी आरोपी से पूछताछ की है।

पिछले कुछ महीनों से रायपुर समेत आसपास के जिलों में ड्रग्स सिंडिकेट के खिलाफ कार्रवाई तेज हुई है। अब तक 38 आरोपी अलग-अलग सिंडिकेट से गिरफ्तार किए जा चुके हैं।

इनमें से कुछ को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है, जबकि कई आरोपियों से पूछताछ चल रही है।

पुलिस का दावा है कि बड़े पैमाने पर ड्रग्स नेटवर्क को तोड़ने में सफलता मिल रही है।

पाकिस्तान, दिल्ली और महाराष्ट्र का ड्रग्स बेचकर शहर के युवाओं को निशाना बनाने वाले ड्रग्स सप्लायर्स पर पुलिस की नजर लगातार बनी हुई है। अधिकारियों का कहना है कि ड्रग्स माफिया की जड़ें कमजोर करने के लिए न सिर्फ सप्लायर बल्कि नेटवर्क से जुड़े हर व्यक्ति पर कार्रवाई होगी।

लगातार खबरों का प्रकाशन होने के बाद पुलिस ने मामले को संज्ञान में लिया और अभियान चलाकर ड्रग्स बेचने वालों पर कार्रवाई की। रायपुर पुलिस के अलावा एटीएस और आईबी की टीम भी ड्रग्स सिंडिकेट के खिलाफ जांच कर रही है।

मंत्री राजेश बोले- रामगढ़ आस्था का केंद्र, नहीं होने देंगे नुकसान

केते एक्सटेंशन खदान के कारण रामगढ़ का अस्तित्व संकट में, गलत-रिपोर्ट देकर स्वीकृति की कोशिश

सरगुजा, 29 अगस्त (एजेंसियां)। सरगुजा में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि, मेरे लिए सबसे बड़ी आस्था का केंद्र रामगढ़ है। रामगढ़ देश की ऐतिहासिक और राष्ट्रीय धरोहर है। हम कैसे उसका नुकसान होने देंगे। चाहे जिस भी गतिविधियों से, उत्खनन से रामगढ़ को कोई क्षति पहुंचेगी तो हम उस पर कड़ी कार्रवाई करेंगे।

दरअसल, रामगढ़ का अस्तित्व हसदेव क्षेत्र में संचालित कोयला खदानों के कारण संकट में है। वर्तमान में संचालित पीकेईबी और परसा कोल माइंस में लगातार ब्लास्टिंग से रामगढ़ पहाड़ के पत्थरों में दरारें आ गई हैं। लैंड स्लाइड हो रहा है।

पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव ने गलत रिपोर्ट के आधार पर केते एक्सटेंशन खदान के फारेस्ट डायवर्सन को मंजूरी देने का आरोप लगाते हुए कहा कि, केते एक्सटेंशन के कारण रामगढ़ पहाड़ और जोगीमाड़ा (राम मंदिर) का अस्तित्व संकट में है।

मंत्री बनने के बाद सरगुजा पहुंचे राजेश अग्रवाल ने कहा कि, रामगढ़ देश की धरोहर है। मेरी आस्था रामगढ़ से जुड़ी है, जहां पिछले 50 सालों से हर नवरात्र में जाता हूं। राजेश अग्रवाल ने कहा कि, 37 साल से अष्टमी-नवमीं को वे रामगढ़ में भंडारा लगाते हैं। खुद उपस्थित रहते हैं।

मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि, रामगढ़ को नुकसान नहीं होने दिया जाएगा। ऐसी किसी भी गतिविधि, खनन से रामगढ़ को नुकसान होता है तो कार्रवाई की जाएगी।

रामगढ़ से लगे हसदेव के जंगल में तीन कोल ब्लॉक को मंजूरी दी गई है। इनमें पीकेईबी और परसा खदान में खनन की मंजूरी हो चुकी है। पीकेईबी में कोयला उत्खनन किया जा रहा है।

साय कैबिनेट में 14 मंत्री कांग्रेस ने हाईकोर्ट में दी चुनौती

जज ने याचिकाकर्ता के बैकग्राउंड-समाजसेवा की मांगी जानकारी, मंगलवार को होगी अगली सुनवाई

बिलासपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार में कुछ दिनों पहले तीन नए मंत्री बनाए गए हैं। इससे कैबिनेट में मंत्रियों की संख्या बढ़कर 11 से 14 हो गई है। कांग्रेस ने इसके विरोध में हाईकोर्ट में जनहित याचिका लगाई है। इसमें सामान्य प्रशासन विभाग, मुख्यमंत्री समेत सभी 14 मंत्रियों को पक्षकार बनाया गया है।

हाईकोर्ट ने शुक्रवार को सुनवाई करते हुए याचिकाकर्ता बसदेव चक्रवर्ती से शपथ पत्र मांगा है। कोर्ट ने जनहित लगाए जाने के उद्देश्य देखने के लिए याचिकाकर्ता से शपथ पत्र में उसका बैकग्राउंड और समाजसेवा में किए गए कामों की जानकारी मांगी है। राज्य शासन से भी दिशा निर्देश मांगा गया है।

याचिकाकर्ता ने डिवीजन बेंच के एक फैसले को मद्देनजर रखते हुए जनहित याचिका लगाई है। चीफ जस्टिस रमेश कुमार सिन्हा की डिवीजन बेंच में इसकी सुनवाई हुई। अब अगली सुनवाई मंगलवार (2 सितंबर) को होगी।

सीटों की संख्या के 15% से अधिक नहीं हो सकते

विधानसभा में मंत्रिमंडल के सदस्य कुल सीटों की संख्या के 15% से अधिक नहीं हो सकते हैं। छत्तीसगढ़ में विधानसभा की 90 सीटें हैं।

इस आधार पर मंत्रिमंडल का प्रतिशत 13.50 है। छत्तीसगढ़ में 20 अगस्त को तीन नए मंत्रियों के शपथ के बाद मंत्रिमंडल की कुल संख्या 14 हो गई है, यह 15 प्रतिशत से अधिक है। कांग्रेस इस आधार पर 14वें मंत्री की नियुक्ति का विरोध कर रही है। जबकि भाजपा इसे लेकर हरियाणा में लागू फॉर्मूले का हवाला दे रही है। कांग्रेस का कहना है कि यह संविधान के अनुच्छेद 164 (1क) उल्लंघन है।

अब इसे लेकर कांग्रेस के कार्यकर्ता बसदेव चक्रवर्ती ने हाई कोर्ट में जनहित याचिका लगाई है। इस पर शुक्रवार को सुनवाई की संभावना है।

अफेयर के शक में चाकू से काटा पत्नी का गला

6 महीने पहले की थी लव-मैरिज, आरोपी पति बोला-मैंने संबंध नहीं बनाए, कैसे प्रेग्नेंट हुई

बलौदाबाजार, 29 अगस्त (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार जिले में पति ने चाकू से अपनी पत्नी का गला काट दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पत्नी की हत्या के बाद आरोपी ने लाश को बोरे में भरकर शिवनाथ नदी में फेंक दिया। मामला भाटापारा ग्रामीण थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक मृतिका का नाम संगीता निषाद (22) है। मारने वाले पति का नाम संजू निषाद (21) है। आरोपी पति ने अफेयर के शक में हत्या की है। पत्नी के गर्भ में पल रहे बच्चे को वह अपना नहीं मान रहा था। इसी विवाद में वारदात को अंजाम दिया।

दरअसल, भाटापारा ग्रामीण थाना क्षेत्र के ग्राम धुर्राबांधा की 22 वर्षीय संगीता निषाद की मुलाकात 2024 की शुरुआत में इंस्टाग्राम पर संजू निषाद (21) से हुई थी। दोनों के बीच बातचीत बढ़ी। धीरे-धीरे यह रिश्ता नजदीकी में बदल गया।

मुलाकातें बढ़ीं और दोनों ने शादी का फैसला किया, लेकिन शादी से पहले ही संगीता प्रेग्नेंट हो गई थी। बाद में दवाइयों के जरिए गर्भपात करवाया गया। इसके बावजूद संगीता शादी पर अड़ी रही। आखिरकार 2024 में ही दोनों ने लव मैरिज कर ली।

शादी के बाद बदलने लगे दोनों के बीच रिश्ते

परिजनों से मिली जानकारी के मुताबिक शादी के कुछ महीनों तक सब सामान्य रहा, लेकिन 6 महीने बाद संगीता फिर से गर्भवती हो गई। जब उसकी प्रेग्नेंसी रिपोर्ट पॉजिटिव आई, तो संजू ने उस पर शक करना शुरू कर दिया।

उसका मानना था कि शादी के बाद उसने पत्नी के साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाए, तो फिर गर्भ कैसे ठहर गया। यही बात दोनों के बीच लगातार विवाद का कारण बनने लगी। गर्भवती होने को लेकर रोज किसी न किसी बहाने से दोनों के बीच जमकर लड़ाई होती थी।

18 अगस्त की रात पत्नी को मार डाला

इसी दौरान 18 अगस्त की रात पति-पत्नी के बीच फिर बहस हुई। लड़ाई इतनी बढ़ गई कि संजू ने अपना आपा खो दिया। उसने गुस्से में चाकू उठाया और संगीता का गला रेत दिया। इसके बाद शव को बोरे में भरा और पास की शिवनाथ नदी में फेंक दिया।

आरोपी पति संजू लाश को नदी में बहाने के बाद निश्चिंत होकर घूम रहा था, लेकिन महिला के मायके वालों ने भाटापारा थाने में 20 अगस्त को गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस मामले की जांच कर रही थी। इसी बीच 26 अगस्त को बिलासपुर जिले के पचपेड़ी थाना क्षेत्र में नदी किनारे बोरे में शव मिला।

पचपेड़ी पुलिस ने गुमशुदगी केस से मिलान किया तो शव की पहचान भाटापारा निवासी संगीता निषाद के रूप में हुई। पचपेड़ी पुलिस ने भाटापारा पुलिस को केस हैंडओवर किया। भाटापारा पुलिस ने कॉल डिटेल्स, घरवालों से पूछताछ और घटनास्थल की पड़ताल की।

पुलिस ने डेडबॉडी पर चाकू के वार के निशान मिलने पर पति संजू पर शक हुआ। पुलिस ने संजू को हिरासत में लिया। इस दौरान आरोपी ने पुलिस को गुमराह किया, लेकिन सख्ती से पूछताछ में अपना जुर्म कबूल कर लिया।

एएसपी हेम सागर सिधार ने बताया कि दंपती ने लव मैरिज की थी। शादी के बाद पति चरित्र पर शक करता था। इसी वजह से दोनों के बीच अक्सर विवाद होते थे। वारदात वाले दिन भी झगड़ा हुआ था। इसके बाद आरोपी ने वारदात को अंजाम दिया। आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से कोर्ट ने जेल भेज दिया है।

रायपुर रेलवे स्टेशन पर मोबाइल यूटीएस टिकट सेवा बंद

लॉन्च के 24 घंटे बाद मशीन-टीटीई दोनों गायब अफसर बोले- त्योहारों में फुल-टाइम सर्विस मिलेगी

रायपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। रायपुर रेलवे स्टेशन पर त्योहारी सीजन में यात्रियों की सुविधा के लिए बुधवार को मोबाइल अन-रिजर्व टिकटिंग सिस्टम (यूटीएस) सेवा शुरू की गई थी। रेलवे ने दावा किया था कि इससे यात्रियों को टिकट काउंटर की लंबी लाइन से राहत मिलेगी।

टीटीई मोबाइल डिवाइस के जरिए प्लेटफॉर्म पर ही टिकट जारी कर सकेंगे। लेकिन भास्कर की टीम जब स्टेशन पहुंची, तो न कोई टीटीई इस सेवा का उपयोग करता दिखा और न ही कोई मशीन नजर आई।

कर्मचारियों से बातचीत करने पर पता चला कि रेलवे ने जल्दबाजी में इस डिजिटल सर्विस को लॉन्च तो कर दिया, लेकिन टिकट कैसे काटनी है, मशीन का उपयोग कैसे करना है, इसकी ट्रेनिंग भी नहीं दी गई। जिसके चलते कर्मचारी कन्फ्यूज हैं। फिलहाल, यात्री अब भी काउंटर से ही टिकट खरीद रहे हैं।

वहीं सीनियर डीसीएम अवधेश त्रिवेदी ने कहा कि अभी ये सेवा डेली बेसिस पर शुरू नहीं की गई है। त्योहारों के दिनों में ज्यादा भीड़ होगी तो टीटीई पूरे टाइम तैनात रहेंगे। इसलिए आपको मौके पर टीटीई उस यूटीएस टिकट डिवाइस के साथ नहीं दिखे होंगे।

रायपुर रेलवे स्टेशन पर बुधवार को मोबाइल यूटीएस टिकटिंग सेवा का शुभारंभ किया गया। इस सेवा से टीटीई यात्रियों को ऑन-द-गो टिकट उपलब्ध कराएंगे। सफर के और भी तेज, स्मार्ट और सुविधाजनक होने का दावा किया गया।

27 अगस्त को मंडल रेल प्रबंधक दयानंद ने इस डिजिटल सेवा की शुरुआत की थी। अधिकारियों ने कहा कि यह पहल रेलवे की टिकटिंग प्रणाली को और पारदर्शी और आधुनिक बनाने की दिशा में अहम कदम है।

दावा किया गया कि रेल यात्री अब टिकट काउंटर की लंबी लाइनों से बच सकेंगे। यात्री स्टेशन परिसर या प्लेटफॉर्म पर ही ले सकते हैं। हालांकि, यह सुविधा ट्रेन के अंदर उपलब्ध नहीं होगी। इस सिस्टम के जरिए यात्री जनरल टिकट, सीजन टिकट और प्लेटफॉर्म टिकट आसानी से खरीद सकते हैं।

अधिकारियों ने बताया कि यह सेवा यात्रियों को बेहतर सुविधा देने और टिकट काउंटर पर भीड़ कम करने के उद्देश्य से शुरू की गई है। लेकिन एक दिन बाद ही सारे दावे फेल नजर आए।

नई सेवा के क्रियान्वयन को लेकर रायपुर रेल मंडल के सीनियर डीसीएम अवधेश कुमार त्रिवेदी ने कहा कि हमारी पहली प्राथमिकता क्राउड मैनेजमेंट करना है। फिलहाल, हमने इस सेवा को डेली बेसिस पर शुरू नहीं किया है। जिस दिन भीड़ ज्यादा होगी, इन मशीनों के जरिए ही टिकट काटेंगे।

हजारीबाग में ई-रिक्शा चालक की मिली लाश

गले पर काटने और चेहरे पर गहरे वार के निशान, परिजन को हत्या की आशंका

हजारीबाग, 29 अगस्त (एजेंसियां)। हजारीबाग में गुरुवार की देर रात एक अधेड़ व्यक्ति का शव बरामद किया गया।

घटना शहर के बुढ़वा महादेव मंदिर चौक के पास हुई। शव के गले पर धारदार हथियार से काटने और चेहरे पर गहरे वार के निशान हैं। परिजन हत्या की आशंका जाहिर कर रहे हैं।

मृतक की पहचान लोहसिंघना निवासी फैज अहमद उर्फ कैश (55) के रूप में की गई है। वो ई-रिक्शा चालक था।

परिजनों के अनुसार, रात में काम से वापस घर आने के वक्त यह वारदात हुई है।

परिजनों और स्थानीय लोगों में आक्रोश

घटना की सूचना पाकर आसपास के लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और गंभीर हालत में उसे शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया। यहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

इस घटना की खबर फैलते ही परिजनों और स्थानीय लोगों में आक्रोश फैल गया।

परिजनों का कहना है कि फैज अहमद की हत्या सुनियोजित तरीके से की गई है।

उन्होंने आरोप लगाया कि मृतक के गले पर धारदार हथियार से काटने और चेहरे पर गहरे वार के निशान साफ दिखाई दे रहे हैं। इन परिस्थितियों को देखते हुए परिजन और स्थानीय लोग इसे हत्या का मामला मान रहे हैं।

घटना के बाद सैकड़ों की संख्या में लोग अस्पताल परिसर में जुट गए और पुलिस-प्रशासन से तत्काल मामले का खुलासा करने की मांग की।

आक्रोशित परिजनों और भीड़ ने चेतावनी दी कि यदि इस घटना की सच्चाई सामने नहीं आई और दोषियों की गिरफ्तारी जल्द नहीं हुई, तो वे हजारीबाग में उग्र आंदोलन करेंगे।

इधर, लोहसिंघना थाना प्रभारी निशांत केरकेट्टा ने कहा कि पुलिस पूरे प्रकरण की गंभीरता से जांच कर रही है।

उन्होंने आश्वासन दिया कि जल्द ही पूरी सच्चाई सामने लाई जाएगी और दोषियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

पिकअप वैन और बाइक की टक्कर

मरकच्चो से झुमरीतिलैया जा रहे तीन युवक घायल, एक की हालत नाजुक

कोडरमा, 29 अगस्त (एजेंसियां)। कोडरमा जिले के जयनगर थाना क्षेत्र में पिपचो चौक के पास शुक्रवार सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। करीब पांच बजे मवेशी लदे एक तेज रफ्तार पिकअप वैन ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी।

हादसे में बाइक सवार तीनों युवक घायल हो गए। घायलों में गुरपा निवासी 28 वर्षीय संजय भुईयां, 35 वर्षीय रामावतार भुइयां और पिपचो निवासी 35 वर्षीय सुरेश भुइयां शामिल हैं। तीनों मरकच्चो से झुमरीतिलैया जा रहे थे।

राहगीरों ने 108 एंबुलेंस को सूचना दी।

घायलों को सदर अस्पताल ले जाया गया। संजय और रामावतार का इलाज सदर अस्पताल कोडरमा में चल रहा है।

सुरेश की हालत गंभीर होने के कारण उन्हें रांची के रिम्स रेफर कर दिया गया है। स्थानीय लोगों ने एक पिकअप वाहन को पकड़कर जयनगर पुलिस को सौंप दिया है।

पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है।

इससे यह पता चल सकेगा कि दुर्घटना पकड़े गए वाहन से हुई या किसी अन्य पिकअप से।

जेल में एचआईवी-संक्रमित हुआ तो मंदिरों में करने लगा चोरी

दुर्ग-भिलाई, 29 अगस्त (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में 30 से ज्यादा मंदिरों में चोरी के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। शख्स केवल मंदिरों को ही निशाना बनाता था। इसकी वजह सामने आई तो पुलिस भी हैरान रह गई। आरोपी ने बताया कि 2011-12 में मारपीट के मामले में वह जेल में था। इस दौरान वह ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस (एचआईवी) से संक्रमित हो गया।

इसके लिए उसने भगवान को जिम्मेदार माना। जेल से छूटने के बाद उसने मंदिरों में चोरी करना शुरू कर दिया। इन 10 सालों में उसने दुर्ग-भिलाई जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों के 30 से ज्यादा मंदिरों के ताले तोड़े।

इस दौरान चोरी करने से पहले वह भगवान को प्रणाम करता, फिर चोरी के बाद हाथ जोड़कर बाहर निकलता। आरोपी कभी भी सोने-चांदी या गहने नहीं चुराता था, क्योंकि उसे पकड़े जाने का डर था। चोरी का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है।

दरअसल, 23-24 अगस्त की रात नेवई थाना क्षेत्र के जैन मंदिर में चोरी हुई थी। शिकायत के बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। सीसीटीवी फुटेज और त्रिनयन एप की मदद से पुलिस ने सागर उपाध्याय (परिवर्तित नाम) को हिरासत में लिया। पूछताछ में उसने जुर्म स्वीकार किया। आरोपी के पास से 1282 रुपए के सिक्के और स्कूटी बरामद किया गया है।

मंदिर प्रबंधन के अनुसार दान पेटी में करीब 60 हजार रुपए थे। जानकारी के मुताबिक आरोपी के खिलाफ अलग-अलग थानों में चोरी के 10 से ज्यादा केस दर्ज है।

वारदात से पहले करता था रेकी

पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी अब तक नेवई, सुपेला, पद्मनाभपुर, भिलाई भट्ठी और भिलाई नगर थाना क्षेत्र में 30 से अधिक मंदिरों में वारदात को अंजाम दे चुका है।

वह हर वारदात से पहले मंदिर की रेकी करता था। फिर कपड़े बदलकर पैदल मंदिर जाता और ताले तोड़कर दान पेटी से कैश और सिक्के चुरा लेता था।

पारिवारिक कलह से परेशान महिला ने किया हाई वोल्टेज ड्रामा

हजारीबाग झील में कूदने की दी धमकी, 2 घंटे तक रही बेहोश, पुलिस ने पहुंचाया अस्पताल

हजारीबाग, 29 अगस्त (एजेंसियां)। हजारीबाग में एक महिला ने पारिवारिक कलह से परेशान होकर शुक्रवार को झील परिसर में हंगामा किया। दोपहर 2 बजे स्थानीय लोगों ने महिला को झील किनारे देखा। वह पानी में छलांग लगाने की धमकी दे रही थी।

सूचना मिलते ही लोहसिंघना थाना प्रभारी निशांत केरकेट्टा पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने झील के आसपास सुरक्षा घेरा बना लिया। थाना प्रभारी ने दूर से महिला को समझाने का प्रयास किया। लेकिन वह किसी की बात सुनने को तैयार नहीं थी।

महिला लगातार रो रही थी और आत्महत्या की धमकी दे रही थी। करीब दो घंटे तक यह स्थिति बनी रही। पुलिस ने धैर्यपूर्वक महिला से बातचीत जारी रखी। उसे जीवन का महत्व समझाया और समस्या के समाधान का आश्वासन दिया।

इस दौरान मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई। लोग भी पुलिस के साथ मिलकर महिला को समझा रहे थे। कुछ देर बाद महिला थककर झील के किनारे ही बेहोश हो गई। पुलिस ने तुरंत उसे सुरक्षित बाहर निकाला और एम्बुलेंस से सदर अस्पताल भेजा।

डॉक्टरों के अनुसार, महिला की हालत अब स्थिर है और वह खतरे से बाहर है। पुलिस ने महिला के परिवार से संपर्क किया है और मामले की जांच कर रही है।

झारखंड में 3 सितंबर तक बारिश-बिजली का अलर्ट

30-40 किमी की रफ्तार से चल सकती है हवा, राज्य में सामान्य से 29% अधिक बारिश

रांची, 29 अगस्त (एजेंसियां)। झारखंड में बारिश होने का सिलसिला एक बार फिर से देखने को मिल सकता है। मौसम विभाग ने तीन सितंबर तक राज्य के विभिन्न हिस्सों में बारिश और वज्रपात का अलर्ट जारी किया है। साथ ही 30-40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा भी चल सकती है। मौसम विभाग के अनुसार, राज्य में अगले तीन दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में धीरे-धीरे (3-4) डिग्री सेल्सियस की गिरावट हो सकती है। इसके बाद अगले दो दिनों में इसमें कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है।

वहीं, झारखंड में अब तक (एक जून से 28 अगस्त तक) 1007.4 एमएम बारिश दर्ज हो चुकी है। जबकि इस अवधि में झारखंड में सामान्य बारिश 778.3 एमएम ही होती है। राज्य में अब तक सामान्य से 29% अधिक बारिश हो चुकी है।

बीते दो दिनों से झारखंड के कई हिस्सों में मानसून कमजोर रहा था, लेकिन बंगाल की खाड़ी में बने लो प्रेशर क्षेत्र के कारण अब मौसम का रुख बदलने वाला है। मौसम विभाग के अनुसार, शुक्रवार को राज्य में कहीं-कहीं पर गर्जन और तेज हवा के साथ वज्रपात और बारिश की संभावना है। हवा की रफ्तार 30-40 किलोमीटर प्रति घंटे तक रह सकती है। वहीं, गोड्डा, दुमका, साहिबगंज, पाकुड़, पश्चिमी सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम व सरायकेला में भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है। इन जिलों में यलो अलर्ट जारी किया गया है। जबकि 30 और 31 अगस्त को रांची सहित रामगढ़, खूंटी, बोकारो, लोहरदगा, पलामू, चतरा, लातेहार, गढ़वा और गुमला में वज्रपात के साथ भारी बारिश होने का अलर्ट है।

चोरी के आरोप में युवक की हत्या

पत्नी के सामने रॉड और डंडे से पीटा पति को छोड़ देने की लगाती रही गुहार

जमशेदपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। जमशेदपुर में गुरुवार की देर रात एक युवक की चोरी के आरोप में जमकर पिटाई की गई। इससे युवक की मौत हो गई। घटना सीतारामडेरा थाना क्षेत्र की है।

मृतक की पत्नी का आरोप है कि उसके सामने ही पति की पिटाई की गई।

वो बार-बार पति को छोड़ देने, पुलिस के हवाले कर देने की गुहार लगाती रही पर आरोपी उसकी पिटाई करते रहे।

मृतक की पहचान राहुल भुईयां के रूप में की गई है। इधर, पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। राहुल ठेला चलाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मृतक की पत्नी छाया भुईयां ने बताया कि राहुल रात करीब डेढ़ बजे पेशाब करने के लिए घर से बाहर निकला था। बाहर ही एक भांजा सो रहा था। अचानक वो भागता हुआ घर में आया और बताया कि राहुल मौसा की पड़ोस में स्थित मिथुन फर्नीचर में पिटाई की जा रही है।

पत्नी भी भागती हुई मौके पर पहुंची तो आरोपी चोरी का आरोप लगा राहुल की पिटाई कर रहे थे।

पत्नी ने उनसे गुहार लगाया कि अगर इन्होंने कुछ गलती की है तो पुलिस को सौंप दीजिए पर मारिए नहीं। पर आरोपी रॉड और डंडे से उसकी बुरी तरह पिटाई करते रहे।

मारपीट में राहुल गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजनों ने सीतारामडेरा थाना की पुलिस को इसकी सूचना दी।

थाना प्रभारी निरंजन कुमार टीम के साथ मौके पर पहुंचे। घायल राहुल को एमजीएम अस्पताल ले जाया गया। शुक्रवार सुबह डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

राहुल की मौत के बाद परिजन और स्थानीय लोग एमजीएम अस्पताल पहुंचे। उन्होंने आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन किया।

पुलिस ने मिथुन फर्नीचर के मालिक व मुख्य आरोपी शुभम शर्मा को गिरफ्तार कर लिया है। थाना प्रभारी निरंजन कुमार के अनुसार, अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

टैरिफ के बावजूद पिछले वर्ष से अधिक होगा भारत का निर्यात : उद्योग मंत्री पीयूष गोयल

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। टैरिफ के बावजूद इस साल भारत का निर्यात पिछले साल से अधिक होगा। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने गुरुवार को यह दावा किया है। राजधानी दिल्ली में भारत बिल्डकॉन के कर्टेन रेजर कार्यक्रम में संबोधन के दौरान केंद्रीय मंत्री ने यह बात कही।

भारत न झुकेगा, न कमजोर होगा

उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि किसी भी प्रकार का भेदभाव भारत के 1.4 अरब नागरिकों के आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को प्रभावित करता है। इसे ध्यान में रखते हुए, हम न तो झुकेंगे और न ही कभी कमजोर दिखेंगे। हम साथ मिलकर आगे बढ़ते रहेंगे और नए बाजारों पर कब्जा करेंगे। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि इस वर्ष हमारा निर्यात पिछले वर्ष से भी अधिक होगा।

कुल निर्यात 825 अरब डॉलर के सर्वकालिक स्तर पर पहुंचा

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, पिछले वित्त वर्ष में भारत का कुल निर्यात 824.9 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर को छू गया। यह 2023-24 के 778.1 अरब डॉलर के निर्यात की तुलना में 6.01 प्रतिशत की वृद्धि थी। यह भारत के निर्यात के लिए एक नया मील का पत्थर था। वित्त वर्ष 2024-25 का निर्यात सरकार के शुरुआती अनुमान 800 अरब डॉलर से बढ़कर 824.9 अरब डॉलर हो गया।

वित्त वर्ष 26 के लिए एक ट्रिलियन डॉलर का निर्यात लक्ष्य

सरकार ने चालू वित्त वर्ष 2025-26 में 1 ट्रिलियन डॉलर के निर्यात का लक्ष्य रखा है। आंकड़ों से पता चलता है कि जुलाई 2025 में कुल निर्यात 68.25 अरब डॉलर रहा। यह पिछले वर्ष के इसी महीने के 65.31 अरब डॉलर से वृद्धि दर्शाता है।

वैश्विक निर्यात में भारत की हिस्सेदारी बेहद कम

मंत्री ने कहा कि वैश्विक निर्यात में भारत की हिस्सेदारी बेहद कम है। उन्होंने उन विश्लेषकों की आलोचना की जो अमेरिकी टैरिफ और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके नकारात्मक प्रभाव के कारण भारत के निर्यात की निराशाजनक तस्वीर पेश कर रहे हैं।

भारत पर टैरिफ का कम असर पड़ेगा

कोविड-19 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आई स्थिति और 90 के दशक में अमेरिका के आर्थिक प्रतिबंधों का हवाला देते हुए गोयल ने कहा कि विश्लेषकों को यह समझना चाहिए कि भारत एक आयात पर निर्भर अर्थव्यवस्था है। इसलिए अमेरिका को कम निर्यात का भारत पर कम प्रभाव पड़ेगा । उन्होंने विश्वास जताया कि विभिन्न देशों के साथ हाल ही में हुए व्यापार समझौतों से अर्थव्यवस्था को बढ़ने में मदद मिलेगी।

सरकार निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय लाएगी

गोयल ने कहा कि सरकार निर्यात को बढ़ावा देने के लिए जल्द ही कई उपाय लाएगी। इससे घरेलू पहुंच का विस्तार होगा और विश्वभर के अन्य बाजारों में पूरक अवसरों की तलाश होगी। इससे हमारी वैश्विक पहुंच बढ़ेगी और इस वर्ष हमारा निर्यात पिछले वर्ष के निर्यात से अधिक हो जाएगा।

रिलायंस एजीएम में मुकेश अंबानी का एलान, 2026 की पहली छमाही तक जियो आईपीओ; बोले- भारत तरक्की की राह पर

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। रिलायंस इंडस्ट्रीज की 48वीं वार्षिक आम बैठक यानी एजीएम शुरू हो गई है। इस मौके पर रिलायंस समूह के मुखिया मुकेश अंबानी ने कहा है कि भारत तरक्की की राह पर आगे बढ़ रहा है। कंपनी के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश अंबानी ने लंबे समय से प्रतिक्षित जियो के आईपीओ के बारे में भी बताया। मुकेश अंबानी ने बताया कि आईपीओ के सारे प्रबंध पूरा करते हुए इसे 2026 की पहली छमाही तक लाने की कोशिश होगी। एजीएम में बोलते हुए आरआईएल के प्रमुख मुकेश अंबानी ने कहा कि भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत उभर रहा है और इसे कोई रोक नहीं सकता।

मुकेश अंबानी ने कहा, भारत पहले ही दुनिया की शीर्ष चार अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुका है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की जीडीपी सभी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में सबसे तेजी से बढ़ रही है। भारत को दुनिया के मॉडल की नकल करने की जरूरत नहीं है। हमारे पास अपना विजन है।

हमारे पास अपना इंडिया फर्स्ट मॉडल बनाने की क्षमता है। डीप टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके हमारा मॉडल भारत की सुरक्षा को मजबूत करेगा। लोगों के जीवन को बेहतर बनाएगा और पर्यावरण की रक्षा करेगा। मुकेश अंबानी ने कहा कि जैसे-जैसे रिलायंस अपने स्वर्णिम दशक के समापन की ओर बढ़ रहा है हम 'इंडियन ड्रीम' को साकार करने के लिए समर्पित हैं। उन्होंने कहा कि हम अपने हर व्यवसाय को एआई-नेटिव बना रहे हैं और डीप-टेक क्षमताओं से खुद को मजबूत कर रहे हैं। अंबानी ने कहा कि हमारी वी केयर की फिलॉसफी के साथ लोगों और पर्यावरण की भलाई को प्राथमिकता देते हैं। अंबानी ने कहा कि कंपनी इनोवेशन को केंद्र में रखकर, नई पीढ़ी के नेतृत्व को सशक्त करने पर काम कर रही है। हम निरंतर इसके प्रति निरंतर प्रतिबद्ध बने हुए हैं।

डिज्नी के सीईओ बोले- भारत डिज्नी के लिए सबसे महत्वपूर्ण और रोमांचक बाजार

रिलायंस के एजीएम के दौरान मेटा के संस्थापक व सीईओ मार्क जकरबर्ग और गूगल के सीईओ सुंदर पिचई ने भी अपना संदेश दिया।

एजीएम के दौरान मुकेश अंबानी ने एक नई सहायक कंपनी 'रिलायंस इंटेलिजेंस' का भी अनावरण किया। उन्होंने गूगल और मेटा के साथ गठजोड़ की भी घोषणा की। डिज्नी के सीईओ बॉब इगर ने कहा, भारत दुनिया भर में डिज्नी के लिए सबसे महत्वपूर्ण और रोमांचक बाजारों में से एक है। जियोस्टार ने 30 करोड़ पेड सब्सक्राइबर्स के साथ मनोरंजन उद्योग में तेज़ी से खुद को एक वैश्विक ताकत के रूप में स्थापित किया है।

जियो अब डीप-टेक कंपनी बनी

जियो के चेयरमैन आकाश अंबानी ने रिलायंस एजीएम के दौरान कहा, कंपनी भारत को दुनिया की पहली एआई-नेटिव डिजिटल अर्थव्यवस्था बनाने की नींव डाल रहा है। उन्होंने बताया कि जियो आज 50 करोड़ से अधिक ग्राहकों को सेवा दे रहा है। यह उपलब्धि हर भारतीय के भरोसे से हासिल हो पाई है।

आकाश अंबानी ने कहा कि जियो अब एक डीप-टेक कंपनी बन चुका है। कंपनी ने 5जी से लेकर एआई सेवाओं तक पूरी तरह भारत में विकसित तकनीक से अपनी पहचान बनाई है। आकाश अंबानी बताया कि जियो ने मोबाइल सेवाओं के अलावे ब्रॉडबैंड और एआई-आधारित उत्पादों में भी नई पहचान बनाई है। जियो एयरफाइबर आज दुनिया की सबसे बड़ी फिक्स्ड वायरलेस ब्रॉडबैंड सेवा है। यह हर महीने 10 लाख से अधिक घरों तक अपनी सेवाएं पहुंचा रही है।

सोने-चांदी की कीमत ऑलटाइम हाई पर

10 ग्राम सोना 1.02 लाख के पार, आज 882 महंगा हुआ; चांदी 1,17,572 पर पहुंची

मुंबई, 29 अगस्त (एजेंसियां)। सोने-चांदी के दाम आज यानी शुक्रवार, 29 अगस्त को लगातार दूसरे दिन ऑलटाइम हाई पर हैं। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत आज 882 रुपए बढ़कर 1,02,388 रुपए पर पहुंच गई। कल सोना 1,01,506 रुपए के हाई पर था। वहीं चांदी की कीमत आज 462 रुपए बढ़कर 1,17,572 रुपए के नए हाई पर पहुंच गई। कल एक किलो चांदी 1,17,110 रुपए में बिक रही थी।

देश के 4 महानगरों में सोने-चांदी की कीमत

दिल्ली : 24 कैरेट सोने की कीमत 1,03,460 और 22 कैरेट सोने की कीमत 94,850

मुंबई : 24 कैरेट सोने की कीमत 1,03,310 और 22 कैरेट सोने की कीमत 94,700

कोलकाता : 24 कैरेट सोने की कीमत 1,03,310 और 22 कैरेट सोने की कीमत 94,700

चेन्नई :24 कैरेट सोने की कीमत 1,03,310 और 22 कैरेट सोने की कीमत 94,700

हैदराबाद : 24 कैरेट सोने की कीमत 106,115 प्रति 10 ग्राम, 22 कैरेट के लिए 97,761

विदेशी मुद्रा भंडार 4.386 अरब डॉलर घटकर 690.72 अरब डॉलर पर, आरबीआई ने जारी किए आंकड़े

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 22 अगस्त को समाप्त सप्ताह 4.386 अरब डॉलर घटकर 690.72 अरब डॉलर रह गया। भारतीय रिजर्व बैंक ने शनिवार को यह जानकारी दी। पिछले रिपोर्टिंग सप्ताह में समग्र भंडार 1.488 अरब डॉलर बढ़कर 695.106 अरब डॉलर हो गया था। शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, विदेशी मुद्रा आस्तियां 3.652 अरब डॉलर घटकर 582.251 अरब डॉलर रह गईं। विदेशी मुद्रा आस्तियों में डॉलर के मुकाबले यूरो, पाउंड और येन जैसी अन्य मुद्राओं के उतार-चढ़ाव का भी असर शामिल होता है। आरबीआई ने कहा कि सप्ताह के दौरान स्वर्ण भंडार 665 मिलियन डॉलर घटकर 85.003 अरब डॉलर रह गया।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

पूर्व - अदरक खाकर घर से निकले

सप्तमी 22-46 तक उपरान्त अष्टमी

भाद्रपद शुक्ल ,शनिवार 30 August

विशाखा 14-37 तक उपरान्त अनुराधा

ऐन्द्र 15-09 तक वैधृति

गर 09-35 तक उप वणिज

मुक्ता भरण संतान सप्तमी

राहुकाल 09-10 से 10-43 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा 9247132654 9167555710

दिन का चौघडिया	रात का चौघडिया
काल 06-04 - 07-36 अशुभ	लाभ 18-31 - 19-57 शुभ
शुभ 07-36 - 09-10 शुभ	उत्पात19-57 - 21-23 अशुभ
रोग।। 09-10 - 10-43 अशुभ	शुभ 21-23 - 22-50 शुभ
उत्पात10-43 - 12-17 अशुभ	अमृत 22-50 - 00-17 शुभ
चंचल 12-17 - 13-50 शुभ	चंचल 00-17 - 01-43 शुभ
लाभ 13-50 - 15-23 शुभ	रोग 01-43 - 03-10 अशुभ
अमृत 15-23 - 16-57 शुभ	काल 03-10 - 04-37 अशुभ
काल 16-57 - 18-31 अशुभ	लाभ 04-37 - 06-04 शुभ

हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन बाजार में गिरावट

सेंसेक्स 270 अंक टूटा, निफ्टी 24500 के नीचे

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। इक्विटी बेंचमार्क सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी में शुक्रवार को गिरावट दर्ज की गई। इससे तीसरे दिन भी गिरावट जारी रही, क्योंकि उच्च टैरिफ लगाए जाने और लगातार विदेशी फंडों के बहिर्वाह के कारण निवेशक दबाव में बने रहे। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 61 पैसे गिरकर 88.19 (अनंतिम) के सर्वकालिक निम्नतम स्तर पर बंद हुआ। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 270.92 अंक या 0.34 प्रतिशत गिरकर 79,809.65 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 338.81 अंक या 0.42 प्रतिशत गिरकर 79,741.76 अंक पर बंद हुआ।

वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 74.05 अंक या 0.30 प्रतिशत गिरकर 24,426.85 अंक पर बंद हुआ। पिछले तीन कारोबारी दिनों में बीएसई बेंचमार्क 1,826.26 अंक या 2.23 प्रतिशत गिर चुका है, और निफ्टी 540.9 अंक या 2.16 प्रतिशत गिर चुका है। अमेरिका ने 27 अगस्त से अमेरिका में प्रवेश करने वाले भारतीय सामानों पर 50 प्रतिशत का भारी शुल्क लगा दिया है। इस उच्च शुल्क से कपड़ा, चमड़ा, जूते और झींगा जैसे कुछ श्रम-प्रधान क्षेत्रों के निर्यात पर असर पड़ने की आशंका है। सेंसेक्स की कंपनियों में महिंद्रा एंड महिंद्रा में 2.96 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि रिलायंस इंडस्ट्रीज में 2.21 प्रतिशत की गिरावट आई। इन्फोसिस, एनटीपीसी, टाटा मोटर्स और टेक महिंद्रा भी पिछड़ गए। वहीं आईटीसी, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, ट्रेंट और लार्सन एंड टुब्रो प्रमुख लाभ में रहे। इस बीच, रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी ने शुक्रवार को 2026 की पहली छमाही में रिलायंस जियो की आरंभिक सार्वजनिक पेशकश शुरू करने की घोषणा की। आरआईएल की 48वीं वार्षिक आम बैठक को संबोधित करते हुए अंबानी ने घोषणा की कि जियो अब विदेशों में अपने परिचालन का विस्तार करेगा और अपनी स्वयं की कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक विकसित करेगा। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि निवेशकों की धारणा सतर्क रही क्योंकि बाजार अमेरिकी टैरिफ के पूरे प्रभाव को झेलने की कोशिश कर रहा था। इस मुद्दे के बने रहने से भविष्य में कुछ क्षेत्रों में भारत के निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ने की संभावना है। उन्होंने कहा कि इक्विटी बेंचमार्क का प्रदर्शन कमजोर रहा, खासकर मिडकैप और स्मॉलकैप सेगमेंट जोखिम से बचने और बढ़े हुए मूल्यांकन से प्रभावित हुए। एशियाई बाजारों में, दक्षिण कोरिया का कोस्पी और जापान का निक्केई 225 सूचकांक गिरावट के साथ बंद हुए, जबकि शंघाई का एसएसई कम्पोजिट सूचकांक और हांगकांग का हैंग सेंग सकारात्मक दायरे में बंद हुए। यूरोप के बाजार गिरावट के साथ कारोबार कर रहे थे। गुरुवार को अमेरिकी बाजार बढ़त के साथ बंद हुए।

वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.80 प्रतिशत घटकर 68.07 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने गुरुवार को 3,856.51 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 6,920.34 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। गुरुवार को सेंसेक्स 705.97 अंक या 0.87 प्रतिशत गिरकर 80,080.57 पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी 211.15 अंक या 0.85 प्रतिशत गिरकर 24,500.90 पर बंद हुआ।

जून तिमाही में जीडीपी 7.8 प्रतिशत बढ़ा

राजकोषीय घाटा 29 .9% पर पहुंचा

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। सरकार ने जून तिमाही के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़े जारी कर दिए हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश का सकल घरेलू उत्पाद वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में 7.8 प्रतिशत बढ़ा है। एक साल पहले यह आंकड़ा 6.5 प्रतिशत था। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों में यह भी बताया गया है कि देश का बजटीय घाटा या राजकोषीय घाटा बढ़कर 29.9% पर पहुंच गया है। अप्रैल-जून में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 7.8 प्रतिशत रही। अमेरिका की ओर से विनाशकारी टैरिफ लगाए जाने से पहले बीती पांच तिमाहियों में सबसे अधिक है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र के अच्छे प्रदर्शन के कारण हुई। भारत सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना हुआ है, क्योंकि अप्रैल-जून की अवधि में चीन की जीडीपी वृद्धि 5.2 प्रतिशत थी। आंकड़ों के अनुसार, पिछली उच्चतम जीडीपी वृद्धि 2024 के जनवरी-मार्च में 8.4 प्रतिशत थी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) की ओर से शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, कृषि क्षेत्र में 3.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो 2024-25 की अप्रैल-जून अवधि में 1.5 प्रतिशत थी। हालांकि, वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि मामूली रूप से बढ़कर 7.7 प्रतिशत हो गई, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 7.6 प्रतिशत थी। इस महीने की शुरुआत में, भारतीय रिजर्व बैंक ने 2025-26 के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था, जिसमें पहली तिमाही 6.5 प्रतिशत, दूसरी तिमाही 6.7 प्रतिशत, तीसरी तिमाही 6.6 प्रतिशत और चौथी तिमाही 6.3 प्रतिशत थी।

प्रस्तावित बदलाव लागू हुए तो ऑटो सेक्टर की मांग में होगा इजाफा, जेफरीज की रिपोर्ट में दावा

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। वस्तु व सेवा कर (जीएसटी) की दरों में संभावित कटौती लागू होने पर भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग की मांग में भारी वृद्धि होने की उम्मीद है। अगले महीने दरों में प्रस्तावित बदलाव की घोषणा होने की संभावना है। घोषणा के बाद दोपहिया वाहनों और छोटे यात्री वाहनों को सबसे अधिक लाभ होने की संभावना है। अंतरराष्ट्रीय एजेंसी जेफरीज ने यह दावा किया है। रिपोर्ट के अनुसार, जीएसटी दर में कटौती से अधिकांश वाहनों के लिए कर स्लैब 28 प्रतिशत से घटकर 18 प्रतिशत और ट्रैक्टरों के लिए 12 प्रतिशत से घटकर 5 प्रतिशत हो जाएगी। इससे सड़क पर वाहनों की कीमतें 6-8 प्रतिशत तक कम हो सकती हैं।

जेफरीज ने कहा, बाजार के सामर्थ्य में उल्लेखनीय सुधार होगा और मांग को भी बढ़ावा मिलेगा। इस कटौती के लिए वित्तपोषण तंत्र में तंबाकू, कोयला, एसयूवी और वातित पेय पदार्थों जैसी वस्तुओं पर जीएसटी उपकर को जीएसटी में परिवर्तित करना और कर के दायरे में नई वस्तुओं को जोड़ना शामिल है। दोपहिया वाहनों, जिन पर वर्तमान में 28-31 प्रतिशत कर लगता है, और सब-4 मीटर कारों, जिन पर लगभग 29-31 प्रतिशत कर लगता है, को सबसे अधिक लाभ होने की उम्मीद है। बड़ी एसयूवी, जिन पर वर्तमान में 45 से 50 प्रतिशत कर लगता है, को भी कुछ राहत मिल सकती है, और प्रभावी दरें संभावित रूप से 40 प्रतिशत तक कम हो सकती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, ट्रैक्टरों को जीएसटी में 12 प्रतिशत से 5 प्रतिशत की कमी से लाभ

हो सकता है, हालाँकि इससे उच्च इनपुट लागत के कारण एक उलटा शुल्क ढांचा बन सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 7 से 10 प्रतिशत जीएसटी में कमी से उपभोक्ता धारणा में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है, हाइब्रिड वाहन, जिन पर वर्तमान में अधिकांश राज्य आंतरिक दहन इंजन वाहनों के समान दरों पर कर लगाते हैं, की भी मजबूत मांग देखी जा सकती है यदि दरों को बैटरी इलेक्ट्रिक वाहनों के करीब युक्तिसंगत बनाया जाए, जिन पर केवल 5 प्रतिशत जीएसटी लगता है।जेफरीज ने वित्त वर्ष 26-28 के लिए दोपहिया वाहनों और यात्री वाहनों के लिए उद्योग की बिक्री के अनुमान को 2 से 6 प्रतिशत तक बढ़ा दिया है। वित्त वर्ष 25-28 के दौरान दोपहिया वाहनों के लिए 10 प्रतिशत और यात्री वाहनों के लिए 8 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर का अनुमान लगाया है। ट्रैक्टरों की बिक्री 9 प्रतिशत की सीएजीआर पर बनी रहने की उम्मीद है, जबकि ट्रकों की बिक्री 3 प्रतिशत की धीमी दर से बढ़ रही है। हाल के महीनों में ऑटो उद्योग में मांग में सुस्ती देखी गई है, अप्रैल-जुलाई के दौरान दोपहिया वाहनों और यात्री वाहनों के पंजीकरण में साल-दर-साल केवल 2 से 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

कौन हैं उर्जित पटेल ? आरबीआई गवर्नर पद से दिया था इस्तीफा, अब आईएमएफ में संभालेंगे जिम्मेदारी

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)।केंद्र सरकार ने भारतीय रिजर्व बैंक पूर्व गवर्नर उर्जित पटेल को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में कार्यकारी निदेशक के रूप में नियुक्त करने को मंजूरी दे दी है। उनका कार्यकाल तीन साल की अवधि के लिए होगा। वे केवी सुब्रमण्यन की जगह लेंगे। केवी सुब्रमण्यन की सेवाएं सरकार ने उनके तीन साल के कार्यकाल से छह महीने पहले ही समाप्त कर दी थीं। यह समाप्ति 30 अप्रैल, 2025 से प्रभावी होगी। आदेश में कहा गया, 'मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने अर्थशास्त्री और आरबीआई के पूर्व गवर्नर उर्जित पटेल को आईएमएफ में कार्यकारी निदेशक के पद पर नियुक्त करने को मंजूरी दे दी है। यह नियुक्ति पदभार ग्रहण करने की तिथि से तीन साल की अवधि के लिए या अगले आदेश तक रहेगी, जैसा कि 28 अगस्त, 2025 को जारी एक सरकारी आदेश में कहा गया है।' आईएमएफ का कार्यकारी बोर्ड सदस्य देशों या देशों के समूहों की ओर से चुने गए 25 निदेशकों (कार्यकारी निदेशकों या ईडी) से बना होता है। भारत चार देशों के निर्वाचन क्षेत्र का हिस्सा है, जिसके सदस्य बांग्लादेश, श्रीलंका और भूटान हैं। इस नियुक्ति से पहले उर्जित पटेल एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इंवेस्टमेंट बैंक में निवेश संचालन (क्षेत्र 1) के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे। बीजिंग स्थित इस बहुपक्षीय वित्त पोषण संस्थान के अनुसार, पारिवारिक स्वास्थ्य कारणों से उन्होंने जनवरी 2024 में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

2016 में आरबीआई गवर्नर बने, 2018 में दिया इस्तीफा

उर्जित पटेल ने 2016 में रघुराम राजन के बाद आरबीआई के 24वें गवर्नर का पदभार संभाला था। दिसंबर 2018 में केंद्रीय बैंक की ओर से सरकार को लाभांश हस्तांतरण के मुद्दे पर सरकार के साथ विवाद के बीच उन्होंने अचानक अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

डिप्टी गवर्नर के रूप में भी काम किया

आरबीआई गवर्नर का पद संभालने से पहले उर्जित पटेल ने डिप्टी गवर्नर के रूप में काम किया। उन्होंने मौद्रिक नीति, आर्थिक नीति अनुसंधान, सांख्यिकी एवं सूचना प्रबंधन, जमा बीमा, संचार और सूचना के अधिकार जैसे विभागों का कार्यभार संभाला।

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो,ला, ली, लू, ले, लो, अ,)
आपके करियर और पढ़ाई में दिलचस्प बदलाव आ सकते हैं। पेशेवर रिश्तों को बेहतर बनाने में आपको आराम मिल सकता है। सामाजिक मेलजोल या शारीरिक प्रयासों से संभावित लाभ की उम्मीद की जा सकती है। हालाँकि, आंतरिक तनाव या अवरोध हो सकता है। बीमारी से बचने के लिए तनाव से सावधान रहें।

वृष (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)
आज आप काफी मेहनत के साथ भागदौड़ करेंगे परन्तु उतना संतोषजनक परिणाम मिलना मुश्किल होगा । दिल छोटा न करे । हर दिन एक जैसा नहीं होता और किसी किसी दिन मेहनत काम नहीं आती । आज की घटनायें आपके लिए सबक का काम करेंगी जो आपको कुछ करने के लिए प्रेरित करेंगी जिससे की आप योजना और संधि बनाकर आगे बढ़ सकते है ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह,)
ऊर्जा और मौलिकता आपके करियर के प्रयासों में सहायक होंगी। आप अवसरों को जल्दी पहचान लेते हैं, लेकिन बहस में जल्दबाज़ी करने से बचें। तार्किक सोच कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने में मदद करती है। शिक्षा के क्षेत्र में, स्थिर रहें और दूसरों की आलोचना करने से बचें। समस्याओं को सुलझाने के लिए अपनी मानसिक तीक्ष्णता का उपयोग करें और सुनिश्चित करें कि आपकी बातचीत सहयोगात्मक और रचनात्मक बनी रहे।

कर्क (ही, हू, हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,)
आप स्वाभाविक रूप से शक्ति और अधिकार के लिए आकर्षित रहे हैं और इस वजह से हमेशा आपने ध्यान केंद्रित कर काम किया है। आपका परिश्रम आज फल दे सकता है , लेकिन आप अपना धैर्य बनाये रखें और अपने समय के साथ चले । ये भी आवयशक है की आप अपने मन को भी व्यस्थित एवं खुला रखे ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)
आपका आत्मविश्वास और रचनात्मकता सफलता की राह तय करते हैं, जिससे आप अपने काम में साहसिक कदम उठा पाते हैं। नवीन सोच स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होती है, जिससे आपको समस्याओं का नए दृष्टिकोण से सामना करने में मदद मिलती है। दूसरों के साथ बातचीत के माध्यम से, आप गहरी आत्म-जागरूकता प्राप्त करते हैं।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)
आज आपके कार्य क्षेत्र में आपके सितारे आपका साथ देंगे । ये आपकी वित्तीय जरुरतो के लिए काफी संतोषजनक है , लेकिन यह कार्यालय में ईर्ष्या को भी जन्म देगा । आज आपको अपने सहयोगियों के साथ पुराने बातें भूलकर उनके साथ आगे बढ़ना है परन्तु आपको दुश्मन और दोस्त की पहचान करने की भी जरूरत है।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)
आज का दिन आपके लिए काफी हद तक उत्तम रहेगा । कुछ मुश्किल कार्य जो की आपने समय पर छोड़ दिए थे उन्हें पूरा करने का भी ये उचित समय है । आज के दिन आप अपने सारे रुके हुए कार्य अपनी उम्मीद से ज्यादा पूरा कर पायेंगे और सारा काम का भोज आज खत्म हो सकता है।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,)
आज आप आत्मविश्वास और सकारात्मक रहेंगे । आज किसी भी साक्षात्कार या ग्राहक के साथ किसी भी सौदे को तय करने के लिए एक अच्छा दिन है। आपको आज एक अछा लाभ मिल सकता है । आप दिन के उत्तरार्ध में किसी कार्य को लेकर कुछ अटक सकते है। कल के लिए मनोरंजन या मनोरंजन के लिए अपनी योजनाओं को स्थगित करे एवं अपने सहयोगी से आज मदद ले ।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे)
आपकी प्रेरणा और अनुशासन आपको काम पर ध्यान केंद्रित रखने में मदद करते हैं। रचनात्मक विचार आसानी से प्रवाहित होते हैं, लेकिन भावनात्मक कार्यस्थल स्थितियों में सतर्क रहें। एक व्यावहारिक मानसिकता अच्छे निर्णयों का समर्थन करती है। संघर्षों से बचें और सार्थक अनुभवों को अपने मार्ग को आकार देने दें।

मकर (भो, ज, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी)
आप आज कुछ अतिरिक्त जिम्मेदारी ले। अगर आप इसे अच्छी तरह से करते हैं, तो आपको एक दैनिक आधार पर इस तरह की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। इस के साथ, वेतन में वृद्धि भी आयेगी । इसलिए ईमानदारी से काम करते रहे और लगातार अपने आप को प्रेरित करते रहे। हो सकता है की लाभ आज दिखाई न दे।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)
आपका दिन शांत, केंद्रित काम के लिए अनुकूल हो सकता है जो आपके धैर्य और रचनात्मकता को चमकने देता है। भावनात्मक गहराई कलात्मक कार्यों का समर्थन करती है, जबकि मेष राशि में चंद्रमा से ऊर्जा का विस्फोट आपको पहल करने के लिए प्रेरित करता है। जोखिमों के प्रति सचेत रहें और संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखें। आपका अंतर्ज्ञान आज मूल्यवान मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)
आपका करियर पथ उज्ज्वल रूप से चमकता है, पोषण ऊर्जा और एक सहायक वातावरण प्रदान करता है। आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा, जिससे आपको खुद को रचनात्मक रूप से व्यक्त करने में मदद मिलेगी। मान्यता और अपने पेशेवर आकांक्षाओं में वृद्धि की उम्मीद करें। हालाँकि, मानसिक क्षेत्र में लाभहीन अटकलों और संभावित नुकसान से सावधान रहें।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

सीएम भजनलाल शर्मा ने की खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के आयोजन की तैयारियों की समीक्षा

जयपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान पहली बार खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स की मेजबानी करने जा रहा है। इस खेल आयोजन से प्रदेश की खेल प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने का अवसर मिलेगा तथा यह आयोजन खेल के क्षेत्र में राजस्थान को नई पहचान भी दिलाएगा। ऐसे में इन गेम्स का भव्य एवं सफल आयोजन सुनिश्चित किया जाए ताकि यह पूरे देशभर में मिसाल बन सके। शर्मा गुरुवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के आयोजन की तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने निर्देश दिए कि इन खेल आयोजन में प्रदेश के संभाग मुख्यालयों पर गेम्स आयोजित करने के प्रयास किए जाए एवं ज्यादा से ज्यादा लोगों की सहभागिता तथा प्रदेश के युवाओं का जुड़ाव सुनिश्चित किया जाए।

मुख्य आयोजन से पूर्व गतिविधियां हो आयोजित

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस खेल आयोजन के प्रति लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए नवाचारों को अपनाया जाए। इसके लिए मुख्य आयोजन से पहले पूर्व गतिविधियों के रूप में मैराथन सहित स्कूल-कॉलेज में प्रतियोगिताएं आयोजित की जाए ताकि प्रदेशभर में खेलों के प्रति जागरूकता का संदेश जाए। साथ ही, खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के आयोजन की सहगतिविधियों को राजस्थान की समृद्ध संस्कृति से जोड़ा जाए।

बैठक में मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों एवं अतिथियों के लिए आवास व्यवस्था, दर्शकों की बैठक व्यवस्था एवं खेलों के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता की पूर्ण व्यवस्था के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने आयोजन स्थल पर साफ-सफाई, सौन्दर्यकरण एवं अन्य सभी मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता भी सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया। इस अवसर पर युवा मामले एवं खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सरकार का बड़ा ऐलान आरजीएचएस में होगा बदलाव

जयपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान सरकार ने बड़ा ऐलान किया है। पूर्ववर्ती अशोक गहलोत सरकार की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना राजस्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम (आरजीएचएस) में अहम बदलाव किए जाएंगे। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि सरकार इस योजना को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए फुल-प्रूफ सिस्टम विकसित कर रही है, ताकि लाभार्थियों को समय पर और बाधारहित उपचार मिल सके। योजनान्तर्गत क्लेम यूनिट व क्लेम रिव्यू कमेटी का हाल ही में गठन किया गया है, जिनके द्वारा कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। इसी प्रकार आरजीएचएस में एंटी फ्रॉड यूनिट का गठन किया गया है, जो गड़बडियों की जांच व अनियमितताओं के विरूद्ध कार्रवाई करेगी।

नगर पालिका चेयरमैन के पति की दुकान होगी कुर्क

32 लाख का लोन बकाया होने पर बैंक ने नोटिस चिपकाया

भरतपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। डीग जिले के कामां नगर पालिका अध्यक्ष गीता खंडेलवाल के पति की दुकान पर बैंक ने कुर्की का नोटिस चस्पा कर दिया।

चेयरमैन के पति भगवान दास ने अपनी कंपनी के नाम पर बैंक ऑफ बड़ौदा से लोन लिया था। बैंक ने भगवान दास को कई बार नोटिस दिए। जब उनकी तरफ से कोई जवाब नहीं आया तो, बैंक ने दुकान पर कुर्की का नोटिस चस्पा किया है। बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंधक शनत कुमार ने बताया कि फर्म के प्रोप्राइटर भगवान दास खंडेलवाल उनके बेटे गजेंद्र कुमार पार्टनर विशंभर दयाल पर बैंक का 32 लाख 33 हजार 130 रुपये बकाया था। बैंक कई बार नोटिस देकर लॉन चुकाने को कहा।

भुगतान नहीं होने पर अब कुर्की का नोटिस चस्पा कर कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

बैंक ने डिफॉल्टर घोषित किया

11 फरवरी 2025 बैंक ऑफ बड़ौदा ने चेयरमैन के पति भगवान दास को डिफाल्टर घोषित कर दिया था। बैंक की तरफ से बैंक के बहार 16 डिफॉल्टर की लिस्ट लगाई थी। जिसमें चेयरमैन गीता खंडेलवाल के पति का नाम सबसे ऊपर था। भगवान दास ने बैंक से 26 लाख 4 हजार 27 रुपये का लोन भगवान दास ट्रांसपोर्ट एंड कंस्ट्रक्शन कंपनी के नाम से लिया था। जो ब्याज लगाकर 32 लाख 33 हजार 130 रुपये हो गई। उन्होंने बैंक के नोटिस के बाद भी लोन नहीं चुकाया था।

तेज रफ्तार दो बाइक टकराईं-दो युवकों की मौत

निम्बाहेडा (चित्तौड़गढ़), 29 अगस्त (एजेंसियां)। तेज रफ्तार दो बाइकों की आपस में भिड़ंत हो गई। हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, वहीं दो युवक घायल हो गए। मामला चित्तौड़गढ़ जिले के निंबाहेड़ा सदर थाना थाना क्षेत्र के बाड़ी बाईपास का है। बाड़ी बाईपास चौकी प्रभारी एएसआई बाबूलाल जाखड़ ने बताया-गुरुवार रात 9 बजे सूचना मिली कि चौकी क्षेत्र में पुलिया के पास दो बाइकों की आमने-सामने टक्कर हो गई। सूचना पर पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और चारों घायलों को निंबाहेड़ा हॉस्पिटल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने दो युवकों को मृत घोषित कर दिया, वहीं दो को गंभीर हालत में चित्तौड़गढ़ रेफर कर दिया।

नसीराबाद छावनी सीईओ डॉ. नितिश गुप्ता सम्मानित

> मिला भारतीय सेना की दक्षिणी कमान का प्रतिष्ठित कमेडेशन कार्ड

अजमेर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। देश की प्रतिष्ठित सैन्य कमानों में से एक भारतीय सेना की दक्षिणी कमान द्वारा नसीराबाद छावनी परिषद के मुख्य अधिशासी अधिकारी डॉ. नितिश गुप्ता को जीओसी इन चीफ कमेडेशन कार्ड (प्रशस्ति कार्ड) से सम्मानित किया गया है। छावनी सीईओ डॉ. गुप्ता को यह सम्मान लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ जी.ओ.सी.-इन-सी, दक्षिणी कमान द्वारा एक सैन्य समारोह में प्रदान किया गया, जिसमें सेना के ब्रिगेडियर, कर्नल, मेजर सहित कई वरिष्ठतम अधिकारी मौजूद थे।

क्या है जीओसी इन सी कमेडेशन कार्ड

जीओसी इन चीफ कमेडेशन कार्ड भारतीय सेना का एक उच्चस्तरीय सम्मान है, जो सेना या सिविल सेवाओं में कार्यरत अधिकारियों को उनके असाधारण योगदान, कार्य में उत्कृष्टता तथा सैन्य-सिविल समन्वय को सशक्त बनाने वाले प्रयासों के लिए प्रदान किया जाता है। भारतीय सेना में जीओसी इन चीफ का पद सेना प्रमुख के बाद दूसरा सबसे बड़ा पद माना जाता है। वर्तमान में भारत में 7 जीओसी इन चीफ हैं, जिनमें से 6 ऑपरेशनल और 1 ट्रेनिंग कमांड के अधीन हैं। ऐसे में किसी सिविल अधिकारी को इस स्तर पर सम्मानित किया जाना अहम है।

इसलिए मिला सीईओ डॉ. को सम्मान

छावनी सीईओ डॉ. नितिश गुप्ता का प्रशासनिक मॉडल पारदर्शिता, तत्परता और योजनाबद्ध विकास पर आधारित रहा है। उन्होंने नसीराबाद छावनी को मॉडल कैंटोनमेंट की दिशा में अग्रसर करने का कार्य किया है। नसीराबाद छावनी ने विकास, स्वच्छता, पर्यावरण सुधार, और जनकल्याण के क्षेत्र में कई अभिनव और अनुकरणीय पहलें की हैं।

खैरथल के जवान का हिसार में निधन

खैरथल, 29 अगस्त (एजेंसियां)। खैरथल के जवान का हिसार में निधन हो गया। शुक्रवार को जवान की पार्थिव देह पैतृक गांव किशनगढ़बास के मांचा गांव पहुंची। पार्थिव देह पहुंचते ही क्षेत्र के लोग उमड़ पड़े। अंतिम दर्शन के लिए लोगों की भीड़ जुट गई। पिता के शव को देखते ही 8 साल का बेटा फफक-फफक कर रो पड़ा। कस्बे में अंतिम दर्शन और तिरंगा यात्रा को लेकर बड़ी संख्या में लोग जुटे। घर से श्मशान घाट तक करीब डेढ़ किमी की तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा यात्रा में जनप्रतिनिधि और लोग शामिल हुए। किशनगढ़बास विधायक दीपचंद खैरिया भी अंतिम संस्कार में पहुंचे। उन्होंने पार्थिव देह को पुष्पचक्र भेंट कर श्रद्धांजलि दी।

हर इंसान के जीवन में वनवास आता है : वसुंधरा राजे

वह भी स्थायी नहीं है, आएगा तो जाएगा भी; गलत करने वाले को डर खा जाता है

जयपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। धौलपुर में पूर्व सीएम वसुंधरा राजे सिंधिया ने रामकथा के दौरान कहा-वनवास भगवान राम के जीवन का ही एक हिस्सा नहीं है, हर इंसान का वह एक हिस्सा है। मैं वनवास की बात कर रही हूं। हर इंसान के जीवन में कहीं न कहीं वनवास आ ही जाता है, पर आता है तो जाता भी है। यह हम सबको अपने मन में सोच लेना चाहिए।

वसुंधरा ने कहा-भगवान राम ने हमें यह बताया कि अपने जीवन के अंदर धैर्य क्या चीज होती है, उसको समझने की जरूरत है। दुनिया में कोई चीज स्थायी नहीं है, अगर वह आई है तो जाएगी भी। वनवास भी कोई स्थायी नहीं है, आएगा तो जाएगा भी, इसलिए गठान बंद कर बैठने की कतई जरूरत नहीं है, क्योंकि कभी ऊपर है तो कभी नीचे।

राम राज्य को दिल में बैठाने की जरूरत है

पूर्व मुख्यमंत्री राजे ने कहा- राम राज्य को अपने दिल में बैठाने की जरूरत है। राम राज्य एक ऐसा शासन है, जिसमें 36 कौम साथ रहें, प्यार से एक साथ जिएं। चाहे कोई छोटा हो, चाहे बड़ा हो, चाहे परिवार का हो, उसे परिवार को किस तरह सींचना है? किस तरह आगे ले जाना है, किस तरह उस परिवार को दुनिया के अंदर नामी परिवार बनाना है, यह है राम राज्य।

गलत करने वाले को डर खा जाता है

वसुंधरा राजे ने कहा-हमें वेद विज्ञान में लाने की कोशिश करनी है। जब वह चीज हमारे जीवन में लाते हैं तो फिर किसी चीज से डरने की जरूरत नहीं है। हर आदमी डरता है। आदमी इसलिए डरता है क्योंकि मन में जानता है कि कुछ और करना चाहिए। जब जानता है कि यह गलत है फिर भी अपने हिसाब से करता है, तब उसे डर लगता है। उसे मालूम है कि वह जो करने जा रहा है वह गलत है, और उसके साथ आगे चलकर क्या होगा, उसका डर उसे खा जाता है।

धार्मिक बयान के सियासी मायनों को लेकर चर्चाएं

वसुंधरा राजे ने रामकथा के दौरान धार्मिक अंदाज में जटिल बातें कही, जो अक्सर ऐसे कार्यक्रमों में कथावाचक भी कहते हैं। वसुंधरा राजे के धार्मिक बयानों की सियासी हलकों में चर्चाएं हो रही हैं। सियासी जानकार इन धार्मिक बातों के भी सियासी मायने निकाल रहे हैं। सियासी चर्चाओं की वजह इन बयानों का मौजूदा राजनीतिक हालात से मेल खाने का संयोग भी है। हालांकि वसुंधरा राजे ने रामकथा के दौरान यह भी साफ किया कि यह भगवान राम के वनवास के बारे में है, इसके बावजूद यह बयान सियासी हलकों में चर्चा का मुद्दा बन गया है।

तेज बारिश का कहर : जनजीवन और फसलें प्रभावित, 10 सितंबर तक यलो अलर्ट

जयपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान में मानसून का दौर लगातार सक्रिय बना हुआ है और मौसम विभाग ने 10 सितंबर तक राज्य में यलो अलर्ट जारी किया है। पिछले 24 घंटों में कई जिलों में भारी वर्षा दर्ज की गई, जिससे जनजीवन प्रभावित हो रहा है। बांसवाड़ा जिले में सबसे ज्यादा 5 इंच तक बारिश दर्ज की गई, वहीं झालावाड़, बूंदी, कोटा और जयपुर समेत अन्य जिलों में भी झमाझम बरसात हुई। भारी वर्षा के चलते कुछ जिलों में दुखद घटनाएं भी सामने आईं। सलूंबर के झल्लारा क्षेत्र में एक शिक्षक बाइक समेत नदी में बह गए, वहीं भीलवाड़ा जिले के बड़लियास थाना क्षेत्र में नदी में नहाने गई दो युवतियां पानी का स्तर अचानक बढ़ने से डूब गईं।

नदियों और नालों में तेज बहाव ने ग्रामीण क्षेत्रों में खतरा बढ़ा दिया है। मौसम विभाग के अनुसार वर्तमान में मानसून टर्फ लाइन गंगानगर, शिवपुरी और दमोह होते हुए लो-प्रेशर सिस्टम तक गुजर रही है, जिसके चलते बारिश का दौर जारी है। इसके अलावा एक अन्य टर्फ मध्यप्रदेश से दक्षिणी पंजाब की ओर सक्रिय है, जो राजस्थान में बारिश बढ़ाने का कारण बन रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि मानसून के इस सक्रिय चरण में राज्यभर में हल्की से मध्यम और कहीं-कहीं भारी बारिश की संभावना बनी रहेगी। इसके चलते सड़कों पर जलभराव, फसल नुकसान और जनजीवन प्रभावित होने की आशंका है।

प्रशासन ने प्रभावित जिलों में राहत और बचाव कार्यों के लिए निगरानी बढ़ा दी है। नदी किनारे और निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने की सलाह दी गई है। मौसम विभाग ने चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि बारिश का असर और अधिक गंभीर हो सकता है, इसलिए सभी को सतर्क और सावधान रहना जरूरी है।

3 तस्करों की ढाई करोड़ की संपति फ्रीज

एसपी बोले-आरोपियों ने आलीशान बंगला, स्कॉर्पियो समेत कई गाड़ियां तस्करी से बनाई थी

बाड़मेर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बाड़मेर पुलिस ने तीन हार्डकोर ड्रग्स तस्कर के आलीशान मकान, 2 प्लॉट और 4 गाड़ियों को फ्रीज किया है। तस्करों ने मादक पदार्थ से आय अर्जित की थी। इन संपत्तियों की अनुमानित कीमत करीब ढाई करोड़ रुपए आंकी गई है। एसपी नरेंद्र सिंह मीना का कहना है कि बाड़मेर में पहली बार एक साथ तीन तस्करों के खिलाफ संपति फ्रीज करने की कार्रवाई की गई हैं। उन्होंने बताया कि पुलिस मुख्यालय और जोधपुर रेंज आईजी के निर्देशानुसार मादक पदार्थ तस्करी में लंबे समय से शामिल आरोपियों की अवैध संपति फ्रीज करने की तैयारी थी।

इस प्रक्रिया में हार्डकोर तस्कर गोरधनराम पुत्र डुगराराम निवासी मातासर भुरटिया नागाणा, श्याम सुंदर सावरिया पुत्र लाधुराम निवासी सोमारड़ी सेड़वा, जसवंत उर्फ जसराम उर्पु जसु पुत्र रतनाराम निवासी बायतु पनजी हाल बलदेव नगर बाड़मेर के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा के तहत कार्रवाई के लिए सक्षम अधिकारी एवं प्रशासक एनडीपीएस नई दिल्ली को भेजा गया। वहां संपूर्ण दस्तावेजों को देखने के बाद तीन आरोपियों की करीब ढाई से 3 करोड़ रुपए की अवैध रूप से अर्जित संपति को फ्रीज करने के आदेश दिया गया। अलग-अलग थानाधिकारी को सूचना एकत्रित कर एक्ट के तहत इस्तागासा तैयार करने के निर्देश जारी की गई।

तस्कर गोरधनराम की 60 लाख रुपए की संपति फ्रीज

एसपी के अनुसार- मादक पदार्थ तस्करी में लंबे समय से शामिल आरोपी गोरधनराम ने अपने गांव में एक आलीशान मकान बनाया। काले धन को सफेद करने के लिए प्रयासरत था। प्रशासक दिल्ली से आदेश मिलने के बाद गुरुवार को थानाधिकारी नागाणा मय पुलिस टीम ने गांव मातासर भुरटिया में आरोपी गोरधनराम की करीब 60 लाख रुपए की अवैध अर्जित संपति आवासीय भवन को फ्रीज किया। आरोपी के खिलाफ 7 मामले दर्ज हैं।

तस्कर श्याम सुंदर की 90 लाख रुपए की संपति फ्रीज

सेड़वा पुलिस ने आदेश के बाद आज थानाधिकारी दीपसिंह मय पार्टी ने गांव सोमारड़ी में आरोपी श्याम सुंदर की करीब 90 लाख रुपए की अवैध अर्जित संपति को फ्रीज किया। इसमें 1 आलीशन बंगला, 1 स्कार्पियो, 1 टवेरा, 1 ट्रैक्टर और 1 बोलेरो कैंपर समेत कुल 4 वाहनों को फ्रीज किया गया। इसके खिलाफ 13 मामले दर्ज है। आदेश की पालना में रीको थानाधिकारी मनोज मय पुलिस टीम ने बलदेव नगर बाड़मेर में आरोपी जसंवत उर्फ जसराम की करीब 1 करोड़ रुपए की अवैध अर्जित संपति, 1 आवासीय भवन व 2 भूखंड को फ्रीज किया गया।

रेरा का कड़ा रुख : मनमाने ढंग से किया गया फ्लैट आवंटन रद्द

खरीदार को ब्याज सहित कब्जा देने का आदेश

जयपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी ने एक महत्वपूर्ण फैसले में बिल्डरों की मनमानी पर रोक लगाते हुए, एक खरीदार का फ्लैट आवंटन रद्द करने के बिल्डर के फैसले को अवैध ठहराया है।

यह मामला गोविंद कृपा इन्फ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड (प्रवर्तक) और खरीदार वर्षा शर्मा के बीच का था, जिसमें रेरा ने प्रवर्तक द्वारा जारी किए गए रद्दीकरण पत्र को रद्द कर दिया और उसे ब्याज के साथ खरीदार को फ्लैट का कब्जा देने का निर्देश दिया है। रेरा सदस्य सुधीर कुमार शर्मा की पीठ ने पाया कि गोविंद कृपा इन्फ्राटेक ने अपने प्रोजेक्ट में फ्लैट नंबर 504 के लिए खरीदार वर्षा शर्मा को दिया गया रद्दीकरण नोटिस गैरकानूनी था। यह फैसला इसलिए लिया गया क्योंकि बिल्डर ने नियमों का उल्लंघन करते हुए, कंप्लीशन सर्टिफिकेट (28.06.2023 को मिला) और ऑक्युपेंसी सर्टिफिकेट (11.06.2024 को मिला) प्राप्त करने से पहले ही, 10.04.2023 को मांग पत्र और कब्जे का ऑफर जारी कर दिया था। मामले की सुनवाई के दौरान, खरीदार वर्षा शर्मा के वकील ने आरोप लगाया कि बिल्डर ने उनकी सहमति के बिना फ्लैट का बिल्ट-अप एरिया 486.28 वर्ग फीट से बढ़ाकर 721.37 वर्ग फीट कर दिया, जिससे फ्लैट की कीमत 21,08,768 से बढ़कर 27,14,250 हो गई ।

यह वृद्धि लगभग 29% की थी। इसके अलावा, उन्होंने आरोप लगाया कि बिल्डर द्वारा भेजे गए कथित मांग पत्र और रद्दीकरण नोटिस कभी उन्हें प्राप्त नहीं हुए और ये जाली दस्तावेज थे।

बेनीवाल बोले-किरोड़ीलाल मीणा का ब्लैकमेल करने का धंधा

जयपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल मीणा और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) के सांसद हनुमान बेनीवाल में जुबानी जंग तेज हो गई है। बेनीवाल ने किरोड़ी लाल मीणा पर लोगों को ब्लैकमेल करने का आरोप लगाया। कहा- इन्होंने (किरोड़ीलाल) 2013 में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से 200 करोड़ रुपए लेकर हेलिकॉप्टर उड़ाए थे। मीणा ने वसुंधरा राजे के लिए मुझसे कहा था- ये मुझे रेप केस में फंसाना चाहती है। बेनीवाल ने सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा-2021 पर कहा- सरकार के मंत्री और अधिकारी नहीं चाहते थे कि एसआई भर्ती रद्द हो। जयपुर के शहीद स्मारक पर रात को मीडिया से बेनीवाल ने कहा- राजस्थान सरकार के मंत्री केके बिश्नोई और जोगाराम जैसे सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा रद्द नहीं कराना चाहते थे।

इनके साथ ही कुछ शौकीन मिजाज के अधिकारियों ने अपनी महिला मित्रों को बचाने के लिए मुख्यमंत्री को गलत फीडबैक दिया। इन लोगों के कहने से ही मुख्यमंत्री ने सरकार के स्तर पर भर्ती को रद्द नहीं किया। इससे पूरे प्रदेश और देश को पता चल गया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अक्षम हैं। वह कुछ नहीं कर सकते हैं। इसके बाद हाई कोर्ट को ही न्याय देना पड़ा है। बेनीवाल ने कहा- राजस्थान में आरएलपी के बाद आदिवासी पार्टी आ गई है। जो लोग पार्टियां बनाने के दावे करते थे, उनकी दुकानों पर ताले लग गए। उनका सामान खत्म हो गया है। अब वह लोग बरसाती मेढकों की तरह फुदक रहे हैं। इसलिए अब वह लोग तथ्यहीन बातें और बयान देकर सुर्खियां बटोरने में जुटे हैं।

फर्जी मेडिकल बिल घोटाले का मास्टरमाइंड हिरासत में

झालावाड़, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान सरकार की महत्वाकांक्षी राजस्थान गवर्नमेंट हेल्थ स्कीम में हुए बड़े घोटाले का खुलासा करते हुए झालावाड़ पुलिस ने घोटाले के मुख्य आरोपी और 25,000 के इनामी सहकारी उपभोक्ता मेडिकल स्टोर संचालक कमलेश राठौर को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस अधीक्षक अमित कुमार ने बताया कि आरोपी ने अस्पताल में कार्यरत संविदा कंप्यूटर ऑपरेटर राहुल कुमार जैन के साथ मिलकर राज्य कर्मचारियों के फर्जी मेडिकल बिल और डॉक्टर की पर्चियां तैयार कीं और सरकारी खजाने से लाखों रुपये का गबन किया।

एसआई के बाद अब एसओजी जेईएन-भर्ती पर काम कर रही

एडीजी एसओजी बोले-एसआई भर्ती में 115 अभी भी फरार चल रहे, पेपर लीक गैंग का सुरेश ढाका खामियाजा भुगतेगा

जयपुर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। एसआई भर्ती परीक्षा 2021 की जांच कर रही एसओजी हाईकोर्ट के फैसले के बाद ज्यादा एक्टिव हो कर काम करने लग गई। एडीजी एसओजी वीके सिंह ने बताया- अब तमाम भर्तियां है। अब नया जो केस पेंडिंग पड़ा वो जेईएन भर्ती है। बाकी लेक्चरर भर्ती भी चल रहा है। गड़बड़ी पर काम करने लग गए हैं।

रिजल्ट जल्द आप सब के सामने होंगे। वीके सिंह ने बताया- एसआई भर्ती 2021 में एसओजी की जांच में 27 ऐसे आरोपी हैं, जिनके खिलाफ जांच में पुष्टि हो गई है। वह पेपर लीक में शामिल थे। लेकिन एसओजी की कार्रवाई से पहले ही फरार हो गए थे। उनकी तलाश एसओजी ने एटीएस की मदद से बढ़ा दी है। वहीं, 88 आरोपी ऐसे हैं, जो एसओजी की जांच में संदिग्ध हैं। एडीजी एसओजी वीके सिंह ने बताया- फरार बदमाशों को पकड़ने का काम निरंतर जारी है। वह कब तक भागेंगे उनको आना ही है। इन बदमाशों पर हम लोगों ने सभी प्रकार के प्रेशर बना रखे हैं। जो कानूनी रूप से हमे अधिकारी दिए हुए हैं। उनका हम प्रयोग कर रहे हैं। ये लोग अब ज्यादा समय तक भाग नहीं सकते हैं। हमने पेपर लीक गैंग से जुड़े सुरेश ढाका के खिलाफ (धारा 174 ए) की एफआईआर दर्ज करा दी है। वह जब भी हमारी गिरफ्त में आएगा। उसे इस दर्ज एफआईआर का खामियाजा भुगतना ही पड़ेगा। अब लम्बे दिन तक ये लोग भाग नहीं सकते। बता दें कि आईपीसी की धारा 174ए जानबूझकर न्यायालय के आदेश या सम्मन की अवहेलना करने के अपराध से संबंधित है।

हाईकोर्ट का यह फैसला किसी को निराश नहीं करता। मेरी व्यक्तिगत राय है कि जो सही छात्र थे। उनका सलेक्शन हुआ। आज उनको लग रहा है कि उनकी नौकरी चली गई है। शुरुआत की रैंक में गड़बड़ बहुत बड़ी संख्या में थी। इस भर्ती के रद्द होने से मेरिटोरियस दोबारा नौकरी में आएंगे, अच्छे रैंक पर आएंगे। वहीं, सीनियर बनेंगे। जिन लोगों ने फर्जीवाड़ा किया था वह लोग कचरे की तरह छट जाएंगे। जो लोग नौकरी छोड़ कर आए थे।

जीने की कला का दूसरा नाम है संबोधि-साधना

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्र-संत चन्द्रप्रभ सागर ने कहा कि दिव्य जीवन जीने की कला का दूसरा नाम है संबोधि-साधना। सत्य, शांति, प्रेम, करुणा और आनंद इसके सकारात्मक परिणाम हैं। जीवन के हर कार्य को सजगता एवं प्रसन्नता के साथ सम्पन्न करना ही संबोधि-साधना है। इस साधना में हम सीखते हैं आँख बंद कर कैसे ध्यान करें और आँख खुले तो कैसे ध्यान से हर काम करें। भीतर और बाहर दोनों के साथ ध्यान को जोड़कर हम सहजतापूर्वक योगमय जीवन जी सकते हैं। उन्होंने कहा कि आनंदपूर्वक कर्म करना कर्म-योग है, प्रभु को दिल में बसाकर रखना भक्ति-योग है और सजगतापूर्वक जीना ज्ञान-योग है। इन तीनों योगों को जीवन में उतार लेना संबोधि योग है।

वे शुक्रवार को एग्जिबिशन ग्राउंड में संबोधि ध्यान एवं योग शिविर के शुभारंभ पर प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने कहा कि मन की शांति और आत्मा का आनंद पाने के लिए संबोधि-साधना राजमार्ग है। इस साधना से हमारे तन और मन के रोग कटते हैं, दिल और दिमाग में स्वास्थ्य और संतुलन का संचार होता है, अंतर्मन में ज्ञान के नए रहस्य उद्घाटित होते हैं, हृदय में मुक्ति का कमल खिलता है और रोम-रोम में प्रसन्नता तथा पवित्रता का संचार होने लगता है।

उन्होंने कहा कि संबोधि-साधना पथ के 5 मील के पत्थर हैं - 1. सहजता अर्थात ईजीनेस 2. सकारात्मकता अर्थात पॉजिटिविनेस 3. सचेतनता अर्थात अवेयरनेस,, 4. प्रसन्नता अर्थात हैप्पीनेस, 5. निर्लिप्तता अर्थात फ्रीनेस। उन्होंने कहा कि संबोधि ध्यान मार्ग के रूप में साधना का जो स्वरूप स्थापित किया है वह ध्यानयोग के विभिन्न पहलुओं को जीवन में जोड़कर और अनुभवों की कसौटी पर कस कर ही प्रस्तुत किया है। अनुत्तर योगी भगवान महावीर, तथागत गौतम बुद्ध और महान योगी महर्षि पतंजलि के साधनागत निर्देशों को संबोधि-साधना में शामिल किया गया है। शरीर, मन और आत्मा की शांति और शुद्धि के लिए संबोधि-साधना एक संपूर्ण योग-मार्ग है। इस साधना का किसी जाति, पंथ या परंपरा से कोई संबंध नहीं है। यह हमें सीधे अंतर्मन से जोड़ती है और उसे दिव्य स्वरूप प्रदान करती है।

घरेलू विवाद में पेंटर की हत्या

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। भारतनगर में गुरुवार रात घरेलू विवाद के बाद 22 वर्षीय एक पेंटर की कथित तौर पर हत्या कर दी गई। पीड़ित की पहचान छत्तीसगढ़ निवासी बबलू के रूप में हुई है, जो इलाके में एक इमारत पर काम कर रहा था और पिछले कुछ महीनों से वहीं रह रहा था। राजाराम नामक एक राजमिस्त्री भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ उसी इमारत में रहता था। पुलिस के अनुसार, गुरुवार की रात राजाराम ने बबलू को अपनी पत्नी के साथ पाया और गुस्से में आकर अपने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर उस पर हमला कर दिया। बबलू को कई गंभीर चोटें आईं। स्थानीय निवासियों ने उसे पास के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहाँ डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सनतनगर पुलिस जांच कर रही है और राजाराम की गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं।

जिमखाना मैदान में अज्ञात व्यक्ति का शव मिला

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। बेगमपेट क्षेत्र के अंतर्गत जिमखाना ग्राउंड परिसर में शुक्रवार को एक मध्यम आयु वर्ग के व्यक्ति ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली, जिसकी पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। अनुमान है कि पीड़ित की उम्र लगभग 50 वर्ष है। इस घटना की सूचना सबसे पहले स्थानीय लोगों ने दी, जिन्होंने खेल सुविधा केंद्र की दीवार पर कीलों से बंधी रस्सी से शव को लटका हुआ पाया। सूचना मिलने पर बेगमपेट पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। इस घटना से नियमित रूप से सुबह की सैर करने वाले लोगों और जिमखाना ग्राउंड में आने वाले स्थानीय निवासियों में चिंता पैदा हो गई। पुलिस पीड़ित की पहचान करने की कोशिश कर रही है।

बहुदलीय प्रणाली वाले संसदीय लोकतंत्र में, प्रत्येक राज्य महत्वपूर्ण : भट्टी

जीएसटी दरों के युक्तिकरण पर विभिन्न राज्यों की परामर्श बैठक आयोजित

नई दिल्ली, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। कर्नाटक सरकार ने नई दिल्ली स्थित कर्नाटक भवन में "जीएसटी दरों के युक्तिकरण पर विभिन्न राज्यों की परामर्श बैठक" आयोजित की।

बैठक में 15 प्रमुख बिंदु उठाए। बैठक में तेलंगाना के उप मुख्यमंत्री व वित्त मंत्री भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि हालाँकि हम सभी केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तावित दरों के युक्तिकरण का समर्थन करने के लिए तैयार हैं, फिर भी कल्याणकारी योजनाओं पर इसके नकारात्मक प्रभाव को लेकर गंभीर चिंताएँ हैं। बहुदलीय प्रणाली वाले संसदीय लोकतंत्र में, प्रत्येक राज्य महत्वपूर्ण है। सहकारी संघवाद की भावना के अनुरूप, केंद्र राज्यों से सीधे या परिषद के माध्यम से परामर्श करता। लेकिन.. दुर्भाग्य से दरों के युक्तिकरण की घोषणा एकतरफा कर दी गई। तेलंगाना एक नवगठित राज्य है। तेलंगाना को बहुत अधिक धन की आवश्यकता है।

इसकी बहुत सारी आकांक्षाएँ हैं। हम दशकों से आंदोलन कर रहे हैं। अंततः, हमें एक अलग राज्य मिल गया है। हमने पाया है कि तेलंगाना का जीएसटी राजस्व 2024-25 तक केवल 10 प्रतिशत की सीएजीआर (चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर) प्राप्त कर पाया है। वैट में यह 18 प्रतिशत सीएजीआर है। यदि तेलंगाना ने आर्थिक गतिविधियों की स्वतंत्रता के साथ वैट जारी रखा होता, तो वर्ष 2024-25 के लिए राजस्व 69,373 करोड़ रुपये होता। जीएसटी से प्राप्त राजस्व केवल 42,443 करोड़ रुपये था। बैठक में कर्नाटक - कृष्ण बायरे गौड़ा (राजस्व मंत्री), तेलंगाना - मल्लू भट्टी विक्रमार्क (उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री), पंजाब - हरपाल सिंह चीमा (वित्त मंत्री), केरल - के. एन. बालगोपाल (वित्त मंत्री), झारखंड - राधा कृष्ण किशोर (वित्त मंत्री), तमिलनाडु - थंगम थेन्नारसु (वित्त मंत्री), हिमाचल प्रदेश - राजेश धर्माणी (तकनीकी शिक्षा मंत्री), पश्चिम बंगाल - उज्जैन दत्ता (रेजिडेंट कमिश्नर) ने भाग लिया। इस बैठक के बाद, भट्टी विक्रमार्क ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, 'हमने 3 सितंबर को तमिलनाडु भवन में इसी मुद्दे पर एक बैठक आयोजित करने का निर्णय लिया है। हम वहाँ भी प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करेंगे और केंद्र को रिपोर्ट देंगे।'

तेलंगाना के खेल कार्यक्रम देश के लिए एक आदर्श : मंत्री वक्ति श्रीहरि

दिवंगत ध्यानचंद को भावभीनी श्रद्धांजलि

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना राज्य के खेल एवं युवा सेवा मंत्री वक्ति श्रीहरि ने कहा कि खेल जगत को महान ध्यानचंद की प्रेरणा से आगे बढ़ना चाहिए, जिन्होंने भारतीय खेलों को शाश्वत प्रेरणा दी। वह आज गच्चीबावली स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रत्येक खिलाड़ी को अपनी उत्कृष्ट खेल प्रतिभा से लगातार तीन ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने वाले ध्यानचंद के जीवन को प्रेरणा मानकर ओलंपिक पदक के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

राज्य के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी से प्रोत्साहन प्राप्त करते हुए, मंत्री ने कहा कि तेलंगाना के खिलाड़ियों को न केवल तेलंगाना में ओलंपिक खेलों का आयोजन करना चाहिए, बल्कि ओलंपिक ध्वज जीतने में भी अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने खिलाड़ियों से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने और नई खेल नीति से मिले प्रोत्साहन से तेलंगाना राज्य का नाम रोशन करने का आग्रह किया। खेल प्राधिकरण के अध्यक्ष शिवसेना रेड्डी ने कहा कि तेलंगाना खेल प्राधिकरण को देश के किसी भी अन्य राज्य की तुलना में नौ दिनों तक बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह आयोजित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा मिल रही है। खेल जगत की हस्तियाँ तेलंगाना की प्रशंसा एक ऐसे राज्य के रूप में कर रही हैं जिसने एक वर्ष की अवधि में कई खेल कार्यक्रम आयोजित किए हैं और एक खेल नीति की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना खेल प्राधिकरण और अधिक खेल कार्यक्रमों के साथ खेलों के विकास में योगदान देगा। राज्य सरकार के खेल सलाहकार एपी जितेंद्र रेड्डी ने कहा कि ध्यानचंद जयंती के अवसर पर, खेल विभाग के तत्वावधान में न केवल हैदराबाद शहर में, बल्कि सभी जिला केंद्रों में भी तेलंगाना राज्य में अभिनव और विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। 41 एथलीटों को 1.29 करोड़ रुपये के नकद पुरस्कार दिए गए । विश्व तीरंदाजी अंडर-21 में स्वर्ण पदक जीतने वाली चिकिता तानिपर्थी को 5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया।

पावरलिफ्टर श्रुति को 5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। निशानेबाजी एथलीट ईशा सिंह को 4 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। पावरलिफ्टर थुडी श्री चंदना को 5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। भारतीय क्रिकेट टीम के फील्डिंग कोच टी. दिलीप को 5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया।

25 जुलाई को दक्षिण कोरिया के जी-चेन में आयोजित 20वीं एशियाई रोलर स्केटिंग सीनियर चैंपियनशिप में पदक जीतने वाले तेजेश, कांथी श्री, श्रेया मुरली, एंडुर आकांक्षा, चलंचरला जोहित, जिया जयेश पटेल, रक्षित मुरली, एंडुर संचिता चौधरी और प्रतीक को 5-5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया।

बीआरएस ने की सीएम रेवंत रेड्डी के रिश्तेदारों से जुड़े अनुबंधों की ईडी जांच की मांग

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई है , जिसमें मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी द्वारा कथित भ्रष्टाचार और पद के दुरुपयोग की जांच की मांग की गई है। तेलंगाना में मुख्य विपक्षी दल ने मुख्यमंत्री पर अपने करीबी रिश्तेदारों और सहयोगियों के स्वामित्व वाली शोधा कंस्ट्रक्शन्स और केएलएसआर इंफ्राटेक को हजारों करोड़ रुपये के ठेके दिलाने का आरोप लगाया, जिससे धन शोधन और हितों के टकराव का संदेह पैदा हो गया।

बीआरएस प्रवक्ता मन्ने कृष्णक द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत के अनुसार, रेवंत रेड्डी के साले सृजन रेड्डी की कंपनी शोधा कंस्ट्रक्शन्स ने 2022 में सिर्फ़ 7.1 लाख रुपये की आय दर्ज की थी, लेकिन उसे लगभग 1,600 करोड़ रुपये के ठेके दिए गए। इनमें 1,137 करोड़ रुपये का अमृत परियोजना टेंडर, 115 करोड़ रुपये का सिंगरेनी खनन सौदा और 365 करोड़ रुपये का दिंडी लिफ्ट सिंचाई परियोजना शामिल है।

इसी तरह, केएलएसआर इंफ्राटेक, जो 2018 से ईडी की जाँच के घेरे में है, को कथित तौर पर मौजूदा कांग्रेस शासन में लगभग 678 करोड़ रुपये के ठेके मिले। हाल ही में, राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) के एक न्यायाधीश ने केएलएसआर इंफ्राटेक से जुड़े एक मामले की सुनवाई से खुद को अलग कर लिया, क्योंकि उच्च न्यायपालिका के एक सदस्य ने एक खास पक्ष के पक्ष में आदेश प्राप्त करने का प्रयास किया था।

एग्रीकल्चर मार्केट कमेटी बोइनपल्ली की सरकारी सलाहकार मीटिंग चेयरमैन आनंद बाबू की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इसमें वाइस चेयरमैन डीबी देवेंद्र, एएमसी के सेलेक्शन ग्रेड सेक्रेटरी वेंकन्ना, सरकारी वरिष्ठ सलाहकार मेंबर ए. गौतम जैन, प्रभाकर, असलम सूफी शरथ व अन्य मौजूद थे।

केवीआर पार्क में गणेश पूजा में राजेंद्र कुमार अग्रवाल सुरेंद्र कुमार अग्रवाल गोपाल बलदवा माया अग्रवाल संध्या रानी अग्रवाल विमला बाई संतोष बाई अग्रवाल विट्ठलदास अग्रवाल पी सी जैन राजेंद्र प्रसाद रामप्रसाद बंसल आदित्य बंसल रुचि अग्रवाल अश्विन अग्रवाल भोज रेड्डी विजय कुमार अग्रवाल प्रमोद अग्रवाल विनोद टिकमानी नरेंद्र अग्रवाल अशोक अग्रवाल मोहन लाल मित्तल दीपक कुमार सरायवाला आदि ने भाग लेकर प्रसाद ग्रहण किया।

चल्लुर पंचायत सचिव को एसीबी ने रंगे हाथों पकड़ा

करीमनगर , 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी), करीमनगर इकाई के अधिकारियों ने शुक्रवार को जिले के वीणावंका मंडल के चल्लुर गाँव के पंचायत सचिव कुमाकम नागराज को शिकायतकर्ता से नवनिर्मित मकान को मकान संख्या आवंटित करने के संबंध में आधिकारिक मदद करने के एवज में 20 हजार रुपये की रिश्वत माँगने और स्वीकार करने के आरोप में रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। शिकायत के आधार पर, एसीबी ने आरोपी अधिकारी को चल्लुर गाँव स्थित उसके ग्राम पंचायत कार्यालय से गिरफ्तार किया और उसके कब्जे से 20 हजार रुपये की रिश्वत की राशि बरामद की। आरोप है कि अधिकारी ने अनुचित लाभ प्राप्त करने के लिए अपने कर्तव्यों का अनुचित और बेईमानी से पालन किया। आरोपी को करीमनगर स्थित विशेष पुलिस एवं एसीबी मामलों के विशेष न्यायाधीश के समक्ष पेश किया जाएगा। मामले की जाँच जारी है। सुरक्षा कारणों से शिकायतकर्ता का विवरण गुप्त रखा गया है ।

तेलंगाना डीजी कारागार डॉ. सौम्या मिश्रा का एनटीपीसी का दौरा

हैदराबाद, 28 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। एनटीपीसी एसआरएचक्यू में लैंगिक संवेदनशीलता और यौन उत्पीड़न रोकथाम पर एक सत्र का आयोजन किया गया, जिसका नेतृत्व स्वयं डॉ. सौम्या मिश्रा, आईपीएस, तेलंगाना कारागार एवं सुधार सेवाओं की महानिदेशक ने किया।

यह सत्र एनटीपीसी की अपने सभी कर्मचारियों के लिए एक सुरक्षित, समावेशी और सम्मानजनक कार्यस्थल वातावरण को बढ़ावा देने की निरंतर प्रतिबद्धता का एक हिस्सा था।

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एसएन पाणिग्रही ने कार्यस्थल पर गरिमा और सम्मान की संस्कृति बनाने में जागरूकता और सक्रिय भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डालकर दिन की शुरुआत की।

डॉ. सौम्या मिश्रा का सत्र ज्ञानवर्धक और संवादात्मक दोनों था। विभिन्न विभागों के कर्मचारियों के साथ बातचीत करते हुए, उन्होंने पोश के महत्वपूर्ण महत्व पर ज़ोर दिया, न केवल एक कानूनी अनुपालन आवश्यकता के रूप में, बल्कि संगठनात्मक स्वास्थ्य और उत्पादकता की एक महत्वपूर्ण आधारशिला के रूप में। डॉ. मिश्रा ने यौन उत्पीड़न की पहचान, समाधान और रोकथाम पर व्यावहारिक अंतर्दृष्टि साझा की, और सभी से सतर्क सहयोगी बनने और लैंगिक संवेदनशीलता की वकालत करने का आग्रह किया। डॉ. मिश्रा ने कहा, एक सुरक्षित कार्यस्थल बनाना केवल नीतियों के बारे में नहीं है; यह सहानुभूति, सम्मान और अपनी बात कहने का साहस विकसित करने के बारे में है।

नगर आयुक्त ने कार्यालय में शादी की सालगिरह मनाकर खड़ा कर दिया विवाद

करीमनगर, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हुज़ूराबाद नगर निगम आयुक्त सम्मैय्या ने कार्यालय समय के दौरान अपने कक्ष में अपनी शादी की सालगिरह मनाकर विवाद खड़ा कर दिया।

चूँकि उनकी शादी की सालगिरह गुरुवार को निर्धारित थी, इसलिए उन्होंने अन्य कार्यालय कर्मचारियों के साथ अपने कक्ष में केक काटकर इस अवसर का जश्न मनाया। यह मामला तब विवादों में आ गया जब कमिश्नर ने जनहित के मुद्दों को दरकिनार करते हुए कार्यालय समय में ही अपनी शादी की सालगिरह मनाई। एक शिकायतकर्ता को कमिश्नर से मिलने के लिए लगभग 30 मिनट से एक घंटे तक इंतज़ार करना पड़ा। कमिश्नर द्वारा केक काटकर जश्न मनाने का वीडियो वायरल हो गया।

शी टीम्स ने गणेश उत्सव के दौरान महिलाओं और बच्चों के लिए शुरू किए सुरक्षा उपाय

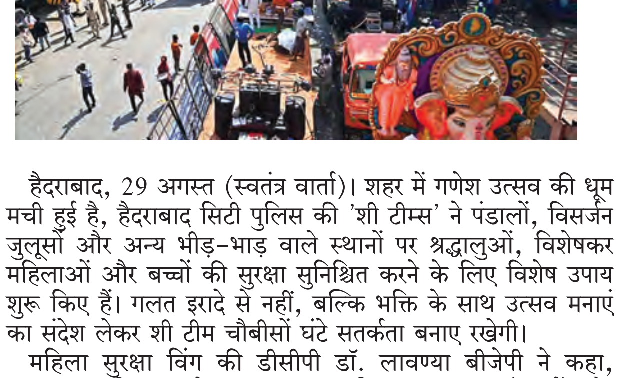

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। शहर में गणेश उत्सव की धूम मची हुई है, हैदराबाद सिटी पुलिस की 'शी टीम्स' ने पंडालों, विसर्जन जुलूसों और अन्य भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर श्रद्धालुओं, विशेषकर महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष उपाय शुरू किए हैं। गलत इरादे से नहीं, बल्कि भक्ति के साथ उत्सव मनाएं का संदेश लेकर शी टीम चौबीसों घंटे सतर्कता बनाए रखेगी।

महिला सुरक्षा विंग की डीसीपी डॉ. लावण्या बीजेपी ने कहा, 'सीसीटीवी निगरानी के साथ मुफ्ती अधिकारी, प्रमुख जंक्शनों और विसर्जन मार्गों पर तैनात रहेंगे ताकि समारोहों पर कड़ी नजर रखी जा सके।' पुलिस ने छेड़छाड़, पीछा करने, दुर्व्यवहार या उत्पीड़न में शामिल पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी है। त्योहारों से पहले सुरक्षा संबंधी दिशानिर्देश जारी करते हुए शी टीम्स ने नागरिकों से सार्वजनिक स्थानों पर सतर्क रहने, सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचने, फर्जी ऑनलाइन प्रोफाइल से सावधान रहने और अपने डिजिटल खातों को मजबूत पासवर्ड और दो-कारक प्रमाणीकरण के साथ सुरक्षित रखने का आग्रह किया।

गणेश विसर्जन के दौरान सुरक्षा उपायों और पुलिस व्यवस्था पर चर्चा

पुलिस आयुक्त ने पुलिस अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद शहर के पुलिस महानिदेशक एवं आयुक्त सी.वी. आनंद की अध्यक्षता में पुरानी हवेली कार्यालय में दक्षिण क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में गणेश विसर्जन के दौरान सुरक्षा उपायों और पुलिस व्यवस्था पर चर्चा की गई। आयुक्त सी.वी. आनंद ने पिछले विसर्जनों के दौरान हुई चूकों के बारे में बताया। आयुक्त ने मिलाद-उन-नबी त्योहार और गणेश प्रतिमा विसर्जन के मद्देनजर कानून-व्यवस्था के संबंध में बरती जाने वाली सावधानियों पर भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि विसर्जन के लिए गणेश प्रतिमाओं के शीघ्र परिवहन हेतु एक कार्य योजना पर चर्चा की गई और सभी अधिकारियों को उचित निर्देश दिए गए। बैठक में स्नेहा मेहरा (डीसीपी, दक्षिण क्षेत्र), के. अपूर्वा राव (डीसीपी, एस.बी.), आर. वेंकटेश्वरलू (डीसीपी, ट्रैफिक), टास्क फोर्स के अधिकारी और दक्षिण क्षेत्र के सभी पुलिस थानों के अधिकारी उपस्थित रहे।

दक्षिण मध्य रेलवे

निविदा संख्याःजीटीएल-इएम-31-2025-26 दि.28-08-2025

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता/रखरखाव/गुण्टकल द्वारा निम्न कार्यों हेतु ई-निविदा आमंत्रित हैं।

निविदा संख्याःजीटीएल-इएम-31-2025-26, कार्य विवरणः गुण्टकल डिवीजन-कदिरीः तत्संबंधित स्टेशन का प्रस्तावित अपग्रेडेशन (1) एन्ट्रेन्स आर्च का प्रावधान (2) सर्कूलेटिंग एरिया का सुधार कार्य (3) प्लाटफार्म आदि पर शौचालयों का प्रावधान-बिजली व्यवस्थाएं। अनुमानित मूल्य रू.1,11,16,422.65/- बंद करने की तिथि व समयः 17-09-2025 के 15.00 बजे

टेंडर बिड्डिंग तथा अन्य विवरण हेतु http://www.ireps.gov.in पर लागिन करें। निविदा का शुध्दिपत्र यदि कोई हो तो,उसे केवल आनलाइन पर ही जारी किया जायेगा। निविदाकारों द्वारा निविदा दस्तावेज को निःशुल्क रूप में http://www.ireps.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

टिप्पणीः। इस ई-निविदा में सहभागिता/बोली मे भाग लेने के लिए, निविदाकार के पास वैध डीएससी (डिजीटल सिग्नेचर सर्टिफिकेट) प्रमाणपत्र होना चाहिए।

वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता, रखरखाव, गुंटकल

खुली ई-निविदा सूचना संख्या बी/ई./ इजीएस /10/2025-26 दि.28-08-2025

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न कार्यों हेतु अधोलिखित विवरित तिथिनुसार समय 15.00 बजे तक ई-निविदा आमंत्रित है।

निविदा संख्याः बी/इ.29/।/इजीएस/16/25-26 दि.26-08-2025, कार्य विवरणः 1) बीजेडए डिवीजनःपीटीएस/बीजेडए पर इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव्ज के लिए, एडीशनल ट्रिप इन्सपेक्शन सुविधाओं का प्रावधान; 2) बीजेडए डिवीजनःआरवायपी; इन्टरमीडिएट ओवरहालिंग का सृजन या क्रियेशन/ वृध्दि तथा ट्रैक मशीनों के लिए, शेड्स एण्ड आफिसेस के स्टोर हेतु पिरियोडिक ओवरहालिंग एवं सीपीओएच/आरवायपी पर 35 टन क्षमतायुक्त सिन्क्रोनाइज्ड जैक्स की आपूर्ति तथा सरफेस ट्रैवर्स का प्रावधान। 3) बीजेडएः सीडीओः- कोचिंग डिपो/बीजेडए पर नई आयओएच शेड के रखरखाव सुविधाओं के कार्यों का विकास करना-बिजली व्यवस्थाएं। पूरा करने की अवधिः 12 महिने, निविदा मूल्य रू.1,24,93,213.60, पूधरा/बोली सुरक्षा राशि रू.2,12,500/-, निविदा दस्तावेज मूल्यः शून्य, बंद करने की तिथिः 17-09-2025

निविदा संख्याः बी/इ.29/।/इजीएस/17/25-26 दि.26-08-2025, कार्य विवरणः बीजेडए डिवीजनःविजयवाडा स्टेशन पर कोच वाटरिंग आरेंजमेन्ट के कैमटेक बूस्टर पम्प हाउस पर खराब उपकरणों या डिफेक्टिव इक्विपमेन्ट/आयटम्स की मरम्मत/प्रतिस्थापन या रिप्लेसमेन्ट कार्य। पूरा करने की अवधिः 06 महिने, निविदा मूल्य रू.82,50,866.00, पूधरा/बोली सुरक्षा राशि रू. 1,65,000/-, निविदा दस्तावेज मूल्यः शून्य, बंद करने की तिथिः 17-09-2025

निविदा नियम शर्तें/ अन्य विवरण जैसे संपूर्ण कार्य विवरण, उपरोक्त कार्य से संबंधित तत्समान स्वभाव के कार्य, योग्यता मानदण्ड आदि निविदा दस्तावेजों में उपलब्ध है, जिसे वेबसाइटःwww.ireps.gov.in पर प्रकाशित किया गया है।

भावी निविदाकारों को सलाह दी जाती है कि, किसी भी निविदा के कोई भी परिवर्तनों/शुध्दिपत्रों को नोट करने के लिए, निविदा बंद करने की तिथि से पहले, वेबसाइटःwww.ireps.gov.in का अवलोकन करें।

रेल प्रशासन के पास, कोई भी कारण न देते हुए, निविदा को रध्द या कैंसल करने का अधिकार सुरक्षित है।

विभागीय रेल प्रबंधक, (बिजली), विजयवाडा

निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से, उप मुख्य यांत्रिक अभियंता/आरवायपीएस, दक्षिण मध्य रेलवे-द.म.रे., वैगन वर्कशाप, गुन्टुपल्ली-521241 द्वारा ई-निविदा आमंत्रित है।

निविदा संख्याः एम237-एबी-14 दि.28-08-2025, कार्य विवरणःवैगन वर्कशाप, रायनपाडू, दक्षिण मध्य रेलवे के परिसरों में 24 महिनों की अवधि के लिए, एयरब्रेक सेक्शन में स्ट्रिप्पिंग, क्लीनींग या साफ सफाई, एयर ब्रेक कम्पोनेन्ट्स की ओवरहालिंग व फिटमेन्ट कार्य।

मात्राः निविदा दस्तावेज में विवरितानुसार

पूरा करने की अवधिः 24 महिने

निविदा मूल्य रू. 2,39,98,587.76 (केवल रु.दो करोड, उनचालीस लाख, अठ्ठानवे हजार, पांचसौ सत्तासी व छिहत्तर पैसे)

जमा की जाने वाली अग्रीम राशि : रू. 2,70,000 (केवल रु.दो लाख, सत्तर हजार)

निविदा दस्तावेज मूल्य रू. शून्य

आफर वैधः खोलने की तिथि से लेकर 60 दिन

निविदा का प्रकारः आयआरजीसीसी-2022 द्वारा शासित कार्य निविदा या वर्क्स टेंडर

निविदा की प्रणालीः खुली निविदा-एकल पैकेट

बोली बंद करने की तिथि व समयः 22-09-2025 के 15.00 बजे

निविदा दस्तावेज एवं शुध्दिपत्रःवेबसाइटःhttp://www.ireps.gov.in देखें।

पत्राचार के लिए डाक का पताः चीफ वर्कशाप मैनेजर, वैगन वर्कशाप, गुंटुपल्ली-521241

उप मुख्य यांत्रिक अभियंता, वैगन वर्कशाप, गुंटुपल्ली

निविदा संख्याः 19_ 2025_ 26_एसआर.डीइइ _टीआर _ एचवायबी दि.26-08-2025

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, एसआर.डीइइ/ टीआर /एचवायबी द्वारा तत्संबंधित निविदा संख्याः 19_ 2025_ 26_एसआर.डीइइ _टीआर _ एचवायबी दि.26-08-2025, बंद करने की तिथिः 19-09-2025 के 15.00 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं। बोलीदातागण अपने मूल/संशोधित बोलियों को, तत्संबंधित बंद करने की तिथि एवं समय तक ही प्रस्तुत कर सकते हैं। इस निविदा के प्रति मैन्युएल आफर्स अस्वीकार्य है तथा इस प्रकार के मैन्युएल आफर्स प्राप्त होने पर उसपर कतई विचार नही किया जायेगा।

कार्य विवरणः हैदराबाद डिवीजनः फलकनुमा रोड नं. 5 एवं 6 को फुल -लेन्थ डेड एन्ड स्पर्स (फेज-1) तक बनाना तथा मौजूदा रोड नं. 6 एण्ड 7 को आर एण्ड डी लाइन में रूपांतरण करना और वन डेड एन्ड स्पर (फेज-2) का प्रावधान। अनुमानित मूल्य रू.2,73,31,714.00, पूधराः रू.2,86,700.00, पूरा करने की अवधिः 4 महिने, बंद करने की तिथिः 19-09-2025

वेबसाइट विवरणः www.ireps.gov.in

संपूर्ण निविदा विवरण देखने हेतु नोटिस बोर्ड स्थानः एसआर.डीइइ/टीआर/एचवायबी का कार्यालय, हैदराबाद भवन, सिकंदराबाद-500025

वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता, (ट्रैक्शन), हैदराबाद

A1291

निविदा नियम शर्तें/अधिक जानकारी तथा निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग हेतु कृपया वेबसाइट्सः https://www.ireps.gov.in अथवा www.scr.indianrailways.gov.in देखें।

पूर्व तट रेलवे

(1) सूचना सं.: eT-North-WAT-32-2025 दिनांक: 22.08.2025

कार्य का नाम : वाल्टियर मण्डल के सहायक मण्डल अभियन्ता/रायगड़ा के अधिकार क्षेत्र के अधीन नए रायगड़ा मण्डल की संस्थापन से संबंधित रायगड़ा स्टेशन पर मौजूदा कार्य (अधिकारी एवं क्वार्टर) का उन्नतीकरण।

कार्य की अनुमानित लागत : ₹ 99,34,011.30, EMD : ₹ 1,98,700/-, कार्य पूरा होने की अवधि : 09 (नौ) महीने।

(2) सूचना सं.: eT-North-WAT-33-2025 दिनांक: 22.08.2025

कार्य का नाम : वाल्टियर मण्डल के रायपुर-विजयनगरम लाइन पर सहायक मण्डल अभियन्ता/रायगड़ा के अधिकार क्षेत्र के अधीन सीनियर सेक्शन इंजीनियर (P.WAY)/रायगड़ा के अधीन 30.09.2026 तक की अवधि के लिए बेरुबाली (EX) से लड्डा (EX) स्टेशन के बीच सेक्शन में P.WAY जोनल (Zonal) कार्य का निष्पादन।

कार्य की अनुमानित लागत : ₹ 1,57,92,000.02, EMD : ₹ 2,29,000/-, कार्य पूरा होने की अवधि : 30.09.2026 तक की अवधि के लिए।

निविदा बंद होने की तिथि व समय : 15.09.2025 को 1500 बजे (दोनों निविदाओं के लिए)।

ऐसी ई-निविदा के तहत डाक / कूरियर / फैक्स या व्यक्तिगत रूप से भेजा गया कोई भी मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जायेगा, भले ही यह फर्म (Firm) के लेटर हेड एवं नियत समय पर प्राप्त किया गया हो। ऐसे सभी मैनुअल प्रस्ताव को अवैध माना जायेगा तथा उसके बारे में किसी विचार के बिना तत्काल निरस्त कर दिया जायेगा।

उपरोक्त ई-निविदा के ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाइट : www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।

द्रष्टव्य : प्रत्याशित निविदाकारों को यह सलाह दी जाती है कि इस ई-निविदा के लिए जारी कोई भी परिवर्तन / शुद्धिपत्र की ओर ध्यान देने के लिए वे निविदा बंद होने की कम से कम 15 (पंद्रह) दिन पहले वेबसाइट का पुन: अवलोकन करें।

मण्डल रेलवे प्रबंधक (इंजीनियरिंग), वाल्टियर

PR-533/Q/25-26

भारत को खेलों में उत्कृष्टता का वैश्विक केंद्र बनाने को प्रतिबद्ध : पीएम मोदी

(फाइल फोटो)

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद को उनके जन्मदिन पर श्रद्धांजलि दी और दोहराया कि उनकी सरकार भारत को खेलों में उत्कृष्टता का वैश्विक केंद्र बनाने के लिये प्रतिबद्ध है। हॉकी के इतिहास के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माने जाने वाले मेजर ध्यानचंद की स्मृति में 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। ध्यानचंद ने 1928, 1932 और 1936 ओलंपिक में भारत को लगातार स्वर्ण पदक दिलाए थे।

प्रधानमंत्री ने एक्स पर लिखा, 'राष्ट्रीय खेल दिवस की बधाई। इस विशेष दिन मेजर ध्यानचंद जी को श्रद्धांजलि जो पीढियों को प्रेरित करते आए हैं।' प्रधानमंत्री ने दोहराया कि उनकी सरकार देश में खेल और फिटनेस की संस्कृति को बढावा देने, खिलाड़ियों को संस्थागत सहयोग मजबूत करने और आधुनिक ट्रेनिंग सुविधाएं तथा स्टेडियम देने के लिये कृतसंकल्प है। पीएम मोदी ने कहा, 'पिछले एक दशक में भारत का खेल परिदृश्य काफी बदल गया है। युवा प्रतिभाओं को तलाशने के लिये जमीनी स्तर के कार्यक्रम से विश्व स्तरीय सुविधायें देने तक हम खेल का अत्याधुनिक इकोसिस्टम बनाना चाहते हैं। हमारी सरकार खिलाड़ियों को सहयोग देना, बुनियादी ढांचा तैयार करना और भारत को खेलों में उत्कृष्टता का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।'

खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने उम्मीद जताई कि राष्ट्रीय खेल प्रशासन विधेयक से भारत खेलों की महाशक्ति बन सकेगा। मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम पर एक कार्यक्रम में भाग लेने के बाद उन्होंने कहा, 'खेल प्रशासन विधेयक पारित करके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने भारत को खेलों में शीर्ष देशों में पहुंचाने की ओर कदम रख दिया है।' उन्होंने कहा, 'भारत में खेलों की परंपरा सदियों से है। मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज खेल महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती पर मैं देशवासियों को राष्ट्रीय खेल दिवस की बधाई देता हूं।'

हरमनप्रीत सिंह की हैट्रिक से जीता भारत

> चीन को अपने पहले मैच में 4-3 से हराया

राजगीर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार के राजगीर में हॉकी एशिया कप का शानदार आगाज हो चुका है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ट्रॉफी का अनावरण किया। भारतीय हॉकी टीम का सामना अपने पहले मैच में चीन से हुआ जिसे मेजबानों ने 4-3 से जीत लिया। इस मुकाबले में कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने तीन गोल दागे और भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई। उनके अलावा एक गोल जुगराज सिंह ने किया। वहीं, चीन की तरफ से चेन बेनहाई, गाओ जियेशेंग और डू शिहाओ ने गोल दागे।

चीन ने पहले क्वार्टर में शुरुआती गोल दागा और भारत के खिलाफ 1-0 की बढ़त हासिल की। दूसरे क्वार्टर में भारत ने वापसी की और हरमनप्रीत और जुगराज के गोल से 2-1 की बढ़त हासिल की। तीसरे क्वार्टर में भारत ने एक और चीन ने दो गोल दागे और स्कोर 3-3 से बराबर कर दिया। चौथे क्वार्टर में भारत के कप्तान ने एक और गोल कर जीत सुनिश्चित कर दी। सभी सात गोल, ड्रैग फ्लिक से हुए। भारत और चीन को पूल ए में जापान और कजाखस्तान के साथ रखा गया है जबकि पूल बी में पांच बार की चैंपियन दक्षिण कोरिया, मलयेशिया, बांग्लादेश और चीनी ताइपे हैं।

चौथे क्वार्टर खेल

कप्तान हरमनप्रीत ने ड्रैग फ्लिक पर अपना तीसरा और भारत का चौथा गोल किया। इसके बाद दोनों टीम की ओर से कोई गोल नहीं हो सका। भारतीय डिफेंस ने शानदार खेल दिखाया और चीन के काउंटर अटैक को रोकने में कामयाबी हासिल की।

तीसरे क्वार्टर का खेल

तीसरे क्वार्टर में भारत 2-1 की बढ़त के साथ उतरा, लेकिन ड्रैग फ्लिक से एक गोल अर्जित करने के बाद दो गोल गंवा दिए। चीन ने शानदार वापसी की और भारतीय डिफेंस पर लगातार दबाव बनाते रहे। काउंटर अटैक के साथ उनके खिलाड़ियों ने शानदार ड्रिब्लिंग दिखाई। इस क्वार्टर में हरमनप्रीत सिंह ने एक गोल किया। चीन की ओर से चेन बेनहाई और गाओ जियेशेंग ने गोल दागे।

दूसरे क्वार्टर का खेल

चीन से पिछड़ चुकी भारतीय टीम ने दूसरे क्वार्टर में शानदार वापसी की और हाफ टाइम तक 2-1 की बढ़त बना ली है। इस दौरान हरमनप्रीत और जुगराज ने ड्रैग फ्लिक पर दो गोल दागे।

पहले क्वार्टर का खेल

भारत ने पहले क्वार्टर में अच्छी शुरुआत की थी और गेंद को गोल पोस्ट के अंदर पहुंचाया था, लेकिन मैच रेफरी ने थर्ड अंपायर से पूछने के बाद उसे फाउल दे दिया। बाद में चीन ने वापसी की और शुरुआती गोल के साथ 1-0 की बढ़त बनाई। डू शिहाओ ने ड्रैगफ्लिक पर यह गोल दागा।

सिनर लगातार 5वीं बार यूएस ओपन के तीसरे राउंड में

पॉप्योरिन को सीधे सेटों में हराया; ओसाका-गॉफ भी जीतीं

स्पोर्ट्स डेस्क, 29 अगस्त (एजेंसियां)। वर्ल्ड नंबर-1 और मौजूदा चैंपियन जैनिक सिनर यूएस ओपन के तीसरे राउंड में पहुंच गए हैं। सिनर की यह ग्रैंड स्लैम में हार्डकोर्ट पर लगातार 23वीं जीत है। अमेरीका के बेन शेल्टन ने भी मेंस सिंगल्स के तीसरे दौर में जगह बना ली है। वहीं, ईगा स्वियातेक, नाओमी ओसाका और कोको गॉफ भी विमेंस सिंगल्स के तीसरे राउंड में पहुंच गई हैं।

सिनर तीसरे राउंड में डेनिस से भिड़ेंगे

सिनर ने दूसरे राउंड में गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के एलेक्सी पॉप्योरिन को 6-3, 6-2, 6-2 से हराया। अगले राउंड में उनका सामना कनाडाई खिलाड़ी डेनिस शापोवालोव से होगा। सिनर और डेनिस की एकमात्र भिड़ंत 2021 ऑस्ट्रेलियन ओपन में हुई थी। इस मुकाबले में शापोवालोव ने पांच सेट में सिनर को शिकस्त दी थी। एक अन्य मुकाबले में शेल्टन ने स्पेन के पाब्लो कारेनो को सीधे सेटों में हराकर तीसरे राउंड में अपनी जगह पक्की की। उन्होंने पाब्लो को 6-4, 6-2, 6-4 से हराया। वर्ल्ड नंबर-3 ईगा स्वियातेक ग्रैंड स्लैम के तीसरे राउंड में पहुंच गई हैं। उन्होंने दूसरे दौर में नीदरलैंड की सजान लैमेंस को 6-1, 4-6, 6-4 से मात दी। पहले सेट में स्वियातेक ने दमदार प्रदर्शन किया, लेकिन दूसरे सेट में कुछ नर्वसनेस और अनफोर्स्ड एरर्स की वजह से लैमेंस ने मैच को ड्रामा में बदल दिया। तीसरे सेट में स्वियातेक ने वापसी की और जीत दर्ज की।

नीरज ने डायमंड लीग फाइनल में लगातार तीसरा सिल्वर जीता

> 85.01 मीटर का थ्रो किया > जर्मनी के वेबर पहले स्थान पर रहे

ज्यूरिख, 29 अगस्त (एजेंसियां)। नीरज चोपड़ा ने डायमंड लीग फाइनल 2025 में दूसरा स्थान हासिल किया। चोपड़ा का डायमंड लीग में लगातार तीसरा सिल्वर मेडल है। उन्होंने 85.01 मीटर का थ्रो किया। स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख शहर के लेट्जिग्रुंड स्टेडियम में गुरुवार को हुए फाइनल में जर्मनी के जूलियन वेबर ने शानदार 91.51 मीटर का थ्रो कर गोल्ड जीता।

वहीं, त्रिनिदाद एंड टोबैगो के केशोर्न वालकॉट ने 84.95 मीटर के साथ ब्रॉन्ज हासिल किया। नीरज ने पहले प्रयास में 84.35 मीटर थ्रो किया। इसके बाद दूसरा थ्रो 82 मीटर रहा। इसके बाद उन्होंने लगातार तीन बार फाउल किया। आखिर में नीरज ने 85.01 मीटर का थ्रो किया और दूसरे नंबर पर रहे।

इससे पहले नीरज तीन साल पहले, यानी 2022 में इसी स्टेडियम में डायमंड लीग के फाइनल में पहले स्थान पर रहे थे। वहीं, 2023 और 2024 में उन्हें उपविजेता बनकर ही संतोष करना पड़ा था। मौजूदा सीजन में उन्होंने 7 प्रतियोगिता में हिस्सा लिया, जिनमें 4 बार जीत दर्ज की और तीन बार उपविजेता रहे हैं। मैच के बाद नीरज ने अपने प्रदर्शन पर कहा, 'आज का दिन थोड़ा मुश्किल था। खेल में हमेशा कुछ कठिन दिन आते हैं, और आज ऐसा ही था। फिर भी, मैंने आखिरी थ्रो में 85 मीटर से ज्यादा की दूरी हासिल की। आज मेरा रन-अप और टाइमिंग सही नहीं थी। मुझे कुछ कमी महसूस हुई, लेकिन विश्व चैंपियनशिप के लिए अभी तीन हफ्ते बाकी हैं। मैं अपनी टाइमिंग को बेहतर करने की पूरी कोशिश करूंगा।' दोहा डायमंड लीग- इस सीजन की बात करें तो नीरज के लिए शुरुआत धमाकेदार अंदाज में हुई थी। मई में उन्होंने दोहा में 90.23 मीटर का थ्रो कर पहली बार 90 मीटर से ज्यादा दूरी का थ्रो किया था। उन्होंने पहले प्रयास में 88.44 मीटर स्कोर किया, जबकि दूसरा थ्रो अमान्य रहा। फिर नीरज ने तीसरे प्रयास में अपने करियर का बेस्ट थ्रो किया। इससे पहले उनका बेस्ट थ्रो 89.94 मीटर था, जो उन्होंने 2022 डायमंड लीग में हासिल किया था। हालांकि, नीरज दोहा डायमंड लीग में दूसरे स्थान पर रहे। जर्मनी के जूलियन वेबर 91.06 मीटर के थ्रो के साथ पहले और ग्रेनेडा के पीटर्स एंडरसन 85.64 मीटर के साथ तीसरे स्थान पर रहे।

पेरिस डायमंड लीग-जून में उन्होंने पेरिस में 88.16 मीटर के प्रयास के साथ वह पहले स्थान पर रहे। उन्होंने पहले ही राउंड में 88.16 मीटर का थ्रो फेंककर जीत सुनिश्चित कर ली। वहीं, इससे पहले उन्होंने 90.23 मीटर थ्रो किया था और दूसरे स्थान पर थे। वहीं पेरिस डायमंड लीग में जर्मनी के जूलियन वेबर 87.88 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ दूसरे नंबर पर रहे। ब्राजील के मौरिसियो लुइज डा सिल्वा ने 86.62 मीटर के थ्रो के साथ तीसरा स्थान हासिल किया।

एआईएफएफ पर संकट के बादलों के बीच उतरेगी भारतीय फुटबॉल टीम

पहला मैच ताजिकिस्तान के खिलाफ

हिसोर (ताजिकिस्तान), 29 अगस्त (एजेंसियां)। भारत शुक्रवार को यहां सीएएफए नेशंस कप में पहली बार शिरकत करेगा और अपने अभियान की शुरूआत सह मेजबान ताजिकिस्तान के खिलाफ करेगा। नवनियुक्त मुख्य कोच खालिद जमील के लिए यह चुनौतीपूर्ण टूर्नामेंट है। वह इस आठ देशों के टूर्नामेंट को नौ और 14 अक्तूबर को सिंगापुर के खिलाफ होने वाले एशियाई कप क्वालिफायर दौर के महत्वपूर्ण मैचों की तैयारी के तौर पर ले रहे हैं। टूर्नामेंट में ज्यादातर मध्य एशियाई देश शामिल हैं। भारतीय फुटबॉल महासंघ पर प्रतिबंध की तलवार लटक रही है। जमील को मोहन बागान सुपर जायंट्स के खिलाड़ियों के बिना भी यहां आना पड़ा। क्लब ने अपने सात खिलाड़ियों को इस आधार पर रिलीज नहीं किया था कि यह टूर्नामेंट फीफा अंतरराष्ट्रीय मैच विंडो में नहीं आता है। स्टार स्ट्राइकर सुनील छेत्री को भी बाहर रखा गया। जमील ने उनसे बात की थी क्योंकि यह टूर्नामेंट इससे बेहद महत्वपूर्ण एशियाई कप क्वालिफायर की तैयारी के लिए है। सभी 23 खिलाड़ी आईएसएल क्लबों से हैं जिनमें से कुछ क्लब ने या तो अपनी पहली टीमों के भुगतान या परिचालन रोक दिए हैं क्योंकि आयोजक एफएसडीएल ने 11 जुलाई को शीर्ष स्तरीय लीग को स्थगित कर दिया था। भारत को ग्रुप बी में रखा गया है और शुक्रवार के बाद उसका सामना एक सितंबर को ईरान और चार सितंबर को अफगानिस्तान से होगा। इस बीच ग्रुप ए में सह-मेजबान उज्बेकिस्तान, किर्गिज गणराज्य, तुर्कमेनिस्तान और ओमान शामिल हैं। प्रत्येक ग्रुप की शीर्ष टीमें फाइनल में एक-दूसरे से भिड़ेंगी जबकि दूसरे स्थान पर रहने वाली दो टीमें तीसरे स्थान के लिए मैच खेलेंगी। दोनों मैच आठ सितंबर को खेले जाएंगे। जमील टूर्नामेंट से पहले बेंगलुरु में अपनी टीम के 10 दिवसीय तैयारी शिविर से संतुष्ट दिखे। उन्होंने मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'हमने सीएएफए नेशंस कप के लिए अच्छी तैयारी की थी। यहां आने से पहले हर खिलाड़ी ने कड़ी मेहनत की थी। इस टूर्नामेंट में हिस्सा लेना हमारे लिए खुशी की बात है।' भारत और ताजिकिस्तान पहले पांच बार एक-दूसरे से भिड़ चुके हैं जिनमें से मध्य एशियाई देश ने तीन बार जीत हासिल की है।

कोरिया ने हॉकी एशिया कप में चीनी ताइपे को एकतरफा अंदाज में रौंदा

राजगीर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राजगीर टूर्नामेंट का दूसरा मैच पूल बी में कोरिया और चीनी ताइपे को बीच खेला गया। कोरिया की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए चीनी ताइपे को 7-0 से रौंद दिया। मैच के चारों क्वार्टर में कोरिया की टीम ने ताइपे पर दबाव बनाकर रखा।

हालांकि, पहला क्वार्टर गोलरहित बराबरी पर खत्म हुआ। इस दौरान कोरिया की टीम ने गोल करने के कई मौके पर बनाए, पर सफलता नहीं मिली। दूसरे क्वार्टर में कोरिया की टीम ने लगातार हमले जारी रखे और तीन गोल दाग दिए। इसी तरह, तीसरे क्वार्टर में तीन गोल दागकर टीम की बढ़त 6-0 कर दी। अंतिम क्वार्टर में कोरिया की टीम ने एक गोल दागकर स्कोर 7-0 कर दिया।

एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप में गुरप्रीत को पहला गोल्ड

जूनियर टीम ने 4 मेडल जीते; भारत 82 मेडल के साथ टॉप पर

शिमकेंट, 29 अगस्त (एजेंसियां)। कजाकिस्तान के शिमकेंट में चल रहे 16वें एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप में भारत के रियो ओलिंपियन गुरप्रीत सिंह ने 25 मीटर स्टैंडर्ड पिस्टल में गोल्ड मेडल जीता। वहीं, उनके साथी अमनप्रीत सिंह ने सिल्वर मेडल हासिल किया। इसके साथ ही दोनों ने हर्ष गुप्ता के साथ मिलकर टीम गोल्ड भी जीता, जिसमें उनका संयुक्त स्कोर 1709 रहा। इस के साथ भारत का मेडल टैली में कुल 82 मेडल हो गए, जिसमें 44 गोल्ड, 20 सिल्वर और 18 ब्रॉन्ज शामिल हैं।

37 साल क गुरप्रीत सिंह ने अपने करियर का पहला अंतरराष्ट्रीय गोल्ड मेडल जीता। उन्होंने 12 साल पहले तेहरान में हुई एशियाई चैंपियनशिप में इसी इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। गुरप्रीत और अमनप्रीत दोनों ने 572 का समान स्कोर बनाया, लेकिन गुरप्रीत के 18 इनर सर्कल शॉट्स की तुलना में अमनप्रीत के 11 इनर सर्कल शॉट्स थे, जिसके कारण गुरप्रीत ने गोल्ड हासिल किया। इस स्पर्धा में चीन के सु लियानबोफान ने ब्रॉन्ज मेडल जीता।

जूनियर 25 मीटर स्टैंडर्ड पिस्टल में भी तीन मेडल 25 मीटर स्टैंडर्ड पिस्टल जूनियर इवेंट में भारत को तीन मेडल मिले। सूरज शर्मा ने 571 के स्कोर के साथ सिल्वर और तनिष्क नायडू ने 568 के स्कोर के साथ ब्रॉन्ज मेडल जीता। इन दोनों ने मुकेश नीलावल्ली के साथ मिलकर जूनियर टीम गोल्ड मेडल भी हासिल किया, जिसमें उनका संयुक्त स्कोर 1703 रहा। 50 मीटर राइफल प्रोन स्पर्धा में भारत को इंडिविजुअल मेडल तो नहीं मिले, लेकिन जूनियर वर्ग में सामी उल्लाह खान, आद्रियन कर्माकर और कुशाग्र सिंह राजावत की तिकड़ी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 1844.3 के संयुक्त स्कोर के साथ टीम गोल्ड मेडल अपने नाम किया।

जिम्बाब्वे के विकेटकीपर ब्रेंडन टेलर ने रचा इतिहास

नई दिल्ली, 29 अगस्त (एजेंसियां)। जिम्बाब्वे के अनुभवी बल्लेबाज ब्रेंडन टेलर भ्रष्टाचार के कारण निलंबन के बाद लंबे समय तक खेल से दूर रहने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सफल वापसी करते हुए बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम किया है। 39 वर्षीय टेलर को श्रीलंका के खिलाफ पहले वनडे में जिम्बाब्वे की प्लेइंग 11 में मौका मिला। इसके साथ ही वह तीसरे सबसे लंबे वनडे करियर वाले खिलाड़ी बन गए। अब वह केवल मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर और सनत जयसूर्या से पीछे हैं। टेलर ने हाल ही में इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल द्वारा लगाए गए साढ़े तीन साल के प्रतिबंध को पूरा किया।

वह 2021 के बाद अपना पहले मैच अगस्त की शुरुआत में न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट के दौरान खेले। इसके साथ ही टेलर 21वीं सदी में डेब्यू करने वाले खिलाड़ियों में सबसे लंबे टेस्ट करियर वाले खिलाड़ी बन गए थे। हरारे में शुक्रवार (29 अगस्त) को चार वर्षों में अपना पहला एकदिवसीय मैच खेलने वाले टेलर के नाम 1 जनवरी 2001 के बाद वनडे में डेब्यू करने वाले बल्लेबाजों में सबसे लंबे एकदिवसीय करियर का रिकॉर्ड हो गया।

हीरो एशिया कप 2025 की धमाकेदार शुरुआत

मलयेशिया ने बांग्लादेश को 4-1 से हराया

राजगीर, 29 अगस्त (एजेंसियां)। राजगीर के अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में शुक्रवार को हीरो एशिया कप 2025 की शुरुआत हुई। पहले मुकाबले में मलयेशिया ने बांग्लादेश को 4-1 से शिकस्त दी। मैच सुबह नौ बजे शुरू हुआ और पहले क्वार्टर में दोनों टीमों के बीच कड़ा मुकाबला देखने को मिला। चौथे मिनट में बांग्लादेश को पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन उसे गोल में तब्दील नहीं किया जा सका।

दूसरे क्वार्टर के 16वें मिनट में बांग्लादेश के इस्लाम अशरफुल ने शानदार गोल कर टीम को बढ़त दिलाई। हालांकि, 23वें मिनट में मलयेशिया के हामसानी अशरन ने गोल कर स्कोर बराबर कर दिया। हाफ टाइम तक मुकाबला 1-1 की बराबरी पर रहा। तीसरे क्वार्टर के 35वें मिनट में मलयेशिया के अनुअर अकीमुल्लाह ने गोल दागकर टीम को बढ़त दिलाई। इसके बाद 45वें मिनट पर अबुदु राउफ मुजाहिर ने तीसरा गोल कर बढ़त को और मजबूत किया।

चौथे क्वार्टर में बांग्लादेश ने लगातार पेनल्टी कॉर्नर के मौके बनाए, लेकिन उन्हें गोल में तब्दील नहीं कर सका।

इसी बीच मलयेशिया के चोलन सैयद ने अंतिम क्वार्टर में चौथा गोल दागकर जीत पक्की कर दी। पूरे मैच में बांग्लादेश को कई मौके मिले लेकिन मलयेशियाई डिफेंस और गोलकीपर ने उन्हें नाकाम कर दिया। अंततः मुकाबला 4-1 के स्कोर के साथ मलयेशिया के नाम रहा।

राजीव शुक्ला बीसीसीआई के कार्यवाहक अध्यक्ष बने

स्पोर्ट्स डेस्क, 29 अगस्त (एजेंसियां)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर रोजर बिन्नी ने बीसीसीआई अध्यक्ष का पद छोड़ दिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, बोर्ड के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला को कार्यवाहक अध्यक्ष बनाया गया है। इससे पहले, 65 साल के शुक्ला बीसीसीआई के वाइस प्रेसिडेंट थे। हाल ही में बीसीसीआई सूत्रों ने बताया था, मौजूदा प्रेसिडेंट रोजर बिन्नी जुलाई महीने में 70 साल के हो जाएंगे। बीसीसीआई के नियम के अनुसार, किसी भी पदाधिकारी को 70 साल की उम्र के बाद अपना पद छोड़ना होगा। बिन्नी ने 2022 में सौरव गांगुली की जगह बोर्ड के अध्यक्ष का पद संभाला था। वे 19 जुलाई को 70 साल के हो गए। रिपोर्ट्स के मुताबिक, राजीव शुक्ला कुछ महीनों के लिए कार्यभार संभालेंगे। वो नए अध्यक्ष चुने जाने तक कार्यवाहक अध्यक्ष के रूप में काम करेंगे। शुक्ला साल 2020 से बीसीसीआई के वाइस प्रेसिडेंट के पद पर काम कर रहे हैं। 1983 में भारतीय क्रिकेट टीम के हिस्सा थे।

अध्यक्ष ने विधानसभा और विधान परिषद के विशेष सत्रों की तैयारियों की समीक्षा की

सभी विभागों के अधिकारियों को सहयोग करने की आवश्यकता : गुत्ता सुखेंद्र रेड्डी

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। विधानसभा अध्यक्ष गद्दाम प्रसाद कुमार ने अधिकारियों को विधानसभा और विधान परिषद के विशेष सत्रों को बिना किसी बाधा के सुचारू रूप से संचालित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए हैं।

अध्यक्ष ने शुक्रवार को अपने विधानसभा कक्ष में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक बुलाई ताकि शनिवार से शुरू होने वाले विधानसभा और विधान परिषद के आगामी विशेष सत्रों की तैयारियों का आकलन किया जा सके। इस अवसर पर अध्यक्ष प्रसाद कुमार, विधान परिषद के सभापति गुत्ता सुखेंद्र रेड्डी, उपसभापति बंदा प्रकाश मुदिराज और विधान सचिव डॉ. वी. नरसिम्हा चार्युलु, मुख्य सचिव रामकृष्ण राव, सामान्य प्रशासन सचिव राघनंदन राव, अतिरिक्त सचिव (वित्त) राया रवि, निदेशक (प्रोटोकॉल) शिवलिंगैया, विशेष मुख्य सचिव (गृह) रवि गुप्ता, पुलिस महानिदेशक डॉ. जितेंद्र, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून-व्यवस्था) महेश भागवत, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (कानून-व्यवस्था) विक्रम सिंह मान, साइबराबाद, राचकोंडा आयुक्त सुधीर बाबू, अविनाश महांती, खुफिया महानिरीक्षक कार्तिकेय, विधानसभा प्रमुख मार्शल कर्णकर, विधान परिषद प्रमुख मार्शल संजीव रेड्डी आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर बोलते हुए अध्यक्ष ने कहा कि पूर्व की भांति राज्य सरकार और अधिकारियों को इन सत्रों में भी सहयोग प्रदान करना चाहिए और सदस्यों द्वारा मांगी गई जानकारी यथाशीघ्र उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

उन्होंने कहा, "जब विभागों से संबंधित चर्चाएँ चल रही हों, तो संबंधित विभागों के अधिकारियों को उपलब्ध रहना चाहिए और मंत्रियों व सदस्यों को उचित जानकारी प्रदान करके सहयोग करना चाहिए।" अध्यक्ष ने आगे कहा कि पुलिस विभाग की ओर से यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए कि विधानसभा और विधान परिषद के सत्र बिना किसी बाधा के सुचारू रूप से आयोजित हों।

उन्होंने यह भी कहा कि विनायक चतुर्थी उत्सव के चल रहे समारोहों को देखते हुए उचित सावधानियां बरती जानी चाहिए। प्रसाद कुमार ने बताया कि भारी बारिश के कारण कुछ सड़कें क्षतिग्रस्त हुई हैं, और उन्होंने यातायात अधिकारियों से सत्र में भाग लेने वाले सदस्यों के लिए समय पर पहुँच सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करने का आग्रह किया। प्रसाद कुमार ने कहा, "बैठक के दौरान किसी भी विरोध प्रदर्शन और आंदोलन को रोकने के लिए पहले से जानकारी प्राप्त कर ली जानी चाहिए, ताकि बैठकें सुचारू रूप से आयोजित की जा सकें।" विधान परिषद के अध्यक्ष गुत्ता सुखेंद्र रेड्डी ने कहा कि सत्रों को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए सभी विभागों के अधिकारियों को सहयोग करने की आवश्यकता है। उन्होंने आवश्यक नोडल और संपर्क अधिकारियों की नियुक्ति के महत्व पर ज़ोर दिया और इस बात पर ज़ोर दिया कि किसी भी लंबित प्रश्न का शीघ्र समाधान किया जाना चाहिए।

विधानसभा का विशेष सत्र आज से शुरू: तीखी बहस की उम्मीद

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना विधानसभा और विधान परिषद के आगामी विशेष सत्रों में कालेश्वरम परियोजना पर पीसी घोष आयोग के निष्कर्षों और पिछड़ा वर्ग आरक्षण के मुद्दे पर गहन चर्चा होगी।

विधानसभा का सत्र शनिवार को शुरू होगा, जिसका उद्देश्य कालेश्वरम समिति की रिपोर्ट और पिछड़ा वर्ग आरक्षण विषय पर चर्चा करना है। सत्र सुबह 10:30 बजे शुरू होगा और अनुमान है कि दिवंगत बीआरएस विधायक मगंती गोपीनाथ को श्रद्धांजलि देने के बाद कार्यवाही स्थगित कर दी जाएगी। इसके बाद, कार्य मंत्रणा समिति (बीएसी) की बैठक होगी। दोपहर में, मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी कैबिनेट बैठक की अध्यक्षता करेंगे। परिस्थितियों के अनुसार, विधानसभा सत्र चार या पाँच दिनों तक चलने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी और उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों ने पीसी घोष आयोग की रिपोर्ट में दर्शाई गई कालेश्वरम परियोजना से जुड़ी अनियमितताओं को उजागर करने और परियोजना के क्रियान्वयन में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ कोई भी आवश्यक कार्रवाई करने से पहले इन निष्कर्षों को विधानसभा में प्रस्तुत करने का संकल्प लिया है।

साथ ही, ऐसे संकेत हैं कि कालेश्वरम परियोजना से जुड़े आरोपों का सामना कर रहे पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव इस चर्चा में भाग लेने से परहेज करेंगे। शुक्रवार को, पूर्व मंत्री और बीआरएस विधायक हरीश राव ने आगामी विधानसभा चर्चा की रणनीति बनाने के लिए सिद्दीपेट जिले के एर्रावल्ली फार्महाउस में केसीआर से मुलाकात की। बीआरएस नेताओं ने सरकार के खिलाफ एक मजबूत विरोध प्रदर्शन करने का संकल्प लिया है और अनुरोध किया है कि अध्यक्ष उन्हें रिपोर्ट पर चर्चा के लिए पर्याप्त समय दें। इसके विपरीत, पार्टी की राज्य इकाई के अध्यक्ष रामचंद्र राव के मार्गदर्शन में, भाजपा विधायक और विधान पार्षद विधानसभा सत्रों के लिए अपनी रणनीति तैयार करने हेतु चर्चा में लगे हुए हैं।

गोदावरी नदी में बाढ़ का खतरा

परियोजनाओं से भारी मात्रा में पानी छोड़ा गया

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। गोदावरी नदी बेसिन परियोजनाओं में जल स्तर में लगातार वृद्धि देखी जा रही है, जिससे तेलंगाना के आदिलाबाद और निर्मल सहित कई जिलों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। तेलंगाना, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में भारी बारिश के कारण निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। श्री राम सागर परियोजना (एसआरएसपी) दबाव में है और 29 अगस्त, 2025 तक इसमें 4,30,000 क्यूसेक पानी का प्रवाह होने की उम्मीद है। यह परियोजना, जो अपने पूर्ण जलाशय स्तर 1091 फीट के करीब पहुँच रही है, नीचे की ओर भारी बाढ़ का पानी छोड़ रही है, जिससे गोदावरी का जलस्तर बढ़ रहा है। 27 अगस्त को, एसआरएसपी ने 2,50,000 क्यूसेक पानी छोड़ा था।

श्रीपदा येल्लमपल्ली परियोजना में भारी जल प्रवाह हो रहा है। जल स्तर 145.08 मीटर पर था, जबकि जलाशय का कुल जल स्तर 148 मीटर है, और इसकी भंडारण क्षमता 20.175 टीएमसी में से 12.81 टीएमसी है। तत्काल जल प्रवाह 6,83,028 क्यूसेक था, जिसमें श्री राम सागर परियोजना से 4,53,245 क्यूसेक, कदम परियोजना से 27,648 क्यूसेक और इसके जलग्रहण क्षेत्र से 2,02,135 क्यूसेक शामिल हैं। 62 में से 38 गेट खुले होने के कारण, बहिर्वाह थोड़ा कम 6,76,834 क्यूसेक रहा। निर्मल जिले में, गद्देना वागु परियोजना पूरी तरह भर चुकी है, जिसकी भंडारण क्षमता 102 टीएमसी है जबकि कुल क्षमता 102.73 टीएमसी है। भारी बारिश के कारण, निर्मल में एक ही दिन में 33 सेमी बारिश दर्ज की गई, जिससे भारी जलस्तर बढ़ गया है। परियोजना के अधिकारियों ने तीन गेट खोलकर 20,500 क्यूसेक पानी नीचे की ओर छोड़ा। जलस्तर 358.55 मीटर पर है जबकि न्यूनतम जलस्तर 358.70 मीटर है। जलग्रहण क्षेत्रों के निवासियों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है, क्योंकि निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा है।

बंगाल की खाड़ी में बने एक गंभीर निम्न-दाब तंत्र के कारण हुई भारी बारिश ने निर्मल और आदिलाबाद जिलों में व्यापक व्यवधान पैदा कर दिया है। निर्मल से आदिलाबाद तक जाने वाले पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग सहित कई सड़कें बह गई हैं और बसर, सारंगपुर और सोन मंडल जैसे इलाकों में परिवहन बाधित हो गया है। स्वर्ण वागु सहित नदियों और नालों के उफान पर होने के कारण बिद्रेली, जाम और मादापुर जैसे गाँवों का संपर्क टूट गया है।

गोदावरी और उसकी सहायक नदियों के किनारे बसे खेत जलमग्न हो गए हैं और फसलों को भारी नुकसान पहुँचा है। कालेश्वरम में, गोदावरी का प्रवाह तेज़ है और पुष्कर घाट पर जलस्तर 12.50 मीटर तक पहुँच गया है, जो पहले चेतावनी स्तर 12.210 मीटर को पार कर गया है और खतरे के स्तर 13.46 मीटर के करीब पहुँच गया है। ज़िला प्रशासन ने अलर्ट जारी कर दिया है और त्रिवेणी संगम पर विशेष पूजा-अर्चना की गई। बाढ़ के पानी ने पुष्कर घाटों को जलमग्न कर दिया है और निजी लॉज और कृषि भूमि को जलमग्न कर दिया है।

कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना के एक भाग, मेदिगड्डा बैराज में, अंतर्वाह और बहिर्वाह 9,71,880 क्यूसेक रहा। सभी 85 शिखर द्वार खुले हैं और जलस्तर 97.20 मीटर पर है, जो जलाशय के पूर्ण जलस्तर 100 मीटर के करीब है। गोदावरी की एक प्रमुख सहायक नदी, मंजीरा नदी भी उफान पर है, जिससे निज़ामाबाद, कामारेड्डी, मेदक और संगारेड्डी जिलों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है।

चेरलापल्ली जेल से कैदी के भागने के बाद तीन जेल अधिकारी निलंबित

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। जेल विभाग के अधिकारियों ने इस सप्ताह के शुरू में चेरलापल्ली स्थित केंद्रीय कारागार से एक कैदी के कुछ समय के लिए भाग जाने की घटना के संबंध में तीन अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। निलंबित अधिकारियों में जेल वार्डन भरत और सहायक उप जेलर सुब्बा राजू और वसंत कुमार शामिल हैं। रविवार को, बिहार निवासी कैदी शांत कुमार को दीवारों पर पेंटिंग का काम सौंपा गया था। इसी काम का फायदा उठाकर वह चारदीवारी फांदकर भाग निकला। जेल अधिकारियों को जल्द ही उसकी अनुपस्थिति का पता चला और उन्होंने तुरंत विशेष टीमें बनाकर और स्थानीय पुलिस के साथ समन्वय करके तलाशी अभियान शुरू किया।

मूसी नदी का जलस्तर बढ़ने के कारण मूसारामबाग पुल बंद

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। मूसी नदी में जलस्तर लगातार बढ़ने के कारण मूसारामबाग पुल को बंद कर दिया गया और यातायात प्रतिबंधित कर दिया गया। मलकपेट यातायात निरीक्षक टी अशोक कुमार ने बताया कि एचएमडब्ल्यूएसएसबी ने उस्मान सागर के आठ और हिमायत सागर के 2 सहित 10 जलद्वार खोल दिए, जिससे मूसी नदी के निचले इलाकों में अतिरिक्त पानी निकल गया। परिणामस्वरूप, यातायात पुलिस ने शुक्रवार तड़के से ही मूसारामबाग पुल पर आवाजाही प्रतिबंधित कर दी और यातायात का मार्ग बदल दिया। यात्रियों को वैकल्पिक मार्ग अपनाने की सलाह दी गई। मूसी नदी के किनारे किशनबाग, जियागुडा, मालकपेट, पुरानापुल, एमजीबीएस/सीबीएस, चदरघाट और गोलनाका के स्थानीय निवासियों को एचएमडब्ल्यूएसएसबी द्वारा भारी जलप्रवाह के बारे में आगाह किया गया था।

रेलवे स्टेशन से चोरी हुआ सोना और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट बरामद

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने राजकीय रेलवे पुलिस के साथ मिलकर गुरुवार को रायचूर रेलवे स्टेशन पर एक आरोपी को गिरफ्तार किया और उसके पास से 2,76,000 रुपये मूल्य का सोना, लैपटॉप, टैब और 3 मोबाइल फोन सहित चोरी की गई संपत्ति बरामद की। रायचूर रेलवे स्टेशन पर गोपनीय निगरानी के दौरान, सहायक उप निरीक्षक रेलवे सुरक्षा बल/जांच एवं अन्वेषण विंग/रायचूर, गुंतकल मंडल ने जीआरपी कर्मचारियों के साथ मिलकर ट्रेन संख्या 09093 बांद्रा टर्मिनस-वेलंकन्नी स्पेशल के आगमन पर एक संदिग्ध को हिरासत में लिया। उसके बैग की जाँच करने पर, चोरी की गई सोना और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट बरामद

वस्तुएँ मिलीं। पूछताछ के दौरान, आरोपी ने विभिन्न ट्रेनों में चोरी की वारदातें कबूल कीं और उसे रिमांड के लिए माननीय जेएमएफसी-III (न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी), रायचूर के समक्ष पेश किया जा रहा है।

दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) के महाप्रबंधक, संजय कुमार श्रीवास्तव ने आरपीएफ और जीआरपी कर्मियों की सतर्कता और समय पर कार्रवाई की सराहना की, जिसके परिणामस्वरूप एक नियमित टीओपीबी (निजी सामान की चोरी) अपराधी को पकड़ा जा सका। उन्होंने कहा कि रेलवे सुरक्षा बल यात्रियों के कल्याण और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

कांग्रेस सरकार आरक्षण के मुद्दे पर पिछड़े वर्गों के साथ विश्वासघात कर रही है: बीआरएस

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्व मंत्री और बीआरएस नेता वी. श्रीनिवास गौड़ ने कांग्रेस सरकार पर पिछड़े वर्गों (बीसी) के वोटों से सत्ता हासिल करने के बाद उन्हें धोखा देने का आरोप लगाया है। उन्होंने कांग्रेस से पिछड़े वर्गों के आरक्षण विधेयक की स्थिति स्पष्ट करने को कहा है और स्थानीय निकाय चुनावों में 42 प्रतिशत आरक्षण लागू करने के लिए सरकारी आदेश जारी करने के उसके प्रस्ताव को एक और भ्रामक रणनीति बताया है।

शुक्रवार को तेलंगाना भवन में मीडिया से बात करते हुए, श्रीनिवास गौड़ ने सवाल किया कि 311 सांसदों का समर्थन होने के बावजूद, कांग्रेस सरकार ने संसद में पिछड़े वर्गों के आरक्षण विधेयक को क्यों नहीं पेश किया। उन्होंने विधानसभा में पिछड़े वर्गों के आरक्षण विधेयक को लेकर राजनीतिक नाटक करने, अध्यादेश लाने और अब स्थानीय निकाय चुनावों में पिछड़े वर्गों के आरक्षण को लागू करने के उद्देश्य से एक सरकारी आदेश जारी करके नया नाटक रचने के लिए कांग्रेस की आलोचना की। "आरक्षण विधेयक और अध्यादेश की स्थिति को लेकर अभी भी अनिश्चितता बनी हुई है। अगर आरक्षण लागू करने के लिए सरकारी आदेश (जीओ) की ज़रूरत है, तो इसमें 20 महीने की देरी क्यों हुई?" उन्होंने इस बात पर ज़ोर देते हुए पूछा कि पिछड़ा वर्ग आरक्षण केवल कानूनी समर्थन से ही सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है। बीआरएस एमएलसी एल रमण ने कांग्रेस द्वारा कामारेड्डी पिछड़ा वर्ग घोषणापत्र और पिछड़ा वर्ग में भारी धनराशि निवेश करने के उनके दावों की आलोचना करते हुए इसे भ्रामक बताया।

उन्होंने बताया कि पिछड़ा वर्ग राज्य मंत्रिमंडल में कम से कम आठ पदों का हकदार है, लेकिन उन्हें केवल दो ही आवंटित किए गए हैं। बीआरएस नेता ने कांग्रेस पर धोखेबाज़ और स्वार्थी राजनीति में शामिल होने का आरोप लगाया। उन्होंने घोषणापत्र में की गई प्रतिबद्धताओं पर एक श्वेत पत्र जारी करने की माँग की और ज़ोर देकर कहा कि आगे अन्याय से बचने के लिए पिछड़ा वर्ग आरक्षण को क़ानून के अनुसार लागू किया जाना चाहिए।

कर्ज के बोझ पर गुमराह कर रही सरकार : केटीआर

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव ने कांग्रेस सरकार पर अपनी नाकामियों को छिपाने के लिए जानबूझकर झूठे दावे करने और राज्य के कर्ज के बोझ को बढ़ाने का आरोप लगाया। इसके बजाय, उन्होंने सरकार को सलाह दी कि वह अपना दुष्प्रचार अभियान बंद करे और वित्तीय कुप्रबंधन को तुरंत दूर करे। रामा राव ने कहा कि मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी और उनके मंत्रिमंडल के सहयोगियों ने झूठा दावा किया था कि तेलंगाना हर महीने ऋण ब्याज के रूप में 7,000 करोड़ रुपये का भुगतान कर रहा है। उन्होंने बताया कि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) की नवीनतम रिपोर्ट ने इस झूठ का पर्दाफाश किया है, जिसमें दिखाया गया है कि राज्य ने चार महीनों में केवल 9,355 करोड़ रुपये का भुगतान किया है, यानी औसतन लगभग 2,300 करोड़ रुपये प्रति माह।

फिल्म निर्देशक संदीप रेड्डी ने मुख्यमंत्री राहत कोष में 10 लाख रुपये दान किए

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। फिल्म निर्देशक संदीप रेड्डी वांगा ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी से उनके आवास पर मुलाकात की। इस अवसर पर, संदीप रेड्डी वांगा ने अपने भाई प्रणय रेड्डी वांगा के साथ मिलकर भद्रकाली प्रोडक्शंस की ओर से मुख्यमंत्री राहत कोष में 10 लाख रुपये का दान दिया।

दक्षिण भारत बुलेट ट्रेन हैदराबाद, चेन्नई, अमरावती और बेंगलुरु को जोड़ेगी: नायडू

विशाखापत्तनम, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने शुक्रवार को कहा कि दक्षिण भारत में बुलेट ट्रेन कनेक्टिविटी स्थापित की जाएगी। उन्होंने संकेत दिया कि इससे हैदराबाद, अमरावती, चेन्नई और बेंगलुरु की जरूरतें पूरी होंगी। 'भारत खाद्य विनिर्माण शिखर सम्मेलन' को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि बुलेट ट्रेन कनेक्टिविटी उपरोक्त चार शहरों की पांच करोड़ की आबादी को लाभ पहुंचाएगी। नायडू ने कहा, 'बहुत जल्द बुलेट ट्रेन दक्षिण भारत में आने वाली है। ऐसा होने वाला है। इसके लिए एक सर्वेक्षण का आदेश दिया गया है। हैदराबाद, चेन्नई, अमरावती और बेंगलुरु, ये चारों शहर पाँच करोड़ से ज़्यादा आबादी वाले हैं और दुनिया के सबसे बड़े बाज़ार हैं।' मुख्यमंत्री ने कहा कि बुलेट ट्रेन के मूर्त रूप लेने के बाद लोग लॉजिस्टिक्स की स्थिति देख पाएँगे। उन्होंने कहा कि बुलेट ट्रेन के अलावा , दक्षिणी राज्य अपने सड़क मार्गों का बड़े पैमाने पर विकास करेगा, जिसमें दूर-दराज की सड़कों का भी अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उत्कृष्ट रखरखाव शामिल होगा।

गणेश प्रतिमा विसर्जन शुरू, जीएचएमसी ने 74 विसर्जन तालाब किए तैयार

हैदराबाद, 29 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। भगवान गणेश उत्सव के तीसरे दिन शुक्रवार को शहर और उसके आसपास के विभिन्न जलाशयों में मूर्तियों का विसर्जन शुरू हो गया। कई श्रद्धालु अपने घरों में स्थापित मूर्तियों को निकटतम जलाशयों तक ले गए, जबकि कुछ पंडाल आयोजक भी विसर्जन में शामिल हुए। आमतौर पर मूर्ति स्थापना के तीसरे दिन, फिर पाँचवें, सातवें, नौवें और अंत में दसवें और ग्यारहवें दिन विसर्जन किया जाता है। इस वर्ष मुख्य गणेश प्रतिमा विसर्जन 6 सितंबर को होगा।

जीएचएमसी ने विसर्जन के लिए 74 कृत्रिम तालाबों की पहचान की है और सुचारू संचालन सुनिश्चित करने के लिए तीन पालियों में सफाई कर्मचारियों और क्रेन सहित कर्मियों और मशीनरी को तैनात किया है। इसके अलावा, जीएचएमसी ने विसर्जन के लिए हुसैन सागर, सरूर नगर झील, आईडीएल झील, सफिलगुडा झील और सुन्नम झील सहित 20 प्रमुख झीलों की पहचान की है।

अस्थायी पोर्टेबल पानी की टंकियां

प्रदर्शनी मैदान, एएस राव नगर, सचिवालय नगर, ऑफिसर्स कॉलोनी वेलफेयर एसोसिएशन मैदान, एमआरओ कार्यालय, स्विमिंग पूल के पास हयातनगर क्रिकेट मैदान, सुषमा थिएटर, वनस्थलीपुरम सरकारी कॉलेज मैदान, नगर निगम कार्यालय के पीछे, शिवालयम मैदान, रियासतनगर, लक्ष्मणेश्वर खेल का मैदान, जंगममेट, राम लीला मैदान, चिंतल बस्ती, एसबीए गार्डन के सामने, 100 फीट रोड, नामपल्ली प्रदर्शनी मैदान-2, और अमीरपेट खेल का मैदान।

अस्थायी उत्खनन तालाब

देवेंद्र नगर रोड, हुडा भारती नगर पार्क, जेडपी रोड, हस्तिनापुरम, एनटीआर नगर सब्जी बाजार, फ्रेंड्स कॉलोनी शटल कोर्ट, एसबीएच कॉलोनी, सैदाबाद, बटुकम्मा बावी, कंडीकल गेट, गौलीपुरा, वैशाली नगर, आईएस सदन, नरसाबाइकुंटा, मैलारदेवपल्ली, संजीविनी हिल्स, मुसी नदी के पास, और उप्पल।

स्थायी शिशु तालाब

एलबी नगर क्षेत्र: चार्लापल्ली झील, कपरा झील, नल्ला चेरुवु, नागोले झील, मंसूराबाद बड़ी झील। चारमीनार क्षेत्र: पाथी कुंटा, राजन्ना बावी। खैरताबाद जोन: नेकनामपुर, नेकलेस रोड, दुर्गम चेरुवु, मलकम चेरुवु, नल्लागंडला चेरुवु, गोपी चेरुवु। सेरिलिंगमपल्ली जोन: गंगाराम चेरुवु, कैदम्मा कुंटा, गुरुनाथम चेरुवु, राया समुद्रम।

कुकटपल्ली क्षेत्र: मुलकटवा चेरुवु, आईडीएल बेबी तालाब, बालाजी नगर, मूसापेट, बोयिन चेरुवु बेबी तालाब, प्रगति नगर बेबी तालाब, अलविन कॉलोनी, हफीजपेट, वेनेला गड्डा चेरुवु, लिंगम चेरुवु, सुराराम (मैसम्मा मंदिर के पास), कोठा चेरुवु, अलवाल मंदिर। सिकंदराबाद क्षेत्र: संजीवैया पार्क, सफिलगुडा, बांदा चेरुवु।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.